भूमिका

'विश्व-साहित्य ग्रन्थमाला' द्वारा प्रकाशित 'संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियां' नामक पुस्तक को समालोचना के लिए भेजने से पूर्व मैं ने उसे अपने अनेक मित्रों, बन्धुओं और परिचितों के पास, उन की राय जानने के लिए भेजा था। मेरी दृष्टि में इस तरह की सम्मतियों की कीमत अखबारी समालोचना से कहीं अधिक है। इस ग्रन्थ में विभिन्न देशों के सोलह उच्चतम कोटि के कहानी-लेखकों की एक-एक कृति संग्रहीत है। उन सोलह कहानियों में से "कल्पना की नारी" शीर्षक कहानी को सभी पाठकों ने सब से अधिक पसन्द किया। इस बात में किसी को मतभेद नहीं था। यह कहानी सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ उपन्यासकार श्री थॉमस हार्डी की लिखी हुई है। जिन सज्जनों ने उस संग्रह के सम्बन्ध में मुझे अपनी राय से सूचित करने की कृपा की, उन में प्रायः सभी जमातों के लोग थे। कालेज के विद्यार्थियों से लेकर सम्पादक, प्रोफ़ेसर, वकील, डाक्टर, व्यापारी आदि विभिन्न पेशे के लोग उन में थे। अनेक महिलाएँ और कुमारियां भी उस संग्रह के पाठकों में थीं। इन सब महानुभावों की राय परस्पर बहुत अधिक भिन्न थी, मगर थॉमस हार्डी की कृति को सब कहानियों से अधिक पसन्द करने

के सम्बन्ध में सभी लोग स्वतन्त्र रूप से एकमत थे। आज उसी महान कहानी-लेखक की तीन चुनी हुई कहानियों का अनुवाद पाठकों के सम्मुख रखते हुए मुझे बड़ा सन्तोष अनुभव होरहा है। मुझे विश्वास है कि इन तीनों कहानियों को भी बहुत अधिक पसन्द किया जाएगा।

थामस हार्डी इंगलैएड के सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखक हुए हैं। उन की लेखन-शैली इतनी अधिक शक्तिशाली, सजीव और मनोरंजक है कि उस के सम्बन्ध में कोई टिप्पणी करने की ज़रूरत ही नहीं। थॉमस हार्डी ने जासूसी कहानियां नहीं लिखीं। उन की कहानियों का आदर्श नवीनतम और अप-टु-डेट है। उन्हों ने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के ढंग की कहानियां लिखी हैं, तथापि उन की कृतियों को जनता ने बहुत अधिक पसन्द किया और उन की पुस्तकों की बिक्री भी खूब हुई। मनोरंजकता, स्वाभाविकता और सजीवपन उन की सब से बड़ी विशेषता है।

इस अवसर पर कुछ बातें मैं अनुवाद के सम्बन्ध में कहना चाहता हूँ। इन कहानियों का मैं ने शब्दानुवाद नहीं किया। मेरी राय में शब्दानुवाद मूल लेखक के भावों को सजीव नहीं रहने देता और कहीं-कहीं तो इस के द्वारा मौलिक भावों की हत्या तक हो जाती है। परन्तु इस के साथ ही साथ मैं यह दावा भी करता हूँ कि यथासम्भव मैं ने लेखक का एक भी भाव इस अनुवाद में छोड़ा नहीं और यहां तक कि मूल कहानी के प्रत्येक महत्वपूर्ण शब्द के गाम्भीर्य-भाव को भी इस अनुवाद में समाविष्ट करने का प्रयत्न

किया है। अनेक स्थानों पर मैं ने मूल कहानी में थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी किया है। किसी जगह कुछ अधिक गहरा रंग भरने का प्रयत्न किया है और कहीं-कहीं ब्रश हलका रक्खा है। मेरी राय में हिन्दी अनुवाद करते हुए इस की आवश्यकता थी। हम लोगों की और इंगलैण्ड की परिस्थितियों में जो भारी अन्तर है, उस के कारण हार्डी की जो बात अंग्रेज़ पाठक के अन्तस्तल पर इशारे-मात्र से चित्रित होजाती है, उसी बात का अंकन एक भारतीय हृदय पर करने के लिए उस में (अनेक बार) कुछ गहरा रंग भरने की ज़रूरत होती है, उसे और अधिक स्पष्ट तथा दृश्यमाण (vivid) बना कर रखना पड़ता है। कई मामलों में यह बात इस से विपरीत भी होती है। इस दशा में भावानुवाद करने के लिए मूल चित्र के विस्तारों में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करना—अनेक बार आवश्यक हो जाता है। मैं ने यह सब करने का प्रयत्न तो किया है, परन्तु मैं कह नहीं सकता कि इस में मुझे सफलता मिली है या नहीं। इस का निर्णय विज्ञ पाठक ही कर सकेंगे।

एक बात भाषा के सम्बन्ध में भी। हिन्दी भाषा का शब्द-भंडार इस समय तक बहुत सीमित और छोटा है। राजभाषा न होने से हिन्दी को उचित ढँग पर अपना विकास करने का अवसर ही नहीं मिल रहा। विज्ञान, कला और दर्शन के परिभाषिक शब्द (Technical words) की हिन्दी में बड़ी कमी है। इतना ही नहीं। मानवीय भावों का प्रकाश करने वाले शब्दों की भी हिन्दी में पर्याप्त कमी है। यह अभाग्य का विषय है। अंग्रेज़ी आदि भाषाओं

का शब्द-कोष इतना अधिक बड़ा है कि वहां किसी ढंग के शब्दों की कमी नहीं रही। अंग्रेज़ी का शब्द-कोष इतना विस्तृत हो गया है कि वहां के निपुण राजनीतिज्ञ लच्छेदार मुहावरों और बढ़िया-बढ़िया शब्दों की घण्टों तक बौछार करते चले जाते हैं और उन का वह सम्पूर्ण प्रभावशाली भाषण इस ढंग का होता है कि उसे चाहे जिधर मोड़ लिया जा सके। दूसरी ओर वहां के प्रतिभाशाली लेखकों के सदियों के प्रयत्न से प्रत्येक अंग्रेज़ी शब्द का एक इतिहास तैयार होगया है, इसलिए वहां प्रत्येक शब्द का अपना खास अभिप्राय होता है। पाठक उस शब्द को पढ़ता है, और उस के सामने मानों एक जीवित और स्पष्ट चित्र-सा खिंच जाता है। हमारे यहां की अमरकोषीय प्रवृत्ति वर्तमान अंग्रेज़ी में ज़रा भी नहीं है। अभाग्य से हिन्दी भाषा के शब्द-कोष में ये दोनों बातें अभी तक नहीं आसकीं। इस का एकमात्र कारण यही है कि हम लोगों ने अपनी भाषा के गौरव को अभी तक भली प्रकार अनुभव नहीं किया।

मुझे यहां अधिक व्यापक बातें नहीं करनी चाहिएँ, इस लिए मैं संक्षेप में इतना ही कहता हूं कि अंग्रेज़ी से अनुवाद करते हुए, शब्द-कोष की कमी के कारण, अनुवादक के सामने जो दिक्कतें पैदा होती हैं, उन का सहज इलाज यही है कि हिन्दी में अन्य भाषाओं के शब्दों को यथेष्ठ रूप में लिया जाय। मैं ने कुछ अंश तक इसी असूल का पालन भी किया है। हिन्दी भाषा के पारिभाषिक शब्दों का उद्गम स्थान संस्कृत है, उस से हम यथेष्ठ शब्दों की रचना कर सकते हैं। परन्तु इन के अतिरिक्त भारत की प्रान्तीय भाषाओं—

उर्दू, पंजाबी, बँगला, गुजराती, मराठी आदि के ऐसे शब्द जो व्यवहार में लाए जाते हैं, ले लेने में भी मेरी राय में कोई हर्ज नहीं है। शिक्षा-विस्तार के साथ-साथ हिन्दी जनता का शब्द-कोष स्वयं ही बढ़ता जाएगा,--केवल इस प्रवृत्ति को समझने, इसे पसन्द करने और इस पर निरीक्षण रखने की ही आवश्यकता है। अंग्रेज़ी के भी जो शब्द हमारी भाषा के अंग बन गए हैं, उन का बहिष्कार करने की आवश्यकता नहीं है। मेरी राय में, जिस तरह अमेरिका को आबाद करने के लिए यूरोप भर के देशों से लोगों को आमन्त्रित किया गया था, उसी तरह वर्तमान समय में हमें हिन्दी भाषा के शब्द-भण्डार का द्वार खुला रखना चाहिए। हां, इस प्रक्रिया में ज़बरदस्ती, धींगामुश्ती, या हबड़धबड़ नहीं करनी चाहिए। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे, आसानी के साथ और स्वाभाविक रूप में होनी चाहिए। अपने इन अनुवादों की भाषा में मैं ने पर्याप्त सीमित अंश तक इसी असूल का अनुसरण किया है।

लाहौर
१ अगस्त १९३२

—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

विषय सूची

विवाह की कहानियां

पत्नी की प्रसन्नता के लिए

(१)

रविवार का दिन था। सांझ हो गई थी। शहर के सेण्टजेम्स चर्च में सायंकाल की प्रार्थना लगभग समाप्त हो चुकी थी। चर्च में अन्धकार बढ़ता जा रहा था। उपासक लोग देर तक घुटनों के बल खड़े रहने के कारण थक गए थे और यह देख कर कि पादरी ने प्रार्थना समाप्त कर दी है, उनके चेहरों पर सन्तोष का भाव दिखाई देने लगा था।

चर्च में पूरी शान्ति थी। नज़दीक ही समुद्र की लहरें आपस में लड़-झगड़ कर जो शोर मचा रही थीं, वह चर्च के अन्दर

से भी साफ़ साफ़ सुनाई दे रहा था। पादरी के इशारे पर क्लार्क दरवाज़ा खोलने के लिए उसकी तरफ़ बढ़ा। लकड़ी के फर्श पर, अपने बूटों से स्पष्ट सुनाई देने वाली आवाज़ करते हुए वह दरवाज़े तक पहुँचा। उसने अभी दरवाज़ा खोला ही था कि बाहर से एक मनुष्य-मूर्त्ति चिक उठाकर अन्दर प्रविष्ट हो गई और उसने दरवाज़ा पुनः बन्द कर दिया। इस मनुष्य ने मल्लाहों के-से कपड़े पहिन रक्खे थे। वह बड़ी शीघ्रता से, उपासकों के ठीक बीच में से होता हुआ पादरी के सामने आ पहुँचा और वहां घुटने टेक कर बैठ गया।

सम्पूर्ण उपासक अपनी अपनी जगह पर से ही इस मनुष्य की ओर देखने लगे। उपासना बरख़ास्त होते होते रह गई। पादरी ने समझा कि नवागन्तुक उसी को नमस्कार कर रहा है। वह हैरानी से उसकी तरफ़ देखने लगा।

इसी समय मल्लाह ने बड़ी भद्र, स्पष्ट और काफ़ी ऊँची आवाज़ में कहा—"श्रीमन्! मुझे क्षमा करें। मेरा जहाज़ डूब गया है और मैं प्रभु की कृपा से डूबने से बच गया हूँ। यदि आप की आज्ञा हो, तो मैं इस के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूँ।"

एक क्षण की हिचकिचाहट के बाद पादरी ने जवाब दिया—"मुझे कोई आपत्ति नहीं। परन्तु नियमानुसार इस तरह की सब बातें उपासना से पहले ही बता देनी चाहिएँ, ताकि सामूहिक प्रार्थना में ही उन के लिए कृतज्ञता-ज्ञान कर दिया जा सके। परन्तु

यदि आप की इच्छा है तो अब आप अकेले ही प्रार्थना कर लीजिए।"

मल्लाह शान्त भाव से घुटने टेक कर बैठा रहा। पादरी प्रार्थना-पुस्तक में से, डूबने से बच जाने की प्रार्थना का एक एक वाक्य बोलने लगा और मल्लाह बड़ी श्रद्धा से उन वाक्यों को दोहराता गया। यह दृश्य इतना प्रभावोत्पादक था कि बाकी सम्पूर्ण उपासकों ने भी खुदबखुद ही अपने घुटने टेक लिए। मल्लाह बिल्कुल तन्मय था। उसका मुँह पूर्व दिशा की ओर था; आंखें ऊपर को उठी हुई थीं और दोनों हाथ मिलकर बड़ी कृतज्ञता के साथ किसी अज्ञात शक्ति को नमस्कार कर रहे थे।

शीघ्र ही प्रार्थना समाप्त होगई। मल्लाह उठ खड़ा हुआ। अन्य सम्पूर्ण उपासक भी उठ खड़े हुए और क्रमशः अपने अपने घरों की ओर चल दिए। बाहर आकर लोगों ने पहिचाना कि यह मल्लाह तो इसी शहर का पुराना निवासी नवयुवक जोलिफ़ी है। उसके माता पिता का बचपन में ही देहान्त होगया था। अपने परिश्रम से मल्लाह का काम करते करते वह एक छोटे जहाज़ का कप्तान बन गया था। हैवनटपूल शहर में वह कई वर्षों से दिखाई नहीं दिया था। लोगों का अनुमान था कि वह किसी और देश में आबाद होगया है।

चर्च से बाहर आकर जोलिफ़ी अपने चिर-परिचित बन्धुओं को बड़े प्रेम से मिला। उसने अपनी अनुपस्थिति के वर्षों के समाचार सुनाने शुरु किए। जब वह लोगों के साथ साथ शहर

की ओर चला जा रहा था तब उसके आगे आगे दो लड़कियां, जो एक दूसरे की बड़ी मित्र प्रतीत होती थीं, चल रही थीं। जोलिफ़ी की नज़र बार बार उनके खुले बालों और बाजुओं पर पड़ती थी। थोड़ी देर बाद उसने अपने साथ वाले आदमी से धीमे स्वर में पूछा—"ये दोनों लड़कियां कौन हैं ?"

उसने कहा—"छोटी का नाम एमिली है, और बड़ी का जोना।"

"ओह, मुझे याद आगया। ये दोनों तो तब बिल्कुल छोटी होती थीं।"

इतना कह कर वह आगे बढ़ा और उन दोनों को ध्यान से देख कर उसने कहा—"एमिली, मुझे पहिचानती हो ?"

एमिली ने ज़रा शर्माकर जवाब दिया—"कुछ कुछ ख़्याल तो आता है !"

दूसरी लड़की ने बड़े ग़ौर से जोलिफ़ी की तरफ़ देखा।

जोलिफ़ी ने कहा—"कुमारी जोना को तो मैं नहीं पहिचान सका। परन्तु उनके सम्बन्धियों से अच्छी तरह वाकिफ़ हूँ।"

अब जोलिफ़ी इन दोनों से बातचीत करने लगा। कुछ दूर जाकर एमिली का घर आगया और वह विदा लेकर अन्दर चली गई। सड़क के अगले मोड़ से जो गली फटती थी, जोना का घर उसी में था। वह भी वहाँ से विदा लेकर चली गई। जोलिफ़ी अकेला रह गया। उसे कोई काम तो था ही नहीं, इस लिए वह पुनः एमिली के घर की तरफ़ लौट पड़ा और निस्संकोच भाव से अन्दर

प्रविष्ट होगया। एमिली के पिता एकाउण्टैण्ट थे, मगर उनकी तनख्वाह थोड़ी ही थी। आय बढ़ाने के लिए एमिली ने स्वयं स्टेशनरी की एक छोटी-सी दूकान खोल रक्खी थी। इसी के पिछ-वाड़े में वह अपने मां बाप के साथ रहती भी थी। अन्दर जाकर जोलिफ़ी ने देखा कि पिता और पुत्री चाय पीने बैठे हैं।

जोलिफ़ी ने कहा—"मुझे नहीं मालूम था कि यह चाय का समय है। .खैर, मैं भी एक प्याला पीऊँगा।"

उसने वहीं पर चाय पी, और उसके बाद भी वहीं पर बना रहा। आसपास के कुछ और लोग भी वहां जमा होगए थे। जोलिफ़ी उन्हें अपने निर्वासन के मनोरंजक किस्से सुनाता रहा। एक सप्ताह के अन्दर ही एमिली और जोलिफ़ी की घनिष्टता बहुत बढ़ गई। और उन दोनों में परस्पर आदर के कोमल भाव पैदा होगए।

इस क़स्बे का जो भाग समुद्र की तरफ़ बसा हुआ है, वहां के मकान अपेक्षाकृत अधिक शान्दार हैं। अगले महीने की एक सायंकाल की चांदनी में जोलिफ़ी इसी हिस्से में से गुज़र रहा था कि अपने से कुछ दूर पर उसे एक नारी-मूर्त्ति दिखाई दी। जोलिफ़ी ने इसे एमिली समझा, परन्तु निकट पहुँच कर उसने देखा कि यह एमिली नहीं, जोना है। जोलिफी उससे भी बड़े स्नेह के साथ मिला और उसके साथ साथ चलने लगा।

इस पर जोना ने कहा—"मेरे साथ मत चलो, वर्ना एमिली कुढ़ेगी!"

जोलिफ़ी ने इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया और वह जोना के साथ ही चलता रहा ।

उस दिन की सैर में दोनों की परस्पर क्या क्या बातचीत हुई, यह तो अब याद नहीं पड़ता । परन्तु यह स्पष्ट है कि उस दिन के बाद से जोलिफ़ी और जोना की घनिष्ठता प्रतिदिन बढ़ती गई और जोलिफ़ी का एमिली के घर आना जाना बहुत कम होता गया । आखिर नौबत यहां तक आगई कि कस्बे भर में यह अफ़वाह मशहूर होगई कि शीघ्र ही जोलिफ़ी और जोना का विवाह होने वाला है ।

इसके कुछ ही दिनों बाद, एक दिन प्रातःकाल जोना एमिली के घर की तरफ़ चली । उसे ज्ञात था कि एमिली को भी जोलिफ़ी और जोना की सगाई होजाने की बात मालूम होचुकी है । वह यह देखना चाहती थी कि अब एमिली का क्या हाल है; उस पर क्या बीत रही है । असल में जोना इस मल्लाह-युवक से पूर्णतः सन्तुष्ट नहीं थी । निस्सन्देह वह उसे एक अच्छा नौजवान समझती थी और उसके साथ विवाह करने की सम्भावना से अपने को अभागिनी भी नहीं मानती थी । परन्तु उसके दिल में इस मल्लाह-युवक के लिए कोई विशेष प्रेमके भाव नहीं थे । वह जोलिफ़ी को विवाह की स्वीकृति भी दे चुकी थी, मगर उससे विवाह करने को वह उत्सुक नहीं थी । असल में वह स्वीकृति उसने ईर्ष्या-वश, एमिली के साथ होड़ में आकर ही, दी थी । अब जब उसे यह अनुभव कर के पूर्ण सन्तोष होगया कि इस मल्लाह युवक

का प्रेम विजय करने में उसने एमिली को पूर्णतः परास्त कर दिया है, वह सोचने लगी कि उस की सहेली इस नौजवान को खोकर यदि सचमुच बहुत दुखी होगी तो वह उसे पुनः कृपापूर्वक वापिस लौटा देने की बात कह कर उसे आश्वासन देगी और इस तरह अपनी जीत का मज़ा लेगी। आज वह अपनी सहेली के घर की तरफ़ इसी उद्देश्य से चली थी। चलते हुए जोलिफ़ी के नाम पर, इस आशय की एक चिट्ठी लिख कर भी उसने अपने जेब में डाल ली थी कि वह अपनी सहेली की ख़ातिर उससे विवाह न कर सकेगी।

गली के मोड़ पर एक तहख़ाने में एमिली की बिसातख़ाने की दूकान थी। एमिली का घर भी इसी दूकान के साथ सम्बन्धित था। जोना गली से इस दूकान में उतरी। उसने देखा, दूकान में कोई नहीं है। वास्तव में एमिली के पिता किसी काम से बाहर गए हुए थे और दूकान पर कोई गाहक न देख कर एमिली भी ज़रा-सी देर के लिए बाहर चली गई थी। यह दूकान इतनी नगण्य-सी थी कि दूकानदार की पांच सात मिनटों की अनुपस्थिति से कोई विशेष आर्थिक नुक्सान हो जाने की सम्भावना नहीं थी। जोना का एमिली से जो मित्रतापूर्ण सम्बन्ध था, उसके नाते वह साथ के दरवाज़े से एमिली की बैठक में चली गई। मगर उसने देखा कि वहां भी कोई नहीं है। वह बैठक से पुनः दूकान में आने ही वाली थी कि उसे परदे की ओट से दिखाई दिया कि जोलिफ़ी दूकान में आया है।

जोना ठिठक कर खड़ी होगई। दूकान में किसी को मौजूद न देख कर जोलिफ़ी शायद लौटने ही वाला था कि इसी समय एमिली भी वहां वापिस आ गई। सहसा जोलिफ़ी को अपनी दूकान में मौजूद देख कर एमिली चौंक कर ज़रा-सी उछल गई। उसके कदम रुक गए, जैसे वह घबरा गई हो।

यह देख कर जोलिफ़ी ने मुस्करा कर कहा—"भागो नहीं एमिली! क्या मुझ से डर लगता है?"

"नहीं, मैं डरी नहीं। केवल—केवल मैंने तुम्हें यहां इतना अचानक देखा कि मैं चौंक गई।"

एमिली की आवाज़ साफ़ साफ़ कह रही थी कि उसके शरीर की अपेक्षा उसका दिल बहुत अधिक जोर से उछला है।

जोलिफ़ी ने कहा—"मैं अभी अभी यहां आया था।"

एमिली ने आंखें नीचे झुकाए रखकर बड़ी शीघ्रता से पूछा—"कुछ कागज़ चाहिएँ क्या?"

"नहीं, कागज़ नहीं चाहिएँ एमिली! तुम इस तरह उधर क्यों दुबकी जा रही हो? क्या मुझ से घृणा करती हो?"

"मैं घृणा नहीं करती।" उसका स्वर कांप गया, जब उसने कहा—"मैं तुम से घृणा कर ही किस तरह सकती हूँ!"

"तो इधर आओ। यहां हम अच्छी तरह बातचीत करें।"

एमिली ज़ोर से हँस पड़ी और जोलिफ़ी की बात मान कर उसके पास आखड़ी हुई।

जोलिफ़ी ने कहा—"प्यारी! यहां एक......"

एमिली ने बीच में ही रोक कर कहा—"कैप्टिन जोलिफ़ी! इस शब्द से मुझे मत पुकारो। इस पर किसी और का अधिकार हो चुका है।"

"आह, मैं सब समझता हूँ। मुझे आज तक यह ज़रा भी ज्ञात न था कि तुम मेरी कुछ भी परवाह करती हो, अन्यथा मैं ने जो कुछ कर लिया है, वह कदापि न करता। कुमारी जोना के लिए मेरे दिल में बहुत अच्छे भाव हैं, परन्तु मैं उसे तुम्हारे मुकाबले में अपनी पत्नी बनाना कदापि पसन्द न करता। तुम्हें मालूम है कि जब कोई युवक लम्बे सामुद्रिक जीवन के बाद घर आता है तो वह चिमगादड़ की तरह अन्धा होता है। वह यह नहीं देख सकता कि कौन स्त्री कैसी है। उसे सभी एक तरह की प्रतीत होती हैं, सभी सुन्दर दिखाई देती हैं। उसे जो स्त्री सुगमता से मिल सकती है, वह उसी से विवाह कर लेता है। शुरु शुरु में मैं तुम्हारी ओर ही अधिक आकृष्ट हुआ था, परन्तु तुम इतनी शर्मीली तबीयत की थीं और इतना पीछे रहने वाली थीं कि मैंने समझा कि तुम मुझे नहीं चाहतीं। इसी लिए मैं जोना के पास आने जाने लगा।"

एमिली ने बीच में ही बात काट कर कहा—"कैप्टिन जोलिफ़ी, बस और कुछ मत कहो। अगले महीने ही तुम जोना से विवाह करने वाले हो। इस दशा में व्यर्थ ही में—" साफ़ प्रतीत हो रहा था कि ये वाक्य बोलते हुए एमिली को बड़ा प्रयत्न करना पड़ रहा है।

इसी समय जोलिफ़ी चीख-सा उठा—"एमिली ! मेरी प्यारी !" उसने एमिली की एक अंगुली पकड़ कर बड़े प्यार से उसे अपने दोनों हाथों में कर लिया। एमिली ने विरोध नहीं किया। अगर वह विरोध करना चाहती, तो भी न कर सकती, क्योंकि जोलिफ़ी ने यह काम इतना अचानक किया था कि उसे कुछ मालूम ही न पड़ा।

परदे के पीछे खड़ी हुई जोना का रंग पीला पड़ गया। वह अपनी आँखों से यह दृश्य देख रही थी। उस ने चाहा कि वह अपनी आँखों को हटा ले, मगर वह ऐसा न कर सकी।

जोलिफ़ी कहने लगा—"सम्पूर्ण स्त्रियों में केवल तुम्हीं को मैं इतना प्यार करता हूँ, जितना एक नवयुवक को अपनी भावी पत्नी से करना चाहिए। मुझे मालूम होगया है कि जोना मुझे सगाई तोड़ देने की अनुमति बड़ी प्रसन्नता से दे देगी। वह मुझ से बहुत ऊँचे किसी पुरुष से विवाह करना चाहती है। मुझे तो उसने केवल कृपावश ही विवाह की स्वीकृति दी थी। उस जैसी बड़ी कन्या मेरे जैसे मामूली मल्लाह के योग्य नहीं है। मेरे लिए तो तुम्हीं उपयुक्त हो !"

एमिली को अपने बाहुपाश में जकड़ कर जोलिफ़ी ने एक साथ उसके इतने चुम्बन ले डाले कि वह भावावेश में कांपने लगी। उसने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में कहा—"आश्चर्य है !···क्या सचमुच···क्या सचमुच जोना ही ने तुम से यह बात कही है ?... ओह, क्या तुम्हें निश्चय है ? क्योंकि—।"

"मुझे मालूम है कि वह हमें दुखी नहीं बनाना चाहेगी। वह मुझे उन्मुक्त कर देगी।"

"ओह, मुझे उमीद है! मुझे भी उमीद है कि वह उन्मुक्त कर देगी। कैप्टिन जोलिफ़ी, इस वक्त मुझे यहां अकेला छोड़ दो!"

इसके बाद भी जोलिफ़ी थोड़ी देर तक वहीं मंडराता रहा, मगर उसी समय किसी गाहक के आजाने पर उसे वहां से चले जाना पड़ा।

जोना की सम्पूर्ण ईर्ष्या नए सिरे से हरी हो गई थी। वह वहां से चुपचाप चले जाने की राह ढूँढ़ने लगी। यह आवश्यक था कि उस के यहां मौजूद रह कर सारी बातचीत सुन लेने की खबर किसी को न लगे। इस लिए धीरे से वह दूसरे दरवाज़े में से होकर मकान के आंगन में चली गई और वहां से बिना आवाज़ किए सीढ़ियां चढ़ कर गली में जा पहुँची। इस नज़ारे ने उस के इरादे को बदल दिया।—अब वह जोलिफ़ी को हाथ से न जाने देगी। घर पहुँचते ही उस ने वह पत्र जेब से निकाल कर आग में जला दिया। इस के बाद उस ने अपनी मां से कह दिया कि अगर आज कैप्टिन जोलिफ़ी उस से मिलने आए तो वह उस से कह दें कि जोना की तबीयत अच्छी नहीं है, इस लिए वह मिल न सकेगी।

मगर जोलिफ़ी वहां आया ही नहीं। उसने जोना के नाम पर एक चिट्ठी भेज दी और उसमें अपने दिल की सब बातें

खोल कर लिख दिया कि उसे उमीद है कि पिछले दिन की बातचीत के मुताबिक वह उसे प्रतिज्ञा के बन्धन से मुक्त कर देगी। उसने यह भी लिख दिया कि हम दोनों का सम्बन्ध असल में दो मित्रों के सम्बन्ध से कुछ बहुत अधिक घनिष्ठ नहीं है। जोलिफ़ी दिन भर अपनी चिट्ठी के उत्तर का इन्तज़ार करता रहा, मगर उसे उत्तर न मिला। अन्त में जब उसे यह इन्तज़ारी असह्य हो उठी तब, रात हो जाने पर, अपनी किस्मत का हाल जानने के लिए वह जोना के घर की तरफ़ चल दिया।

जोना की मां ने जोलिफ़ी के सामने अपनी पुत्री की बात दोहरा दी। जब जोलिफ़ी ने पूछा कि जोना की तबीयत कैसे खराब हो गई तो उसने कहा कि तुम्हारा पत्र पढ़ कर उसे बड़ी चोट पहुँची है।

जोलिफ़ी यह सुन कर घबरा गया। वह समझ गया कि मां ने भी वह चिट्ठी पढ़ी है। वह स्वभाव ही से धार्मिक प्रकृति का पुरुष था। उसने बड़ी चिन्ता के साथ कहा—"कुमारी जोना ने कल मुझ से जो बातचीत की थी, उस से तो मैं यही समझा था कि मेरी इस तरह की चिट्ठी पढ़ कर उसे बड़ी प्रसन्नता होगी। मुमकिन है कि कल मैंने उसके भाव को समझने में ग़ल्ती की हो। यदि मुझे पता होता कि वह स्वयं इस सम्बन्ध को नहीं तोड़ना चाहती तो मैं उसे यह पत्र कदापि न लिखता।"

अगले दिन प्रातःकाल ही जोलिफ़ी के पास जोना का भेजा हुआ एक आदमी आया और उसने सन्देश दिया कि आज

शाम को वह उस अपने घर बुला रही है। जोलिफ़ी ने इस आदेश का पालन किया। शाम को वे दोनों साथ साथ सैर के लिए निकले।

राह में जोना ने कहा—"हम दोनों का वह सम्बन्ध अभी तक कायम है न? तुमने वह पत्र गलती से ही भेजा था न?"

जोलिफ़ी ने कहा—"पहले का सम्बन्ध? हां,...अगर तुम चाहोगी तो वह ज़रूर कायम रहेगा!"

जोना ने धीरे-से कहा—"मैं चाहती हूँ!—" यह कहते कहते एमिली की मूर्त्ति उसकी आंखों के सामने से घूम गई।

जोलिफ़ी उन लोगों में था, जो जान देकर भी अपना वचन निभाना चाहते हैं। उसने एमिली को यह सम्पूर्ण स्थिति ठीक ढंग से समझा दी और कुछ ही दिनों में जोना और जोलिफ़ी का परस्पर विवाह होगया।

(२)

इस विवाह के केवल एक मास बाद ही जोना की मां का देहान्त होगया। उसके पिता पहले ही न थे। जोना की माता के कारण पति-पत्नी को अपने खाने पीने की चिन्ता न रहती थी; परन्तु अब, विवाह के इतना शीघ्र बाद, उन्हें अपना ध्यान संसार की ठोस व्यवहारिक बातों की तरफ़ लगाने को बाधित हो जाना पड़ा। जोना इस बात के लिए तैयार नहीं थी कि वह अपने पति को समुद्र में काम के लिए भेज कर अकेला जीवन व्यतीत करे। परन्तु यह भी एक समस्या थी कि शहर में रह कर उसका

पति क्या काम करे। इन्हीं दिनों बाज़ार में एक छोटी-सी परचून की दूकान पूरे सामान और साख सहित बिकने का नोटिस प्रकाशित हुआ। जोना के पास कुछ रुपया था, अपने पति की सलाह लेकर इस रुपए से उसने वह दूकान खरीद ली। यद्यपि उन दोनों में से दूकानदारी का काम कोई नहीं जानता था, तथापि उन्हें विश्वास था कि शीघ्र ही वे यह काम सीख जाएँगे।

कई बरसों तक वे दोनों इस दूकान को उन्नत करने के लिए जीजान से मेहनत करते रहे, परन्तु उन्हें विशेष सफलता न मिली। उनकी आर्थिक दशा सुधर न सकी। इसी बीच में जोना दो सन्तानों की मां बन गई। यद्यपि जोना ने अपने पति को अपने आवेशपूर्ण प्यार का पात्र आज तक कभी नहीं बनाया था, तथापि इन बच्चों से वह सचमुच बहुत अधिक प्यार करती थी। जब ये बच्चे पैदा हुए थे, तो उसने उन्हें सर्वोत्तम शिक्षा देने के बड़े बड़े मन्सूबे बनाए थे। वे बच्चे अब बड़े होगए। परन्तु किस्मत के देवता के अन्धेपनकी बदौलत इस दम्पति की आर्थिक दशा सुधर नहीं सकी। परिणाम यह हुआ कि इन बालकों को कस्बे की एक तीसरे दर्जे की पाठशाला में दाखिल कर देने के अतिरिक्त उन के पास और कोई चारा ही न रहा। तथापि ईश्वर की दया से ये दोनों बालक खूब सुन्दर, स्वस्थ और बुद्धिमान थे और अपना विकास बड़े आशाजनक रूप में कर रहे थे।

उधर जोलिफ़ी से निराश होकर एमिली ने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वह अब आजन्म विवाह ही न करेगी।

मगर भाग्य ने शीघ्र ही उसे प्यार करने वाला एक और सदाचारी नवयुवक लाकर खड़ा कर दिया। इस व्यक्ति का नाम लैस्टर था। इस की पहली पत्नी का देहान्त हो चुका था, परन्तु उससे इस की कोई सन्तान नहीं थी। लेस्टर इस कस्बे का एक धनी व्यापारी था, उसकी स्टेशनरी की एक खूब चलती हुई दूकान थी। एमिली ने शुरू शुरू में तो इस नवयुवक के प्रति उपेक्षा के भाव ही प्रदर्शित किए परन्तु बाद में उसकी भद्रता से आकृष्ट हो कर वह उस के साथ विवाह करने को तैयार होगई। शीघ्र ही उन दोनों का विवाह होगया। उचित समय के व्यवधान से इस जोड़े के भी दो सन्तानें हुईं। एमिली अपने पति से बहुत अधिक प्रसन्न थी। एक दिन उस ने अपने पति से साफ़ साफ़ कह भी दिया कि अपने इस जन्म में वह कभी इतनी सौभाग्य-शालिनी बन सकेगी, इस की उसे कभी कल्पना भी नहीं थी।

बाज़ार में ही, जोना की परचून की दूकान के ठीक सामने, लैस्टर का बहुत बड़ा और आलीशान मकान था। उस मकान की ऊपर की मंज़िल वाली बढ़िया खिड़कियों में से नीचे की ओर झांकती हुई एमिली पर बहुत वार जोना की निगाह पड़ जाती थी और उसे देख कर उस के दिल पर सांप लोट जाता था। एमिली आज वैभव में लोटती है। उसके चित्रागार में सैंकड़ों रुपयों के काउच और गलीचे बिछे हुए हैं; शहर के अच्छे से अच्छे लोग उस के यहां निमन्त्रित होकर प्रायः आते जाते रहते हैं। एमिली के पास उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण हैं, उस के बच्चों को पालने का काम सधी

हुई धायों के ज़िम्मे है। इधर वह अभागिनी सस्ते बिस्कुटों के डिब्बों और धूल से भरी, पुरानी चाकलेट की ढेरियों के निकट दिन भर बैठी रह कर प्रति क्षण सस्ता खरीदने वाले टके के गाहकों का इन्तज़ार किया करती है। उस के पास इतना भी तो रुपया नहीं कि एक नौकर ही रख सके। ज़रा-सा मकान है, न अच्छी हवा और न अच्छा भोजन। उसके प्यारे बच्चे प्रतिदिन एक टटपूंजे-से स्कूल में पैदल चल कर जाते हैं।—जोना यह सब देखती और सोचती कि जिस अल्हड़-सी लड़की के प्रेमपात्र को वह इतनी आसानी से जीत लाई, उस पर भाग्य का देवता इतना उदार क्योंकर होगया! यदि उसने 'वैसा' न किया होता तो—?

मगर जोलिफ़ी एक बहुत ही सज्जन और ईमानदार आदमी था। वह सदैव अपने हृदय और कर्म से अपनी पत्नी के प्रति सच्चा रहा। जोना से विवाह करते ही उसने अपने हृदय से एमिली के प्रति प्रेम के भाव निकाल डाले। वह अब उसे एक मित्र के समान ही जंचने लगी। एमिली के हृदय में भी उसके लिए यही भाव थे। जोलफ़ी और एमिली दोनों के हृदयों में एक दूसरे के प्रति उल्लासभरे प्रेम के जो पंख उग आए थे, उन्हें 'काल' ने अपनी तेज़ कैंची से चुपचाप काट दिया। अब एमिली के दिल में ईर्ष्या का भाव रत्ती भर भी नहीं था। सच बात तो यह है कि वह अपनी किस्मत की नई मंज़िल से इतना अधिक सन्तुष्ट थी कि भूतकाल की बातें उसे याद ही न आती थीं और यही कारण था कि जोना उसकी इस दशा से खुश नहीं थी। यदि एमिली के दिल

में उसके प्रति ईर्ष्या के भाव होते और जोलिफ़ी को खोकर वह अपने को अभागिनी मानती तो जोना को बहुत सन्तोष होता और उस दशा में वह अपनी सखी से मित्रता का भाव भी बनाए रखती।

जोलिफ़ी में वह शक्ति नहीं थी, जिस की बदौलत कुछ लोग भारी प्रतिस्पर्धा के मौजूद रहते भी अपनी छोटी छोटी दूकानों को बहुत उन्नत कर लेते हैं। एक दिन किसी कम्पनी का कोई एजेण्ट एक नई तरह के खाद्य पदार्थ के डिब्बे ज़बरदस्ती उसके मत्थे मढ़ गया। एजैण्ट का कहना था कि यह चीज़ अण्डों का मुकाबला करती है, और उनसे सस्ती पड़ती है। जोलिफ़ी ने स्वयं उस चीज़ को आज़माया; उसे यह चीज़ अण्डों की अपेक्षा बहुत निचले दर्जे की मालूम हुई। अगले दिन उन डिब्बों के कवर पर अण्डों का मुकाबला करने की बात पढ़ कर एक गाहक ने जोलिफ़ी से पूछा—"क्या सचमुच यह चीज़ अण्डों का मुकाबला करती है?" जोलिफ़ी ने बड़ी सरलता से उत्तर दिया—"मेरी राय में तो नहीं करती।" नतीजा यह हुआ कि वे डिब्बे उसी तरह धरे के धरे रह गए। उन दिनों बाज़ार में एक मामुली चाय बढ़िया 'मोचा चाय' के नाम से बिकनी शुरु हुई थी। अन्य सभी दूकानदार उसकी बदोलत खूब पैसे कमा रहे थे। जोलिफ़ी की दूकान पर भी यह चाय मौजूद थी। मगर यदि उससे कोई गाहक पूछता कि क्या सचमुच यह मोचा की ही चाय है? तो वह बड़ी तत्परता से "हां" कर देने की बजाय कहता—"बाज़ार भर में आजकल यही

चाय 'मोचा की चाय' के नाम से विक रही है!"—धन के वैभव-शाली नगर को जाने का मार्ग, यह नहीं है!

एक दिन दोपहर के समय पति पत्नी को छोड़कर दूकान पर और कोई आदमी नहीं था। उसी समय एक बढ़िया फिटन आकर सड़क पर रुकी और उस में से उतर कर कोई सम्पत्ति-शाली पुरुष एमिली के मकान में प्रविष्ट होगया।

जोना ने यह सब देखा और ईर्ष्या का भाव उसके हृदय में एक छोर से दूसरे छोर तक व्याप्त होगया। उसने बड़ी उदासी के साथ अपने पति से कहा—"सच यह है कि तुम व्यापार के योग्य ही नहीं हो। फिर तुम से यह उमीद ही किस तरह की जासकती है कि तुम इस क्षेत्र में अपनी किस्मत बना सकोगे।"

जोलिफ़ी ने झट से इस अभियोग को स्वीकार कर लिया, उसकी आदत ही यह थी। उसने थोड़ा-सा मुस्करा कर बड़ी सर-लता से कहा—"तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है। सच बात तो यह है कि मुझ में धनी बनने की इच्छा रत्ती भर भी नहीं है। मैं तो इसी हाल में खुश हूँ। हमारा गुज़ारा तो चल ही रहा है!"

सामने के मकान की रेशमी परदों से ढकी हुई शान्दार खिड़कियों पर जोना की निगाह एक बार और घूम गई।

अब के उसने खिज कर कहा—"हां, तुम तो 'गुज़ारे' पर ही खुश होगे!—ज़रा एमिली की हालत तो देखो। वह एक दिन कितनी गरीब थी। उसके लड़के बड़े होकर कालेज की तालीम लेंगे और तुम्हारे लड़के?"

मगर जोलिफ़ी ने जैसे बच्चों के सम्बन्ध की बात सुनी ही नहीं। एमिली का नाम आते ही वह ज़ोर से हँस पड़ा और कहने लगा—"एमिली का यह सारा वैभव तुम्हारी ही बदौलत है! अगर तुम उस दिन अपना इरादा न बदल लेतीं तो शायद वह बेचारी आजतक उसी तहखाने में पड़ी होती!"

इस बात ने जोना को क्रोध से पागल बना दिया। वह बहुत ही तीव्र स्वर में बोली—"चुप रहो। जो कुछ होगया है, उस की बाबत कुछ मत कहो!"

इस के बाद एक क्षण के लिए वह भी चुप होगई और उस के बाद ज़रा नरम आवाज़ में पुनः कहने लगी—"ईश्वर के नाम पर अपने बच्चों का भविष्य सोचो और अपने लिए न सही तो मेरे लिए ही, धनी बनने का कोई उपाय सोचो।"

जोलिफ़ी भी अब के गम्भीर बन गया। उसने बड़ी गम्भीरता के साथ जवाब दिया—"सच्ची बात तो यह है कि मैं शुरू ही से अपने को इस दूकानदारी के काम के लिए अनुपयुक्त समझता हूँ, यद्यपि मैं यह बात तुम से कहने का साहस आज तक नहीं कर सका था। मुझे अगर मेरे मन के अनुकूल अवसर मिले तो मैं भी धनी बन कर दिखा सकता हूँ। मुझे अपने पर पूर्ण विश्वास है।"

"मैं चाहती हूँ कि तुम भी धनी बन सकते! तुम्हारे अनुकूल अवसर कौन से हैं?"

"समुद्र की विशाल छाती पर!"

जोना ने अपने पति को समुद्र में भेज देने की बात को आज तक अपने दिल में स्थान नहीं दिया था। मल्लाहों की पत्नियां अपने घरों में जिस तरह अर्ध-विधवा-सी बन कर रहती हैं, उस से जोना घृणा करती थी। मगर आज धन प्राप्त करने की महत्वाकांक्षा ने उस घृणा को दबा लिया। उसने पूछा—"क्या तुम्हें निश्चय है कि समुद्र में जा कर तुम अवश्य सफल हो सकोगे।"

"मुझे पूर्ण विश्वास है। यह कार्य मेरी प्रवृत्ति के अनुकूल है।"

"क्या तुम वहां जाना चाहते हो?"

"क्यों नहीं जोना! मगर मैं अपनी खुशी के लिए वहां नहीं जाना चाहता। जहाज़ के डैक पर मुझे वह प्रसन्नता नहीं प्राप्त हो सकती, जो इस ज़रा-से मकान में तुम्हारे साथ रहते हुए होती है। मेरी प्यारी! सच सच कह दूँ, मुझे समुद्र के जीवन से कुछ भी प्यार नहीं है, मगर यदि तुम्हारे लिए और बच्चों के लिए धन कमाने का सवाल आता है, तो मैं अवश्य ही बड़ी खुशी के साथ वहां जाऊँगा। मुझ जैसे व्यक्ति के लिए, जिस की जवानी का काफ़ी हिस्सा जहाज़ों पर कटा है, धन कमाने का एकमात्र यही मार्ग है।"

"क्या इस काम में बहुत समय लगेगा?"

"यह तो अवस्थाओं पर निर्भर करता है। शायद थोड़ा ही समय लगे।"

अगले दिन की प्रातःकाल बरसों के बाद जोलिफ़ी ने अपना वह सन्दूक खोला, जिसे वह समुद्रयात्रा के दिनों में अपने पास रक्खा करता था; इसमें से मल्लाहों की पोशाक निकाली और उसे धूप में डाल दिया। सायंकाल को वह यही पोशाक पहिन कर बन्दरगाह की तरफ़ निकल गया। इस बन्दरगाह का व्यापार अब पहले की तरह से लाभकर तो न रहा था, फिर भी अभी तक यहां से न्यूफ़ाउण्डलैण्ड को काफ़ी सामान आता जाता था।

जोलिफ़ी ने अपना सम्पूर्ण रुपया जमा करके पाल वाली एक बड़ी नाव में हिस्सा खरीद लिया। इस नाव में थोड़े से मांझी काम करते थे। जोलिफ़ी उनका कप्तान नियत होगया। कुछ दिनों तक वह तट पर ही काम करता रहा, और इस तरह थोड़ा-सा रुपया जमा करके उचित मौसम में अपनी नाव को सामान से भर कर वह न्यूफ़ाउण्डलैण्ड के लिए रवाना होगया।

जोना अपने दोनों लड़कों के साथ घर में रहती थी। उसके लड़के अब काफ़ी बड़े होगए थे और अपना तथा अपनी मां का निर्वाह करने के लिए कुछ घण्टे बन्दरगाह पर मज़दूरी का काम किया करते थे।

उनकी मां सोचती—"अच्छा है, तब तक ये लड़के इसी तरह काम करते रहें। जब अगले वर्ष वह लौट कर आएँगे, तो इनकी उम्र क्रमशः अठारह और सत्रह बरस की ही होगी। तब मैं इनके लिए एक मास्टर रख लूँगी। तब मेरे लड़के भी एमिली के लड़कों से किसी दृष्टि से कम न रहेंगे। इन्हें भी तब अलजबरा

और लैटिन पढ़ाई जाएगी।"

क्रमशः जोलिफ़ी के लौटने की तारीख़ आगई, मगर उस की नाव बन्दरगाह पर नहीं पहुँची। जोना को मालूम था कि समुद्र-यात्रा का काम इसी तरह अनिश्चित-सा होता है, इस लिए वह घबराई नहीं। उसके दोनों लड़के प्रतिदिन शाम तक बन्दरगाह पर रह कर अपने पिता की नाव लौटने का इन्तज़ार किया करते थे। करीब एक मास बाद, जब शाम के समय दोनों लड़के बन्दरगाह से चल दिए थे, जोलिफ़ी की नाव बन्दरगाह पर आ लगी। वह अपनी नाव से उतरा और बड़ी शीघ्रता से घर की तरफ़ चल दिया। लड़के कहीं और चले गए थे। घर में जोना अकेली बैठी थी कि जोलिफ़ी उसके सामने जा खड़ा हुआ।

जब इस सम्मिलन की प्रसन्नता का प्रथम आवेग कुछ शान्त हुआ तो जोलिफ़ी ने अपने आने की देरी का कारण बता कर कहा—"प्यारी, मैंने निश्चय किया हुआ था कि मैं तुम्हें निराश नहीं करूँगा। अच्छा, तुम कल्पना करो कि मैं कितना रुपया कमा कर लाया हूँ।"

जोना ने कोई जवाब नहीं दिया। केवल बड़ी उत्सुकतापूर्ण प्रसन्नता से भरी निगाह के साथ वह अपने पति की ओर एक टक देखती रह गई। उसे जवाब देते न देख कर जोलिफ़ी ने कैनवस का एक छोटा-सा बैग निकाला और उसे जोना के सामने, फर्श ही पर, उलट दिया। खन खन की आवाज़ कर के चमक दार सोने की मोहरों का एक छोटा-सा ढेर जमा हो गया।

जोलिफ़ी के मुंह पर आत्माभिमानभरी मुस्कयान की वह चमक थी, जो कड़ी मिहनत के बाद कार्य सिद्ध होजाने पर ही दिखाइ देती है। उस ने बड़ी प्रसन्नता के साथ अपनी पत्नी से कहा—"मैंने तुम से कहा था न कि मैं भी रुपया कमा सकता हूं। मैंने अपना वचन पूरा कर दिखाया है न ?"

जब तक जोलिफी ने अपनी कठोर मेहनत से संचित किया वह स्वर्णमुद्राओं का ढेर फर्श पर नहीं डाला था, तब तक तो जोना के मुँह पर अत्यधिक उल्लास के भाव दिखाई दे रहे थे; परन्तु सोने की उस ढेरी के सीमित आकार को देखते ही उसका वह सारा उल्लास नष्ट होगया। फिर भी अपने को संभाल कर उस ने कहा—"सचमुच यह काफ़ी सोना है! मगर—क्या सारा इतना ही है ?"

"सारा ?—प्यारी जोना, क्या यह थोड़ा है! गिन कर देखो, ये पूरी ३०० मोहरें (४५०० रुपया) है। यह तो एक 'रकम' है!"

"हां—हां, यह एक 'रकम' तो ज़रूर है, मगर जहाज़िओं की दृष्टि से। यहां शहरों में तो इसकी कीमत—"

जोना अपना वाक्य समाप्त न कर सकी; उसी समय दोनों लड़के घर में आगए। जोना ने वह ढेर छिपा लिया।

अगले रविवार को जोलिफ़ी ने चर्च में एक बार पुनः ईश्वर का धन्यवाद किया। परन्तु इस बार के धन्यवाद में पहले का-सा उल्लास नहीं था। पादरी ने अपनी प्रार्थना में जोलिफ़ी के कुशलपूर्वक

लौटने का भी सामान्य रीति से ज़िक्र कर दिया। कुछ ही दिनों बाद जब यह सवाल उनके सामने आया कि इस रुपये को कहां जमा किया जाय तो बातचीत के सिलसिले में जोलिफ़ी ने बड़ी निराशा के साथ अपनी पत्नी से कहा—"यह राशि लेकर तुम मुझे उतना सन्तुष्ट नहीं दिखाई दीं, जिसकी मुझे आशा थी!"

जोना ने कहा—"हां, प्यारे! हमारी गिनती सैकड़ों तक है और वे लोग हज़ारों में लोटते हैं! ('वे लोग' कहते हुए उसने अपना सिर हिला कर सड़क के दूसरी ओर वाले मकान की तरफ़ इशारा किया) तुम्हें मालूम है, तुम्हारे पीछे उन्होंने एक घोड़ा गाड़ी भी रखली है।"

"सचमुच!"

"मेरे प्यारे, तुम्हें नहीं पता कि दुनियां किस तरह चलती है। ख़ैर, इस धन का हम अधिकतम सदुपयोग करेंगे। मगर मैं इतना ज़रूर कहूँगी कि वे धनी हैं और हम अब भी गरीब हैं!"

अगले साल के अधिकांश भाग में जोलिफ़ी ने जम कर कोई काम नहीं किया। उस के लड़के अब मज़दूरी की बजाय पानी में मल्लाह का काम करने लगे थे और जोना प्रायः सदैव उदास बनी रहती थी।

एक दिन जोलिफ़ी ने उस से कहा—"जोना! मालूम होता है, तुम अपनी किस्मत से सन्तुष्ट नहीं हो!"

जोना ने कहा—"क्या तुम नहीं देखते कि मेरे बच्चों को

तो इसी उम्र में एमिली लैंस्टर की नावें खेनी पड़ रही हैं। एक दिन वह मुझ से गरीब होती थी !"

जोलिफ़ी बहस करना नहीं जानता था। उस ने धीरे-से इतना ही कहा कि एक वार समुद्र में जाकर मैं पुनः अपनी किस्मत आज़माऊँगा। उस दिन के बाद से वह दुबारा समुद्र-यात्रा करने की स्कीमें बनाने लगा। एक दिन अचानक कोई बात उसके दिल में आई और दोपहर के समय ही घर आकर उसने जोना से कहा—"इस वार समुद्र-यात्रा से मैं तुम्हारे लिए बहुत काफ़ी रुपया ला सकता हूँ, यदि...यदि...।"

"किस तरह से ?"

"तब तुम्हारी गिनती सैकड़ों से बढ़ कर हज़ारों में जा पहुंचेगी।"

"यदि क्या कर सको तो ?"

"यदि मैं अपने पुत्रों को अपने साथ ले जा सकूँ !"

जोना पीली पड़ गई। उसने जल्दी से कहा—'ऐसा मत कहो !'

"क्यों ?"

"मैं इसे सुनना भी नहीं चाहती। समुद्र में हमेशः खतरा रहता है। मैं उन्हें पढ़ा लिखा कर सभ्य बनाना चाहती हूँ, उन्हें खतरे में नहीं डालना चाहती। मैं उन्हें समुद्रयात्रा के खतरे में कभी नहीं डालूँगी, ओह, कभी नहीं—"

"बहुत अच्छा प्यारी ! मैं आगे से यह बात तुम्हें कभी नहीं कहूँगा।"

मगर अगले ही दिन कुछ देर तक बड़ी गम्भीरतापूर्वक चुप रहने के बाद जोना ने खुद ही अपने पति से पूछा—"यदि दोनों बच्चे भी तुम्हारे साथ जाएं, तो इस से मुनाफ़े में क्या सचमुच बहुत बड़ा फ़र्क आजाएगा ?"

"मुझे यकीन है कि मैं उस दशा में तिगुनी राशि ला सकूँगा। मेरे निरीक्षण में वे दोनों दो पूरे आदमियों का काम कर सकेंगे।"

जोना कोई जवाब दिए बिना वहां से चली गई। दोपहर को भोजन के बाद उस ने खुदबखुद ही पुनः पूछा—"उस सम्बन्ध में मुझे ज़रा और अच्छी तरह समझाओ।"

"बात यह है कि दोनों लड़के समुद्र में नाव चलाने में अब बहुत प्रवीण होगए हैं। ये दोनों जितना अच्छा काम कर सकते हैं, उतना बड़ी उम्र के छः आदमी रख कर भी न हो सकेगा।"

"क्या समुद्र में सचमुच बड़ा खतरा रहता है ? तुम ने समुद्र के युद्ध की अफ़वाह भी तो सुनी होगी !"

"हां, इस काम में खतरे तो ज़रूर हैं। मगर………"

जोना अपने दोनों लड़कों के समुद्र में जाने की जब कल्पना भी करती, तो उसे बड़ा क्लेश पहुँचता था। फिर भी यह 'आडिआ' पकता ही चला गया। दोनों लड़के बड़े ही समझदार और अपने पिता की तरह सौम्य स्वभाव के थे। उन्हें जब अपने पिता का यह इरादा मालूम हुआ तो वे खुशी से समुद्र-यात्रा के लिए तैयार होगए। यद्यपि उनमें अपने पिता ही के समान समुद्र-यात्रा के लिए स्वाभाविक उत्साह नहीं था।

अब जोना की सहमति की ही इन्तज़ारी थी। आखिरकार बहुत दिनों तक इधर उधर की बातें सोच कर उसने भी अपनी सहमति दे ही दी। जोलिफ़ी को इस बात से बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने हृदय से ईश्वर का धन्यवाद किया। उसे पूर्ण विश्वास था कि प्रभु अपने भक्तों को कभी नहीं भुलाता।

जोलिफ़ी के पास जो कुछ था, वह सब उसने बेच डाला। यहां तक कि दूकान का भी बहुत थोड़ा-सा हिस्सा, जिस से अकेली जोना का गुज़ारा हो सके, बाकी रहने दिया। इस तरह काफ़ी धन जमा करके उसने इस बार एक काफ़ी बड़ा, पाल का जहाज़ हिस्से पर ले लिया। इस जहाज़ का नाम रक्खा गया—'जोना।' इस जहाज़ में जोलिफ़ी ने कपड़े, बूट, जूते, शिकार के जाल, मक्खन, पनीर आदि विविध तरह की चीज़ें यथेष्ट परिमाण में भर लीं। यह ख़्याल था कि न्यूफाउण्डलैण्ड से वापिस आते हुए जहाज़ में वहां से तेल भर कर लाया जाएगा। इस तरह खूब धन कमा लेने की पूरी सम्भावना थी।

पिछली बार जोना अकेली नहीं थी। मगर इस बार, १६ बरसों के बाद, न जाने कितने समय तक अकेले रहने को वह बाध्य होगई। उसे बच्चों के चले जाने की कल्पना भी सह्य नहीं थी, मगर जिस किसी तरह वह अपने जी को कड़ा बनाने का प्रयत्न कर रही थी।

(३)

जहाज़ सोमवार को रवाना होगया। जोलिफ़ी को मालूम था

कि जोना विदाई का दुखदाई दृश्य बर्दाश्त न कर सकेगी। इस लिए रविवार को जहाज़ का पूरा सामान बिल्कुल ठीकठाक करके भी घर में सोने के लिए आकर जोलिफ़ी ने अपनी पत्नी को सूचना दी कि हम लोग कल दोपहर को यहां से रवाना होंगे। परन्तु सोमवार की प्रातःकाल, पांच बजते ही जोलिफ़ी ने चुपके-से अपने दोनों लड़कों को जगा दिया और उनके साथ शयनागार से नीचे उतर चला। इन लोगों के सीढ़ियों पर से उतरने की आवाज़ जोना के कानों में पड़ी तो, मगर वह समझी कि ये लोग अभी जहाज़ का सामान ठीक करने ही जा रहे हैं। फिर भी करीब आध घण्टे तक बड़ी बेचैनी से पड़े रहने के बाद वह उठ खड़ी हुई और नीचे उतर आई। इस समय तक प्रभात के प्रकाश से जगत जगमगा उठा था। जोना की नज़र दूकान के बाहर लटके हुए काले बोर्ड पर चाक से लिखी कुछ लाइनों के ऊपर पड़ी। वह शीघ्रता से बोर्ड के निकट पहुंची। देखा, ऊपर उसके पति ने लिखा था—

"तुम्हें व्यर्थ ही में विदा लेने का दुख न देने के लिए हम लोग इसी समय चल दिए हैं! भूलना नहीं।

तुम्हारा ही—

जोलिफ़ी"

इस के बाद दोनों लड़कों ने लिखा था—

"माता जी, विदाई!

—जिम,—जार्ज"

जोना ने यह पढ़ा और वह बन्दरगाह की ओर दौड़ चली। मगर वहां पहुँच कर उस ने देखा, तब तक जहाज़ छूट कर काफ़ी दूर जा पहुँचा था। प्रातःकालीन समुद्र की शान्त जलराशि के ऊपर उस के बड़े बड़े पाल, दूर से किसी बगुले के सफ़ेद डैनों की तरह प्रतीत हो रहे थे। उस पर कोई मनुष्य-मूर्त्ति उसे दिखाई न दी;—दिखाई दे ही न सकती थी। जोना का दिल टूट गया। वह माथा पकड़ कर समुद्रतट पर ही बैठ गई, और फुफकार कर रो उठी।

थोड़ी देर बाद वह घर को लौट आई। उस के हृदय में असीम शोक भरा हुआ था। परन्तु घर में खड़े होकर जब उस की निगाह एमिली लैस्टर के मकान पर पड़ी, तो उसे स्वयं ही कुछ न कुछ आश्वासन मिल गया।

एमिली लैस्टर के साथ न्याय करने के लिए यहां यह कह देना चाहिए कि उस के दिल में जोना के प्रति ज़रा-भी अभिमान के भाव नहीं थे। यह सब जोना के अपने मस्तिष्क की ही उपज थी। वह जब कभी जोना से मिलती तो बड़े स्नेह और समानता से मिलती, यद्यपि उन दोनों का मेलजोल अब बहुत कम हो गया था।

क्रमशः एक साल बीत गया। जोना अपने पति और पुत्रों के लौटने की प्रतीक्षा में बड़ी दरिद्रता से गुज़ारा करती रही। उस की दूकान अब बहुत ही छोटी होगई थी। उस पर सामान भी बहुत थोड़ा था। सच पूछो तो इस वक्त उस की सब से बड़ी

ग्राहक एमिली ही थी, जो इस बात की परवाह किए बिना कि जोना की दूकान की चीज़ें उसे सस्ती पड़ती हैं या महँगी, अथवा वे अच्छी भी होती हैं या नहीं, जो चीज़ वहां मिल सकती उसे वहीं से मँगवाती। एमिली जोना की दूकान से किसी तरह का सवाल तक किए बिना चीज़ें खरीदती है, इस बात में भी जोना को एक डंक अनुभव होता था। मगर उसे मन मार कर यह चोट सहनी ही पड़ती थी, इस के अतिरिक्त और कोई उपाय भी तो नहीं था।

सरदियों का मौसम बीत रहा है। जोना ने वह बोर्ड, जिस पर लिख कर उस के पति और पुत्रों ने उस से विदाई ली थी, उतार कर यत्न से रख लिया है। उसके अक्षर मिटाए नहीं गए। काल के प्रभाव से यद्यपि वे स्वयं ही कुछ कुछ धुँधले पड़ गए हैं, मगर पढ़े अच्छी तरह आते हैं। जोना जब कभी अधिक उदास होती है, तब इस बोर्ड को देखने लगती है। बड़े दिनों की छुट्टियां आई हैं। एमिली के दोनों लड़के इन छुट्टियों में कालेज से घर आए हैं। उन के चेहरे पर अब 'ज्ञान' का प्रकाश आचला है। वे ऊँची ऊँची किताबें पढ़ते हैं। जोना उन्हें दूर ही से देखती है, और सोचती है—''बस, गरमियां आजाने दो। 'वे' लौट आएँगे, और तब मेरे लड़के भी युनिवर्सिटी की शिक्षा ग्रहण करेंगे!''

मगर बहुत दिन होगए, जोलिफ़ी का कोई पत्र नहीं आया। जोना को चिन्ता होने लगी। कहीं कोई दुर्घटना तो नहीं होगई। एमिली से भी यह बात छिपी न रही कि जोना आजकल विशेष

उदास रहती है। वह स्वयं एक दिन जोना के घर पर गई। एमिली को देख कर जोना अपने पति के खतरे की बात भूल गई, उसे केवल अपनी गरीबी का ही स्मरण हो आया। उसने एमिली से कहा—"तुम्हारा जीवन इतना सफल है और मेरा उसके बिल्कुल विपरीत!"

"तुम ऐसा क्यों सोचती हो? अबकी बार 'वे' अवश्य बहुत काफ़ी धन कमा कर लौटेंगे।"

"आह कभी वे लौटेंगे भी? मुझे तो बड़ा डर मालूम होता है। वे तीनों ही एक जहाज़ पर हैं! ज़रा सोचो तो! ईश्वर न करे—महीनों से मुझे उनका कोई समाचार भी नहीं मिला!"

"मगर अभी उनके लौटने का समय भी तो नहीं हुआ। ईश्वर तुम्हारा भला करेंगे।"

"ओह, उनकी अनुपस्थिति मुझे जो दुख दे रही है, उसका प्रतिकार तो अब असीमित धन मिलने से भी नहीं हो सकता।"

"फिर तुमने उन्हें जाने ही क्यों दिया? तुम्हारा गुज़ारा तो अच्छी तरह हो रहा था!"

जोना ने ज़रा उत्तेजित होकर जवाब दिया—"मैंने उन्हें जाने क्यों दिया?—उल्टा मैंने तो खुद उन्हें जाने को बाधित किया! सच सच बता दूँ? मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती थी कि तुम तो इतनी धनी बन कर रहो और हम गरीबी के दिन काटें! सुन लिया न; अब चाहो तो मुझ से बेशक घृणा करना शुरू कर दो!"

कितना मज़ा।

एमिली ने बड़ी शान्ति से कहा—"बहिन, मैं तुम से कभी घृणा नहीं करूँगी; किसी भी दशा में नहीं।"

क्रमशः जोलिफ़ी के लौट आने के दिन आगए, मगर उसका जहाज़ नहीं आया। अब तो जोना सचमुच बहुत दुखी और उद्विग्न होगई। पतझड़ का मौसम समाप्ति पर था। दिन भर धूलभरी और ठंडी हवा चला करती थी। जोना प्रातःकाल ही घर से निकल कर बन्दरगाह की रेत पर जा बैठती, और अनन्त उत्सुकता से भरे भयपूर्ण नेत्रों से समुद्र के सीमारहित नील वक्षस्थल की ओर ताकती रहती। ठंडी हवा के झोंके उसकी शिथिलता से बंधी वेणी को अस्तव्यस्त करके, उसके साथ छेड़छाड़ करते, नटखट बच्चों की तरह उस पर रेत के असंख्य कणों की वर्षा कर उस दुखिया को और भी तंग करने का प्रयत्न करते। मगर वह इस ओर ज़रा भी ध्यान न देती। समुद्र—यह सामने का भयानक समुद्र कहीं उसके पति और पुत्रों को नील तो नहीं गया! समुद्र के सम्बन्ध में जोना की शुरू ही से यह धारणा थी कि वह विश्वासघाती, छली और सुखी गृहस्थों को उजाड़ने वाला है। मगर जोना के हृदय में अब भी पर्याप्त आशा बाकी थी—"नहीं, वे अवश्य आएंगे!"

एक दिन उसे याद आया कि जोलिफ़ी ने रवाना होने से सिर्फ़ दो दिन पहले उससे कहा था कि इस बार यदि वह ईश्वर की दया से कुशलपूर्वक घर लौट आया तो सब से पहिले अपने बच्चों सहित चर्च में जाकर प्रभु का धन्यवाद करेगा। बस, इस दिन के

बाद से जोना ने समुद्र पर जाना बन्द कर दिया। अब वह प्रति दिन सुबह और शाम को चर्च की सीढ़ियों पर जाकर बैठने लगी। यह चर्च भी समुद्रतट के निकट ही था। उसकी निगाह उसी स्थान पर रहती, जहां पहली बार समुद्र से लौट कर जोलिफ़ी ने घट-घट-व्यापी ईश्वर के सन्मुख घुटने टेके थे। उस घटना को आज पूरे बीस साल बीत चुके हैं, परन्तु जोना को वह स्थान आज भी पूरी तरह से याद है। उसे भली प्रकार स्मरण है कि उस दिन फ़र्श के इस पत्थर पर जोलिफ़ी के पैर रहे थे और इस जगह घुटने। वह सारा दृश्य आज भी उसके हृदय-पटल पर बड़ी स्पष्टता के साथ अंकित है। इस जगह बैठी रह कर जोना कभी आंख उठा कर समुद्र की तरफ़ देख लेती है और कभी उसी स्थान की तरफ़ देखने लगती है।

वह सोचती, ईश्वर ने तब भी उन पर दया की थी; वह अब भी उन पर दया करेगा, मेरे बच्चों पर दया करेगा और मुझ पर दया करेगा। वह कल्पना द्वारा सोचने लगती—वह आएँगे और ठीक इसी जगह घुटने टेकर बैठ जाएंगे। उनके दाहिनी ओर जार्ज बैठेगा और बाईं ओर जिम। आहा, वह कितने सुख की घड़ी होगी। धीरे धीरे उसके दिल की ये सुखदाई कल्पनाएं उसे प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देने लगीं। अब दिन के उज्ज्वल प्रकाश में भी उसे सचमुच यह भ्रम होजाता है कि जार्ज और जिम अपने पिता के साथ ठीक उसी जगह घुटने टेक कर बैठे हैं। मगर थोड़ी ही देर में उसे बड़े कष्ट के साथ यह ज्ञात होजाता है कि ओह,

यह सब चाहे कितना ही मधुर क्यों न हो, मगर है भ्रम ही।

वे नहीं लौटे—मगर जोना को अब भी प्रभु की कृपा का भरोसा है। ईश्वर सचमुच बड़ा दयालु है। मैंने पाप किया था। मैं प्रलोभन में फँस गई थी। ईश्वर ने मुझे उसी पाप का दण्ड दिया है। मेरी आजकल की व्यथा जब उस पाप का पूरा प्रायश्चित कर लेगी, तो मेरे भाग्य का पुनः उदय होगा और 'वे तीनों' मुझे प्राप्त होंगे।—परन्तु फिर भी वे नहीं लौटे!

वे नहीं लौटे—मगर जोना को प्रति दिन कई बार यह साफ़ दिखाई देता है, या सुनाई पड़ता है कि वे लौट आए हैं। दोपहर के समय दूकान में बैठे हुए, जब वह गली के मोड़ पर किसी के आने की आवाज़ सुनती है, तो चौंक कर खड़ी हो जाती है और इस उमीद में कि 'वे आरहे हैं' बाहर झांकने लगती है। सायं-काल के समय शहर के नज़दीक वाले हरेभरे टीले पर बैठ कर जब वह समुद्र की तरफ़ देखती है तो समुद्र की अपार जलराशि के दक्षिणी सिरे पर उसे किसी जहाज़ के मस्तूल दिखाई देने लगते हैं। ओह, यह 'जोना' के ही तो मस्तूल हैं!—मगर फिर भी वे नहीं आए!

एमिली लैस्टर अब उसकी ओर और भी अधिक ध्यान देती थी। जोना आजकल बहुत उदास और दुखी रहती थी। उसका स्वभाव भी कुछ चिड़चिड़ा-सा होगया था। वह अब किसी से मिलना जुलना या बातचीत करना भी पसन्द नहीं करती; तथापि एमिली उस के पास जाकर उसे सान्त्वना देने का प्रायः प्रयत्न करती।

जोना उसे देख कर गुस्से से कहती—"मैं तुम से नहीं मिलना चाहती; मैं तुम्हें देख नहीं सकती !"

एमिली बड़ी शान्ति से जवाब देती—"बहिन, मैं तुम्हें सान्त्वना देना चा ती हूँ, तुम्हारी सहायता करना चाहती हूँ।"

इस पर जोना ज़रा शान्त होकर कहती—"तुम एक प्रतिष्ठित महिला हो। तुम्हारा पति धनवान है, तुम्हारे सुन्दर बच्चे हैं! मुझ अभागिन के पास आकर तुम्हें क्या मिलेगा ?

"मैं तुम्हारा कष्ट हलका करना चाहती हूँ। तुम मेरे यहां आकर रहो। इस तरह एकान्त में रहने से तुम्हारा स्वास्थ्य बिल्कुल नष्ट होजायगा।"

जोना पुनः क्रोध में आकर कहती—"और मेरे पीछे अगर वे घर आजाएँ तो ! तुम मुझे उन से अलग करना चाहती हो ! नहीं, मैं यहीं रहूँगी। तुम चली जाओ। मैं तुम्हें नहीं चाहती। मैं तुम्हारा धन्यवाद नहीं कर सकती।"

मगर धीरे धीरे नौबत यहां तक पहुँच गई कि जोना के लिए उस ज़रा-से मकान का किराया देना भी कठिन होगया। तब लाचार होकर उसे एमिली का आतिथ्य स्वीकार करना ही पड़ा। एमिली ने उसे दूसरी मंजिल पर एक अच्छा-सा कमरा देदिया और उस के आराम की सब तरह से व्यवस्था कर दी। इस कमरे का बाकी मकान से कोई सम्बन्ध नहीं था।

महीनों गुज़र गए। जोना के बाल स्वयं ही पकने के करीब हो गए हैं। उसके चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई हैं। आंखें अन्दर

धँस गई हैं, और उन में कुछ पागलपन की-सी झलक दिखाई देने लगी है। एमिली के परिवार का कोई व्यक्ति उसके पास जाना पसन्द नहीं करता, परन्तु एमिली अब भी उसकी खोज-खबर लेती रहती है। एमिली को देखते ही जोना मुँह बना कर, इस तरह से जैसे उसने किसी षड्यन्त्र का पता लगा लिया हो, कहती है—"मुझे मालूम है कि तुम मुझे यहां क्यों ले आई हो! तुम्हारी इच्छा है कि वे लोग जब घर पर आएं तो मुझे वहां न पाकर पुनः वापिस लौट जाएं और इस तरह तुम जोलिफ़ी को छीन लेने का मुझ से बदला निकाल सको! हां, मैं पागल नहीं हूँ! मैं सब कुछ समझती हूँ!"

एमिली यह सब सुनती और उसकी आंखों में आंसू छलक आते। उसे विश्वास था, उसे ही क्या सम्पूर्ण हैवनपूल नगर का दृढ़ विश्वास था कि न्यूफाउण्डलैण्ड से लौटते हुए जोलिफ़ी का जहाज़ समुद्र में डूब गया है। मगर जोना के हृदय में अब भी यह आशा बाकी थी कि वे लौट भी तो सकते हैं। यह आशा क्या थी, टूटे हुए दिल को खण्ड खण्ड होकर बिखर जाने से बचाने के लिए आत्म-प्रवञ्चन का आवरण-मात्र ही था। मगर यह आत्म-प्रवञ्चन इतना प्रबल था कि अब भी रात को गली में किसी के आने की आवाज़ सुन कर जोना उठ खड़ी होती, और खिड़की में से नीचे की ओर झांक कर यह देखने का प्रयत्न करती कि कहीं वही तो नहीं आए!

जोलिफ़ी के जाने के छः वर्ष बाद दिसम्बर महीने की एक

अत्यधिक ठंडी और अन्धकारपूर्ण रात का ज़िक्र है। जोना सायंकाल के समय प्रतिदिन अपने पति और पुत्रों के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया करती थी। आज सायंकाल ही से, कोहरे से भरी ठण्डी हवा तेज़ी के साथ चल रही थी। अपने कमरे में रात को जब जोना घुटने टेक कर प्रार्थना करने के लिए बैठी, तो आज कुछ ऐसी तन्मय हुई कि समय बीतने का पता ही न चला। रात के ग्यारह बज गए। गली भर के सब लोग दरवाज़े बन्द करके सो गए थे, परन्तु जोना इस वक्त भी आंखों में आंसू भर कर प्रभु से प्रार्थना कर रही थी। अचानक उसे स्पष्ट सुनाई दिया कि गली में कोई गाड़ी आकर रुक गई है। इस के अगले ही क्षण उसे जोलिफ़ी, जार्ज और जिम के बातचीत करने की आवाज़ भी स्पष्ट रूप से सुनाई दी। जोना अपने पुत्रों की आवाज़ नहीं भूल सकती। ज़रूर वे लौट आए हैं। जोना का हृदय नाच उठा। वह उठ खड़ी हुई और एक हरिकेन लैंप उठा कर रात की खुली पोशाक में ही नंगे पैर नीचे उतर गई। गली में घना कोहरा छाया हुआ था। वह अपना लैम्प लिए हुए उस खाली गली में से उस कल्पित घोड़ागाड़ी को इस तरह ढूँढ़ने लगी, जिस तरह कोई व्यक्ति भरी हुई रेलगाड़ी में अपने किसी आत्मीय को उस समय खोजने का प्रयत्न करे, जिस समय रेल चलने के लिए सीटी देरही हो। जोना गली के एक छोर से दूसरे छोर तक घूम गई, मगर कोई व्यक्ति दिखाई न दिया। तब वह उस दूकान के सामने जाकर खड़ी होगई, जिस में वह

लगातार उन्नीस बरसों तक रही थी। यह दूकान अब एक और व्यक्ति ने किराए पर ले रक्खी थी। दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। दूकान का मालिक ऊपर की मंज़िल में सो रहा था। जोना ने द्वार खटखटाया। कोई जवाब नहीं मिला। एक वार, दो वार, तीन वार। आखिर कई मिनटों के बाद ऊपर की मंजिल वाली खिड़की खुली और उस में से झांक कर दूकान वाले ने नीचे की ओर देखा। उसे दिखाई दिया कि एक अर्धनग्न-सी मनुष्य-मूर्त्ति लालटेन हाथ में लेकर उस के दरवाज़े के सामने खड़ी है।

दूकानदार ने आवाज़ देकर पूछा—"कौन है ?"

उस मनुष्य-मूर्त्ति ने उत्तर में पूछा—"क्या आज यहां कोई आया है ?"

दूकानदार जोना की आवाज़ पहिचान गया। उसने बड़ी सहानुभूति से कहा—"ओह, श्रीमती जोलिफ़ी! आप हैं!—नहीं, यहां तो कोई नहीं आया!"

हृदय की परख

(१)

काफ़ी पुरानी बात है। अठारहवीं सदी अभी अपने मार्ग का मुश्किल से एक तिहाई भाग ही तै कर पाई थी। वह ज़माना आज के ज़माने से भिन्न था। तब ब्लैकमूर घाटी में हिण्टौक का महल सब से अधिक आलीशान भवन था। यह नोकीले शिखरों वाली विशाल इमारत तारोंभरी एक रात में सन्नाटा थाम कर खड़ी थी। उन दिनों बिजली का आविष्कार नहीं हुआ था, इस कारण इस इमारत की सभी खुली हुई खिड़कियों के अन्दर अन्धकार ही दिखाई देता था। ऊपर की मंज़िल के केवल एक कमरे में, जो

बड़े अच्छे ढंग से सजा हुआ था, मध्यम-सा प्रकाश दिखाई दे रहा था। इस कमरे में तेरह बरस की एक बालिका कुछ उदास-सी होकर चुपचाप बैठी थी। यह बालिका अपने शरीर की घड़न और पोशाक से किसी बड़े कुलीन परिवार की प्रतीत होती थी। अपनी कोहनी पर सिर थाम कर वह निर्निमेश दृष्टि से बाहर के अन्धकार में झांक रही थी। साथ के कमरे में से किन्हीं दो व्यक्तियों की बातचीत की आवाज़ इस कमरे में सुनाई पड़ रही थी। यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि बालिका का ध्यान उसी बातचीत को सुनने की तरफ़ है।

एक आवाज़ उसके पिता की थी। वह बड़े जोश में कह रहा था—"मैं तुझे अभी से कहे देता हूँ कि मैं यह सगाई किसी भी हालत में नहीं होने दूँगा। कभी भी नहीं। देखो तो, इतनी छोटी लड़की की सगाई करना चाहती है!"

लड़की को मालूम था कि यह बात मेरे ही सम्बन्ध में चल रही है। इसके बाद दूसरे व्यक्ति ने—लड़की आवाज़ से पहिचानती थी कि यह उसकी माता बोल रही है—कहा, "कुछ अक़्लमन्द बनो! अभी तो मैं सगाई ही करना चाहती हूँ, कुछ विवाह थोड़े ही करने लगी हूँ। वह पांच छः साल इन्तज़ार करने को तैयार है। फिर इतना अच्छा लड़का सारे इङ्गलैण्ड में खोजने पर भी नहीं मिलेगा!"

"नहीं! यह नामुमकिन है। उस की उम्र तीस साल से ऊपर है। उस के साथ तेरह साल की लड़की का ब्याह! यह विवाह नहीं

बदमाशी है !"

"तीस साल से ऊपर नहीं, वह तीस साल का ही है। तुम यह तो देखते नहीं कि वह कितना अच्छा लड़का है !"

"वह गरीब है !"

"मगर उसके पिता और बड़े भाई तो गरीब नहीं। सम्राट के दरबार में उनकी कितनी इज़्ज़त है। वह भी गरीब नहीं रहेगा। मुझे तो यकीन है कि एक दिन वह लार्ड बना दिया जाएगा।"

लड़की के पिता को गुस्सा आगया। उसने कहा—"मेरा ख्याल है, तुम ख़ुद उसे चाहती हो !"

"मेरा अपमान मत करो थामस ! क्या तुमने अपने दिल में खुद भी ऐमी के लिए एक वर नहीं खोज रक्खा ! वह तुम्हारे फाल्स-पार्क वाले दोस्त का लड़का !—"

इसके बाद ऊँची ऊँची आवाज़ बाकायदा तू-तू, मैं-मैं शुरू होगई। इस झगड़े का काफ़ी बड़ा भाग तो लड़की को समझ ही न आसका। परन्तु पीछे से उसने अपने पिता को यह कहते हुए सुना—"तुम्हें अपनी अमीरी का बड़ा घमण्ड है ! मैं तुम्हारे मकान पर हूँ, इसी लिए तुम मुझ पर हुक्म चलाना चाहती हो। मैं यहां तुम्हारी मेहरबानी प्राप्त करने नहीं आया था। सिर्फ़ अपनी लड़की ऐमी के आराम की खातिर ही यहां चला आया था। मैं भी कोई भिखमंगा नहीं हूँ। मेरा मकान तुम्हारे इस मकान से कुछ घटिया नहीं है। मेरा बाग़ भी तुम्हारे बाग़ से कुछ कम शान्दार नहीं। अब मैं यहां हर्गिज़ नहीं रहूँगा। अगर मुझे ऐमी

की भलाई का ख्याल न होता तो पिछली बार तुमसे लड़कर चले जाने के बाद मैं यहां हर्गिज़ न लौटता।"

इसके बाद और कोई बात नहीं हुई। थोड़ी ही देर में, साथ की सीढ़ियों पर से किसी व्यक्ति के उतरने की आवाज़ ऐमी के कानों में पड़ी। अपना सिर खिड़की की ओर बढ़ा कर वह बाहर की ओर देखने लगी। उसे दिखाई दिया कि लम्बा ओवर कोट पहने हुए एक मनुष्य-मूर्त्ति बरामदे से आंगन में उतरी है। यह मनुष्य-मूर्त्ति तेज़ चाल से चल कर शीघ्र ही अन्धकार में विलीन होगई। ऐमी पहचान गई कि यह उसके पिता हैं और अभी अभी इन्होंने उसकी माता को स्वयं घर से चले जाने की जो धमकी दी थी, उसे इसी वख़्त चरितार्थ करने के उद्देश्य से घुड़साल की तरफ़ चल जा रहे हैं।

ऐमी ने एक ठण्डी आह भरी और खिड़की बन्द करके अपने बिस्तरे पर लेट गई। अपने मां बाप की वह अकेली सन्तान थी। दोनों ही उसे एक दूसरे से बढ़ कर चाहते थे और इसी कारण ऐमी को लेकर इसी तरह से उन में प्रायः तकरार हो जाती थी। ऐमी के मां बाप दोनों की अपनी अपनी खूब विस्तृत जायदाद थीं,—यह तथ्य उन दोनों में लड़ाई झगड़ा हो जाने में और भी अधिक सहायक था। आज से पूर्व अनेक बार थामस अपनी पत्नी से नाराज़ होकर अपनी ज़मीन्दारी में लौट चुका था, परन्तु ऐमी के स्नेह से अगले दिन की प्रातःकाल ही वह खुदबखुद वापिस लौट आता था। मगर आज की लड़ाई कुछ अधिक

गम्भीर थी, इस कारण अगले दिन भी वह लौटा नहीं। ऐमी की मां ने अपनी लड़की को कहला भेजा कि उसके पिता ज़मीन्दारी के किसी आवश्यक कार्य से कुछ दिनों के लिए फ़ाल्सपार्क में चले गए हैं।

(२)

.फ़ाल्सपार्क थामस की ज़मींदारी का नाम था। यह स्थान उसकी पत्नी की हिएटौक वाली ज़मींदारी से करीब बीस मील दूर था। थामस का मकान निस्सन्देह काफ़ी आलीशान था, मगर उस की पत्नी के मकान के मुकाबले में वह कुछ भी नहीं था। यही हाल उसकी ज़मींदारी का भी था। थामस की पत्नी किसी बहुत बड़े ज़मींदार की इकलौती बेटी थी। थामस उसके साथ विवाह करके बड़ा सौभाग्यशाली समझा जाने लगा था। विवाह के बाद भी उसकी पत्नी अपने घर पर रहना ही अधिक पसन्द करती थी। अपने पति के घर वह बहुत कम जाती थी और प्रायः थामस को ही उसके यहाँ आना जाना पड़ता था। धीरे धीरे अपनी एक-मात्र सन्तान ऐमी को लेकर पति-पत्नी में घोर मतभेद पैदा हो गए थे और उस का परिणाम यह होता था कि उन में प्रायः लड़ाई झगड़ा होजाता था। इन झगड़ों की बदौलत उसे अपनी पत्नी के पास रहते हुए तकलीफ़ होती थी, उधर ऐमी से दूर रहना उसे और भी अधिक कष्टप्रद अनुभव होता था। झगड़ों की गर्मी से उत्तेजित होकर वह प्रायः फ़ाल्सपार्क में लौट आ[illegible]
वहाँ रहते हुए उस का जी सदैव ऐमी [illegible]

इस बेचैनी से बचने का उसे कोई उपाय नहीं सूझता था और अन्त में तंग आकर वह शराब का आश्रय लेता था। धीरे धीरे उस की शराब पीने की आदत बढ़ती गई और आज अपनी अढ़तालीस साल की उम्र में वह एक साथ तीन बोतलें चढ़ा जाने वाला पक्का शराबी बन गया था। उसकी पत्नी बहुत ही कुलीन घराने की थी और बीसियों नागरिक उसके मित्र थे। अपने पति की यह हालत देख कर, अब उसका परिचय अपने मित्रों से करवाने में उसे झिझक अनुभव होने लगी थी।

थामस जब .फाल्स पार्क में पहुँचा तो ३, ४ नौकरों ने उस का स्वागत किया। उसका मकान विविध प्रकार के अच्छे बुरे सामान से बेतरह भरा हुआ था। सिर्फ़ चार कमरे ही साफ़ हालत में थे और ये कमरे ही उसके रहने के काम में आते थे। थामस का विश्वासपात्र अनुचर टपकाम्बे भी अगले दिन की सांझ तक हिएटौक से वहीं पहुँच गया। थामस को इस बात से बड़ा आराम मिला। परन्तु दो, तीन दिनों के बाद ही उसे यहाँ चले आने में एक भारी भूल अनुभव होने लगी। उसने सोचा कि मेरे पीछे तो ऐमी की माता कहसुन कर उसे रेनाल्ड (जिस से वह ऐमी का विवाह करना चाहती थी) से विवाह करने को तैयार कर लेगी। इस विचार ने उसे बहुत उद्विग्न कर दिया। यहां तक [illegible] वह दिन भी बड़ा अभाग्यपूर्ण प्रतीत होने लगा जिस दिन [illegible]ली कन्या से पाणिग्रहण करके एक इतने बड़े [illegible] जीवन-संगी बना लिया था।

उस दिन के झगड़े में थामस की पत्नी ने यह बिल्कुल ठीक कहा था कि दिल ही दिल में थामस ने भी ऐमी के लिए एक वर का चुनाव कर रक्खा है। यह लड़का उस के एक स्वर्गीय घनिष्ट मित्र का पुत्र है। उसका घर .फालस पार्क से केवल दो मील की दूरी पर ही है। थामस को यह लड़का बड़ा सुन्दर और होनहार प्रतीत होता था। उसकी जायदाद भी बहुत काफ़ी थी। वह उम्र में ऐमी से सिर्फ़ दो वर्ष ही बड़ा था। थामस की राय में यही लड़का ऐमी के लिए उचित व्यक्ति था। परन्तु अभी तो यह सब बहुत दूर की बात थी। थामस इस वक़्त तक अपनी लड़की की सगाई की बात भी नहीं उठाना चाहता था। तथापि अब अपनी कन्या के भविष्य जीवन की रंगभूमि में रेनाल्ड नाम के एक त्रिश-वर्षीय परिपक्व युवक को उतरता हुआ देख कर उसके दिल में यह इच्छा उत्पन्न होगई कि वह ऐमी को अपने यहां ही बुलाले और उसके साथ इस अपनी पसन्द के बालक को मिलने जुलने का पूरा अवसर देकर उन दोनों में घनिष्टता उत्पन्न करने का प्रयत्न करे। उन दिनों तेरह बरस की लड़की का विवाह कर देना बिल्कुल साधारण बात थी। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि तेरह साल की लड़की के हृदय में किसी लड़के के प्रति दाम्पत्य स्नेह के भाव उठना उन दिनों भी इतना ही कठिन था, जितना कठिन यह आज है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि ऐमी और थामस की पसन्द के इस लड़के में परस्पर मैत्री के भाव थे।

मगर अब ऐमी को यहां बुलाया किस तरह जाय ? एक बार

पहले भी, उसके इस तरह नाराज़ होकर चले आने पर उस की पत्नी उसे मनाने के उद्देश्य से ऐमी सहित फ़ाल्सपार्क में आई थी। यदि अब की भी वह उसी तरह यहां आजाय तो कितना अच्छा हो! वह किसी न किसी बहाने से ऐमी को अपने पास रोक ही लेगा। मगर नहीं। यह असम्भव है। रेनाल्ड एक सप्ताह तक अमेरिका चले जाने वाला है, उसकी पत्नी इसी लिए तो ऐमी की सगाई झटपट कर डालना चाहती है। इन दिनों वह यहां नहीं आएगी। तब? थामस ने सोचा—तब मुझे खुद ही वहां जाकर ऐमी को, जिस किसी भी तरह सम्भव हो, अपने साथ ले आना चाहिए।

थामस उसी समय हिएटौक के लिए रवाना होगया। इस काम में देरी करना उसे अब सह्य नहीं। दो ही दिन पहले जिस उदासी से वह .फाल्सपार्क की ओर गया था, अब उस उदासी का नाम भी नहीं था। तब उसके दिल में आवेश, क्रोध और दुख था, अब उसके हृदय में एक निश्चय, उत्साह और आतुरता है।

हिएटौक के महल के सामने मीलभर लम्बा चौड़ा एक सुन्दर मैदान था। इस मैदान में जाते हुए, दूर ही से महल की खिड़कियां दिखाई देने लगती थीं। ऐमी की बैठक दूसरी मंज़िल पर, सामने की तरफ़ थी। जब कभी थामस .फाल्सपार्क से हिएटौक की तरफ़ आता था, तो प्रायः ऐमी दूर ही से उसे देख लेती थी और खिड़की में से अपना सुन्दर मुँह बाहर निकाल

कर मुस्कराते हुए रूमाल हिलाया करती थी। थामस को ऐमी का यह स्वागत बहुत प्रिय था। आज भी घोड़ा दौड़ाते हुए दूर ही से उसकी निगाह ऐमी की खिड़की की तरफ़ बंधी हुई थी। मगर आज अन्त तक उसे वहां पूर्ण सन्नाटे को छोड़ कर और कुछ दिखाई न दिया। थामस का हृदय कुछ खिन्न-सा होगया।

वह ज्योंही घोड़े से उतरा त्योंही, उसने एक नौकर से, जो उसके घोड़े की लगाम थामने के लिए आगे बढ़ा था, पूछा—"मालकिन कहां हैं ?"

इस वक़्त तक अरदली भी वहां आगया था। उसने कहा—"हुज़ूर, वह लण्डन गई हैं।"

"और कुमारी ऐमी ?"

"वह भी साथ ही गई हैं जनाब। मालकिन आप के नाम पर एक चिट्ठी दे गई हैं।"

थामस ने वह पत्र लेकर पढ़ा। उस में लिखा था कि वह अपने किसी काम से लण्डन जारही थी, ज़रा परिवर्तन होजाने की इच्छा से वह ऐमी को भी साथ लेती गई है। कोई चिन्ता न करें। इस के बाद ऐमी ने खुद भी कुछ लाइनें लिखी थीं। इन लाइनों से उस की सैर की खुशी का अन्दाज़ा आसानी से लग सकता था। चिट्ठी में इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं लिखा था कि वे कब तक वापिस लौटेंगे। नौकरों को भी इस सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं था। थामस ने यह पूछ कर कि

अपनी फिटन में वे कितना कितना और क्या क्या सामान ले गई हैं, यह अन्दाज़ा कर लिया कि वे लोग दो, तीन सप्ताह से पहले वापिस नहीं लौटेंगे।

थामस को हिण्टौक का यह महल भी फालसपार्क की तरह से नीरस जान पड़ा। उसका शिकार का शौक मुद्दत से समाप्त हो चुका था। यहां अब उस का जी ज़रा भी न लगा। अब दिन भर वह ऐमी की कापियां टटोलता रहता था। ऐमी की उस चिट्ठी को तो उसने बीसियों बार पढ़ा। थोड़े ही दिनों में उसे अपनी पत्नी का एक और पत्र मिला। यह पत्र उसने लण्डन से भेजा था। इस में लिखा था कि वह एक सप्ताह तक घर लौट आएगी। उसे यह उमीद नहीं थी थामस इतना शीघ्र हिण्टौक लौट आएँगे, अन्यथा वह उन का इन्तजार किए बिना लण्डन न जाती।

थामस को याद आया कि रेनाल्ड का घर भी लण्डन के राह में ही पड़ता है। उसे चिन्ता हुई कि उस की पत्नी की इस यात्रा का सम्बन्ध कहीं ऐमी की सगाई के साथ तो नहीं है। थामस ने ज्यों ज्यों इस बात पर विचार किया, उसे अपनी यह चिन्ता अधिक अधिक साधार प्रतीत हुई।

क्रमशः वह बेचैन हो उठा। इस बेचैनी से अपने को मुक्त करने का उसे इस से बढ़ कर अच्छा और कोई उपाय नहीं सूझा कि वह अपने दोस्तों को अपने यहां दावत दे और शराब, भोजन आदि द्वारा इस चिन्ता को बहका डाले। शीघ्र ही उस ने

अपने दोस्तों को बुला भेजा। ये सब लोग उस की अपेक्षा छोटी स्थिति के थे। इन में से अधिकांश आसपास के ज़मीन्दार और शिकारी थे, दो एक गांवों के डाक्टर और इस किस्म के कुछ अन्य लोग भी थे। उस की पत्नी की मौजूदगी में इन में से एक भी व्यक्ति यहां आने का साहस नहीं कर सकता था। वह इन छोटे लोगों को अपने घर में कभी बरदाश्त न कर सकती। थामस को खुद भी यह बात ख्याल में आई और वह गुनगुनाया — "जब बिल्ली बाहर गई हो, तो चूहों को नाचने का मौका मिलता है!"

थामस के सब दोस्त आगए, परन्तु उस का सब से अधिक अभिन्न मित्र बैक्सबी नहीं आया। वह पिछले दिनों लण्डन गया हुआ था और वहां से आज थोड़ी देर पहले ही लौटा था। उस के बिना थामस की कोई पार्टी पूर्ण नहीं समझी जाती थी। यह मित्र-मण्डली उस की प्रतीक्षा करने लगी। थामस उस से मिलने के लिए विशेष उत्सुक था, क्योंकि वह लण्डन से लौट रहा था और उस की लाड़ली एमी भी लण्डन में ही थी। यद्यपि थामस को इस बात की ज़रा भी उमीद नहीं थी कि बैक्सबी एमी के सम्बन्ध में कुछ भी जानता होगा।

आखिरकार बैक्सबी की गाड़ी भी वहाँ आपहुँची और बड़ी शीघ्रता से वह दालान में आ उपस्थित हुआ। अन्दर पहुँचते ही उसने कहा—"मैं हाल ही में लण्डन से वापस आया था, इसी कारण मुझे यहां पहुँचने में देर होगई, आशा है कि इस देरी के

लिए मुझे आप लोग क्षमा करेंगे।" इसके बाद उसने थामस को लक्ष्य करके कहा—"आखिर तुमने अपनी वह छोटी-सी बिटिया उस मक्कार रेनाल्ड के सुपुर्द कर ही दी न ? हा ! हा ! हा !"

थामस भोजन की उस बड़ी टेबल के दूसरी तरफ़ बैठा था। वैकसवी की बात सुन कर वह चौंक उठा। उसके मुंह से अनायास ही निकल गया—"क्या कहा ?"

"हैं ! क्या तुम्हें यह बात मालूम नहीं, जो इस तरह पूछते हो ? सारा लण्डन तो इस बात को जानता है कि रेनाल्ड और ऐमी का परसों विवाह होगया है और अब पांच छः वर्षों तक वे एक दूसरे से नहीं मिलेंगे। तुम अपनी लड़की के विवाह के सम्बन्ध में क्या सचमुच कुछ नहीं जानते ?"

इसी क्षण किसी चीज़ के 'धम्म' से गिरने की ऊँची आवाज़ हुई। लोगों ने विस्मय के साथ देखा, थामस अपनी कुर्सी सहित उलट कर गिर पड़ा है और बेहोश होगया है। जो लोग आस-पास खड़े थे, उन्होंने अगले ही क्षण उसे उठा लिया। सब लोग उसी तरफ़ झुक गए। घबराहट-सी फैल गई। लोगों ने देखा, थामस बेहोश है, उसका श्वास ज़ोर ज़ोर से चल रहा है, नाड़ियां उभर आई हैं और माथे पर पसीने के बिन्दु दिखाई देने लगे हैं।"

कई लोग एक साथ बोल उठे—"ओह, इसे क्या होगया !"

एक डाक्टर ने बड़ी संजीदगी के साथ जवाब दिया—"यह वातिक-मूर्छा का रोग है !"

इस डाक्टर ने थामस की चिकित्सा करनी शुरू की। थामस

का सिर ऊंचा कर उसके कपड़े ढीले कर दिए गए और नौकरों से उठवा कर उसे ऊपर के कमरे में ले जाया गया। वहां उसे एक बिस्तरे पर लिटा कर डाक्टर ने उसकी बाहु की एक नस से कुछ खून निकाल दिया। इस पर भी बहुत देर तक वह उसी तरह संज्ञाहीन दशा में चुपचाप पड़ा रहा, जैसे उसने तीव्र मदिरा पी रक्खी हो।

दावत उजड़ गई। सब लोग अपने अपने घरों को चले गए। केवल वैक्सबी और उसके साथ दो तीन आदमी ही वहां मौजूद रहे। वैक्सबी अपने दोस्तों से कह रहा था—"या खुदा! मुझे क्या पता था कि मेम साहिबा बिटिया रानी को ज़बरदस्ती ही ब्याहने लेगई हैं। मैंने तो उल्टे यह समझा था कि आज की दावत उसी विवाह की खुशी में ही दी जा रही है!"

जब थामस की मूर्छा टूटी, तो वह बड़बड़ाने लगा—"यह अपहरण है! यह गम्भीरतम अपराध है! उसे फांसी पर लटकाया जा सकता है! वैक्सबी कहां है? मैं अब बिल्कुल अच्छा हूं। वैक्सबी, इस सम्बन्ध में तुमने और क्या क्या सुना है?"

वैक्सबी इस सम्बन्ध का कोई और समाचार सुना कर अब थामस को और अधिक उत्तेजित नहीं करना चाहता था, इस लिए बहुत देर तक तो वह टालमटोल ही करता रहा। परन्तु जब सब बातें सुनने का आग्रह कर के थामस उठ कर ही बैठ गया तो धीरे धीरे वैक्सबी सब कुछ कह गया। उसकी बातों का सारांश इतना ही था कि विवाह के समय ऐमी की माता भी चर्च में

उपस्थित थी, और ऐमी भी उस समय उदास प्रतीत नहीं होती थी। सारी कार्रवाई इतने स्वाभाविक रूप से की गई कि उस से यह सन्देह कदापि नहीं हो सकता था कि यह विवाह लड़की के पिता से छिपा कर किया जा रहा है।"

थामस ने कहा—"मुझे ज़रा भी मालूम नहीं था कि अन्दर ही अन्दर इस तरह के मन्सूबे बांधे जा रहे हैं। एक तेरह साल की बच्ची का विवाह! कितना अनर्थ है! इसी बात ने मुझे इतना उत्तेजित कर दिया था। हां, क्या तुम यह बता सकते हो कि रेनाल्ड उन लोगों के साथ ही लण्डन गया था या अलग?"

"मुझे नहीं मालूम। मुझे तो इतना ही मालूम है कि तुम्हारी पत्नी और कुमारी ऐमी अपने एक नौकर के साथ बाज़ार में से जाते जाते सराफ़े की एक बड़ी दूकान में चले गए। वहां रेनाल्ड पहले ही से मौजूद था। उस जगह दूकानदार के सामने तुम्हारी लड़की ने रेनाल्ड से कहा—'मैं तुम्हें चाहती हूँ, क्या तुम मुझ से विवाह करोगे?'—मुझे नहीं मालूम यह सच है या झूठ! मैंने तो यह सब इसी तरह सुना है—"

"मुमकिन है कि ऐमी ने यह बात कह भी दी हो। मगर यदि उस ने यह बात कही भी है तो यह उस की माता ने ही उस से ज़बर-दस्ती कहलवाई होगी। अभी उसके दिल में 'प्यार' और 'विवाह' की बातें उठ ही कहां से सकती हैं! ख़ैर, तुम कहे चलो।"

"मुमकिन है, यही बात हो। अच्छा, तो वे आपस में सहमत होकर उसी समय चर्च में चले गए। विवाह की अँगूठी उस

दूकान से ही खरीद ली गई थी। बस, आध घण्टे के अन्दर ही दोनों का विवाह होगया।"

(३)

उपर्युक्त घटना के दो दिन बाद ही थामस को अपनी पत्नी का एक पत्र मिला। इस में लिखा था—

प्रियतम,

आखिरकार ऐमी का विवाह हो ही गया है। तुम इस समाचार से नाराज़ तो होगे, परन्तु मैं उमीद करती हूँ, अनुरोध करती हूँ, प्रार्थना करती हूँ कि ऐमी के इस विवाह से चाहे तुम मुझ पर कितने ही क्रुद्ध क्यों न होओ, मगर प्यारी ऐमी को आशीर्वाद अवश्य देना। जो कुछ हो चुका है, वह तो अब बदला ही नहीं जा सकता। मेरा अपना इरादा भी इस सम्बन्ध में इतनी जल्दी करने का नहीं था। मगर सही या ग़लत मैं तुम से पूछे बिना ही रेनाल्ड को इस विवाह की स्वीकृति दे चुकी थी। अब उस ओर से मुझ पर यह दबाव डाला जा रहा था कि यह विवाह बहुत जल्दी हो जाना चाहिए। मुझे यह भी मालूम हुआ था कि राजदरबार में रेनाल्ड की कदर बहुत अधिक बढ़ गई है, सम्राट की उस पर बड़ी कृपा-दृष्टि है और यह असम्भव नहीं कि शीघ्र ही वह 'लार्ड' बना दिया जाय। उस के स्वभाव आदि पर तो मैं पहले ही मुग्ध थी। अब उस की यह सम्भावित पद-वृद्धि देख कर मैंने देर करना उचित नहीं समझा। तुम इस बात से निश्चिन्त रहो कि इस विवाह से प्यारी ऐमी में किसी तरह का अन्तर आजायगा। वह पहले ही की तरह अभी पांच, छः सालों तक और

हमारे ही पास रहेगी। इस सम्बन्ध में तुम मुझे जो निर्देश दोगे, उन्हें मानने को मैं सदर्प तयार हूं। बस, मेरी तुम से यह सानुरोध प्रार्थना है कि अब अपने जामाता को अपना पुत्र समझ कर उस से प्यार करना। क्या मैं उमीद करूं कि तुम मेरे अपराध को क्षमा कर दोगे।

तुम्हारी ही—

थामस ने निश्चय कर लिया कि वह अब अपनी पत्नी से इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहेगा। वास्तव में उस का स्वास्थ्य अब इतना गिर गया था कि यदि इस मामले को वह बहुत अधिक महसूस करता रहता, तो उसके लिए ज़िन्दा रहना भी कठिन होजाता। इस लिए उसने इरादा किया कि अब वह इस ओर से निरपेक्ष हो जाने का प्रयत्न करेगा। उस दिन बेहोश होजाने की बात सोच कर भी उसे शर्म अनुभव होती थी। वह सोचता था कि मेरी पत्नी यदि यह बात सुन लेगी तो वह मुझे बड़े नरम हृदय का समझ लेगी। उन दिनों के पुरुष अपने लिए इतने नरम हृदय का होना सम्मान की बात नहीं समझते थे! मगर उसकी पत्नी को लण्डन ही में यह समाचार मिल गया और उसे यह भी मालूम हुआ कि थामस अभी तक पूरी तरह स्वस्थ नहीं होपाया। इस लिए उसने अपने पति को पत्र लिखा कि वह शीघ्र ही उस की सुश्रुशा करने के लिए हिण्टौक लौट रही है। इधर अपनी पत्नी का यह पत्र मिलते ही थामस .फाल्सपार्क के लिए रवाना होगया।

फाल्सपार्क में पहुँच कर भी थामस का स्वास्थ्य सुधर न सका। न तो वह अब शिकार करने लायक रहा था और न घुड़-सवारी के योग्य ही। आसपास के लोगों को उस की बीमारी का समाचार मिला और पति-पत्नी के झगड़े से भी वे अपरिचित न रहे। इस कारण उस का हालचाल पूछने के लिए आने वाले लोगों की भी कमी नहीं थी और इसे थामस बिल्कुल नापसन्द करता था।

थामस के दिल में अपनी पुत्री के लिए क्रोध के भाव ज़रा भी नहीं थे। उसे विश्वास था कि जो कुछ होगया है, उसमें ऐमी का रत्ती भर भी कसूर नहीं। यह जानने के लिए वह बहुत अधिक उत्सुक था कि ऐमी का इन दिनों क्या हाल है। इस काम के लिए उसने अपने विश्वस्त नौकर टपकाम्बे को हिएटोक में भेजा कि वह वहां जाकर खुफ़ियातौर से, ऐमी का समाचार प्राप्त करे। टपकाम्बे शाम के समय हिएटोक में पहुँचा और जाकर, चुपके से नौकरों के निवासस्थान में ही कहीं छिप रहा। वहां, कुछ देर तक नौकरों की बातचीत सुनते रहने से ही उसे ऐमी के सम्बन्ध में सब समाचार ज्ञात होगए। इस परिवार का जो नौकर लण्डनयात्रा में साथ गया था, उसने वहां के सभी समाचार अन्य सब नौकरों को अच्छी तरह सुना दिए थे। इस कारण टपकाम्बे को सब बातें जान लेने में कोई विशेष दिक्कत नहीं हुई। परन्तु इन सब में काम लायक समाचार इतना ही था कि रेनाल्ड विवाह के बाद यूरोप की सैर के लिए चला गया है और ऐमी को पढ़ने

के लिए स्कूल में भेज दिया गया है। वह अब हिण्टौक में नहीं रहती। ऐमी जब वहां लौट कर आई थी तो बड़ी दुखी और भय-भीत प्रतीत होती थी। सम्भवत: विवाह-संस्कार की क्रियाओं ने उसके दिल में भय का संचार कर दिया था। उसे डर होगया था कि यह नया आदमी उस की स्वतन्त्रता का अपहरण कर लेगा। परन्तु घर लौटने के दो एक दिन बाद ही वह पहले की तरह से प्रसन्न दिखाई देने लगी थी।

इस के बाद थामस को अपनी पत्नी का एक पत्र मिला। इस पत्र में पुन: बहुत-सी सफ़ाइयां और क्षमा प्रार्थनाएं पेश की गई थीं। यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर के अब वह अपने पति से सुलह कर लेना चाहती है। परन्तु उसका उजड्ड प्रकृति और सीधे स्वाभव का पति उस से अब भी बहुत अधिक परांग्मुख था। अन्त में, यह जान कर कि उसके पति का स्वास्थ्य अब भी बहुत खराब है, वह स्वयं .फाल्सपार्क के लिए रवाना होगई।

उस रात की लड़ाई के बाद से आज पहली वार वह अपने पति से मिली। थामस के स्वास्थ्य की दुर्दशा देख कर उसे बहुत अधिक दुख हुआ। उस के चेहरे पर अब ज़रा भी रौनक नहीं थी, उसका चेहरा पत्थर का घड़ा हुआ-सा प्रतीत होता था। वह अब दिनरात एक ही कमरे में पड़ा रहता था। उस कमरे में एक तरफ़ शराब की बोतलों का एक ढेर लगा हुआ था। कमरे भर में शराब की तेज़ बू भरी हुई थी और मेज़ पर भी शराब की दो तीन बोतलें

खुली पड़ी थीं। थामस का डाक्टर उसे शराब पीने से बार बार मना करता था, परन्तु वह इस ओर ध्यान ही न देता था। श्रीमती थामस ने यह निश्चय कर लिया कि अब वह अपने पति के रहनसहन पर व्यक्तिगत निरीक्षण रक्खेगी।

उसने अपने पति से क्षमा मांगी, बीसों तरह की बातें कीं, यहां तक कि गिड़गिड़ाई भी। परन्तु वह इस पर भी उससे खुल कर न मिला। परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही दिनों के बाद वह ह्रिएटोक को लौट गई। इसके बाद भी वह बीच बीच में थामस के पास आती जाती रही, परन्तु पति-पत्नी में पहले का-सा सौहार्द स्थापित न हो सका।

इसी तरह चार साल गुज़र गए। इसके बाद एक दिन वह अपने पति से मिलने के लिए .फाल्सपार्क पहुँची। आज वह कुछ असाधारण प्रसन्न प्रतीत होती थी। थामस से मिलते ही उसने कहा—"एमी ने अपने स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर ली है। वह पास होगई है। तुम्हें घर पर न देख कर वह बहुत दुखी हुई और मेरे द्वारा उसने तुम्हारे लिए यह सन्देश भेजा है—'पिता! अपनी प्यारी एमी को मिलने के लिए जल्दी यहां आओ।' "

थामस सजग होकर बैठ गया। उसने उत्सुकता से पूछा—"आह, क्या वह सचमुच बड़ी उदास है?"

श्रीमती थामस ने कोई जवाब नहीं दिया।

थामस ने खुद ही कहना शुरू किया—"यह सब उसी अभिशप्त विवाह की बदौलत हुआ है!"

श्रीमती थामस ने अपने पति के अभियोग का जवाब न देकर बड़ी भद्रता से कहा—"वह बाहर गाड़ी में ही बैठी है।"

"कौन—पेमी !" थामस चौंक कर खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर आज बहुत दिनों के बाद मुस्कयान दिखाई दी।

"हां !"

"तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया !"—थामस बाहर की तरफ़ भाग चला। वहां फ़िटन में उसकी पुत्री भयभीत-सी होकर बैठी थी। उसे विश्वास था कि पिता उस पर भी नाराज़ हैं।

हां, पेमी अब स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर चुकी है। वह अब सत्रह बरस की है। देखने में वह पूर्ण नवयुवती प्रतीत होती है। उसका सुन्दर रूप अब खूब निखर आया है। अपने विवाह की बात अब वह करीब करीब भूल चुकी है। आज से चार साल पहले मार्च महीने के एक सर्द दिन में, लण्डन के उस शान्दार चर्च में उसके साथ जो कुछ बीता था, उस की स्मृति आज पेमी को किसी पुराने स्वप्न के समान ही बाकी है। वह लण्डन के चर्च का गलीचे से मढ़ा हुआ मार्ग, उस की शान्दार बैन्चें, बाईं ओर का वह सुन्दर बाजा,—इन सब की याद उसके हृदय में बहुत धुँधली होचुकी है। मगर उस आदमी की याद उसके दिल में अब भी कुछ अधिक स्पष्टता के साथ बाकी है, जिसके पके हुए चेहरे और उस पर ताज़ी हजामत के बाद दिखाई देने वाले नीलिमा-व्यंजित हल्के वर्ण ने उसे बहुत अधिक भयभीत बना दिया था। तथापि तब उस आदमी के साथ पेमी ने बड़ी भद्रता का व्यवहार किया था। उस घटना

के बाद, इन चार बरसों में पेमी ने उसे फिर कभी नहीं देखा। और क्रमशः अब तक वह उसकी ओर से इतना तटस्थ हो चुकी है कि आज यदि कोई उसे उस की मृत्यु का समाचार भी देता तो वह इस में भी कोई विशेष दिलचस्पी न लेती।

थामस मुस्कराता हुआ पेमी के पास पहुँचा। पेमी फिटन से नीचे उतर आई। थामस ने उसे छाती से लगा कर ज़ोर से हँसते हुए कहा—"तेरे पति की तुझे चिट्ठियां आती रहती हैं या नहीं?" थामस का हँसना अब भी जारी था। यह स्पष्ट था कि इस सवाल की मंशा कोई उत्तर प्राप्त करने की नहीं है।

पेमी दुखित-सी हो गई और उसकी माता ने थामस की ओर इस सम्बन्ध में कुछ न कहने की प्रार्थना-सी करती हुई दृष्टि से देखा। तीनों जने अन्दर पहुँचे। श्रीमती थामस ने देखा कि उस के पति का सम्पूर्ण वार्तालाप, पेमी पर रेनाल्ड के खिलाफ़ असर डालने वाला है, इस लिए किसी बहाने से उसने शीघ्र ही पेमी को कमरे से बाहर भेज दिया।

अब थामस और भी अधिक खुल कर कहने लगा—"तुमने देखा नहीं, रेनाल्ड का नाम सुनकर वह कितना भयभीत हो गई थी। हां, तुमने यह देखना ही क्यों था। तुमने मेरी बच्ची को सदा के लिए बदकिस्मत बना दिया। वह कोई विवाह थोड़े ही था। मैं अगर पेमी की हालत में होता तो साफ़ साफ़ कह देता कि इस विवाह को मैं नहीं मानता। मेरी तो दृढ़ सम्मति है कि वह अब भी चाहे जिस व्यक्ति को अपने लिए पसन्द

कर सकती है। मैं उसे कुमारी के समान ही पवित्र मानता हूँ। ओह, जिस लड़के से मैं उसका विवाह करना चाहता था, वह कितना अच्छा है! यदि मेरे मन के मुताबिक ऐमी का विवाह किया जाता तो वह कितना खुश होती!"

"मैं यह बात नहीं मानती।"

"तुमने मेरी पसन्द के लड़के को कभी देखा तो है नहीं। पहले उसे देख लो, फिर अपनी राय देना।"

थामस ने यह बात इतने ज़ोर से कही थी कि उस की पत्नी को यह चिन्ता हो गई कि ऐमी ने कहीं यह सब सुन तो नहीं लिया। उसने कहा—"हुश, इतने ज़ोर से मत बोलो!" और इस के बाद यह जानने के लिए उस ने दरवाज़े का परदा उठा कर साथ के कमरे में झांका कि कहीं ऐमी साथ वाले कमरे में तो नहीं बैठी। श्रीमती थामस ने बड़े भय के साथ देखा कि ऐमी साथ के कमरे में बैठी हुई कोई दिवास्वप्न ले रही है। यह साफ़ था कि उसने अपने मां बाप की सारी बातचीत सुन ली है और अब वह उसे पचाने का प्रयत्न कर रही है।

श्रीमती थामस समझ गईं कि उस का पति जिस ढंग की बातें करता है, उस वायुमण्डल में ऐमी जैसी ग्राही-आयु* वाली लड़की को रखना खतरे से खाली नहीं है। इस लिए कोई बहाना कर के वह उसी दिन फ़ाल्सपार्क से हिएटौक की तरफ़ रवाना होगई।

---

* Susceptible age.

जाते हुए वह अपने पति से रिवाजी तौर से कह गई कि अब उसे भी शीघ्र ही हिण्टौक में आकर रहना चाहिए ।

रास्ते भर ऐमी चुपचाप और आत्म-चिन्ता-मग्न-सी रही। उस की माता समझ गई कि थामस की बातों ने लड़की के दिल को एक तरह से जगा देने का असर किया है।

पिछले वर्षों में थामस प्रतिज्ञा करके भी हिण्टौक में बहुत कम आता जाता रहा था। परन्तु इस बार, इस तथ्य के प्रभाव से कि ऐमी भी वहीं पर है, वह बहुत शीघ्र ही वहां के लिए रवाना हो गया। एक शान्दार फिटन पर सवार होकर वह हिण्टौक पहुँचा। उसके पीछे पीछे उसका विश्वस्त अनुचर टपकाम्बे एक घोड़े पर सवार होकर चला आरहा था। ये लोग दोपहर के बारह बजे हिण्टौक पहुँचे। फिटन में से थामस के साथ करीब उन्नीस या बीस बरस का एक सुकुमार और सुन्दर नवयुवक भी नीचे उतरा। उसने बड़ी शान्दार पोशाक पहिनी हुई थी। गाड़ी से उतर कर अपनी पत्नी को इस व्यक्ति का परिचय देते हुए थामस ने कहा—"यह मेरा प्रिय फिलिपसन है।"

श्रीमती थामस बहुत चिन्तित होकर वहीं खड़ी रह गई। इसी वक़्त थामस को साथ लेकर फिलिपसन महल के अन्दर प्रविष्ट होगया। पहले ही कमरे में उसे ऐमी खड़ी हुई मिली। थामस ने उसका आलिंगन करते हुए हँस कर धीरे से कहा—"अपनी माता के सामने इस तरह दिखाना, जैसे तुम इस लड़के पर मुग्ध होगई हो। उसे पता तो लगे कि उसकी अपेक्षा मेरा चुनाव अधिक अच्छा था।"

थामस ने यह बात बिल्कुल निष्कलंक भाव से कही थी। और जब भोजन के समय ऐमी चुपचाप कनखियों से बार बार इस सुन्दर युवक की ओर देख रही थी, तब भी उस का वह नासमझ और भोला बाप यही समझता रहा कि यह काम केवल उसकी आज्ञापूर्त्तिके लिए ही किया जा रहा है !

भोजन के बाद ज़रा-सा एकान्त मिलते ही थामस ने अपनी पत्नी को बुला कर कहा—"अब तुम्हें अपनी ग़लती मालूम होगई न ? देख लिया न, यह लड़का ऐमी के कितना उपयुक्त रहता।"

श्रीमती थामस इस समय बहुत अधिक गम्भीर बनी हुई थीं और उन्हें बड़ा भय प्रतीत हो रहा था। उन्होंने बड़ी संजीदगी से कहा—"तुम्हें इस लड़के को यहां हर्गिज़ नहीं लाना चाहिए था। तुम इतने नासमझ कैसे हो गए ! प्यारे, ईश्वर के नाम पर यह तो सोचो कि जो कुछ हो चुका है, उसे अब बदला तो जा ही नहीं सकता। फिर ऐमी के हृदय को स्वयं ही अपने पति की तरफ़ से परांग्मुख करने का परिणाम इस के अतिरिक्त और क्या होगा कि उस का सारा जीवन दुखमय बन जाए। जब से वह .फाल्सपार्क से लौट कर आई है, तभी से मैं उस में एक भारी परिवर्तन देख रही हूं। अब तुम खुद फिलिपसन को ही यहां ले आए ! तुम करना क्या चाहते हो ? हे ईश्वर ! इस सब का परिणाम क्या होगा !"

"तब यह मंजूर करो कि मेरा चुनाव ही अधिक अच्छा था। मैं सिर्फ़ यही सिद्ध करने के लिए इस लड़के को यहां लाया था।"

"अच्छा, मैंने मान लिया कि तुम्हारा चुनाव ही अधिक श्रेष्ठ था। अब मेहरबानी कर के इसे इसी समय वापिस ले जाओ। मुझे तो डर है कि ऐमी इस वक्त तक भी इस मर्ज़ का शिकार बन चुकी है।"

"बिल्कुल बेवकूफ़ी की बात है! यह भी कभी हो सकता है। मैं तो सिर्फ़ तुझे खिजाने के लिए ही उसे यहां लाया था।"

कोई सन्तान अपने हृदय के अन्तर्भावों के सम्बन्ध में अपने पिता को तो भुलावा दे सकती है, मगर अपनी माता या बड़ी बहिन से हृदय के गहरे भावों को छिपा लेना प्रायः असम्भव होता है। श्रीमती थामस से अब यह छिपा नहीं था कि ऐमी उस लड़के की ओर पूरी तरह आकृष्ट हो गई है।

थामस शाम से पहले ही फिलिपसन के साथ घर लौट गया। उस का उद्देश्य सचमुच अपनी पत्नी को हराना था। इन दोनों के पीछे पीछे थामस का विश्वस्त अनुचर टपकाम्बे चल रहा था। वह इस सारे मामले को जानता था और उस का दिल भी फिलिपसन के पक्ष में ही था। अपनी मालकिन से तो इस मामले में वह बहुत ही नाराज़ था।

इस दिन के बाद से थामस का अपनी पत्नी से पुनः काफ़ी अच्छा सम्बन्ध होगया। यद्यपि अब भी अपना अधिक समय वह फालसपार्क में ही गुजारता था। ऐमी कभी अपनी मां के पास रहती थी और कभी पिता के पास। उस की माता के दिल में अब भी उस सम्बन्ध में बहुत डर था, और इसी लिए वह

पेमी को .फाल्सपार्क भेजना पसन्द नहीं करती थी। मगर थामस की प्रवल इच्छा के कारण उसे वहां भेजना ही पड़ता था। इसी तरह एक साल निकल गया।

(४)

एक दिन हिएटौक में .फाल्सपार्क से एक आदमी श्रीमती थामस को यह सूचना देने के लिए आया कि उस के पति बहुत बीमार हैं, और वह उससे मिलना चाहते हैं। मां बेटी बहुत दिनों से वहां नहीं गए थे। अपने पति की बीमारी का समाचार सुन कर भी श्रीमती थामस को यही इच्छा हुई कि वह पेमी को घर पर छोड़ कर अकेली ही .फाल्सपार्क के लिए रवाना हो जाए। परन्तु पेमी के बहुत आग्रह करने पर वह उसे भी साथ ले जाने को तैयार हो गई।

थामस सचमुच बहुत कमज़ोर होगया था। उस का गठिया अब प्रवलरूप धारण कर चुका था। अपने को बीमारी के कष्ट से बचाने के लिए वह सदैव बहुत अधिक तेज़ दवाइयों के 'फुल-डोज़' लिया करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि दवाइयों ने उस पर अपना असर करना ही बन्द कर दिया था और इस कारण उस का कष्ट बहुत बढ़ गया था।

पेमी को देख कर और उससे बातचीत करके थामस को सदा की तरह बड़ी शान्ति प्राप्त हुई। वह उससे सचमुच बहुत अधिक प्यार करता था।

उधर पेमी के विवाह को अब करीब करीब पांच वर्ष बीत

चुके थे और रेनाल्ड यूरोप से वापिस लौट आया था। बन्दरगाह से ब्रिस्टल की ओर जाते हुए उस ने ऐमी की माता को चिट्ठी लिखी थी कि अब वह शीघ्र ही आकर अपनी पत्नी को अपने साथ लेजाना चाहता है। रेनाल्ड ने यह साफ़ लिख दिया था कि अब वह और अधिक प्रतीक्षा न कर सकेगा। विवाह के अवसर पर जितने वर्षों की अवधि नियत की गई थी, वह अब समाप्त हो गई है। श्रीमती थामस का अपना भी यही विचार था कि ऐमी अब युवती हो गई है, इस लिए अपने पति से उसका व्यक्तिगत परिचय अवश्य करा देना चाहिए।

अपने पति के साथ ये सब बातें एकान्त में करने की इच्छा से श्रीमती थामस ने ऐमी को बाग़ में भेज दिया। उसे भय था कि जोश में आकर थामस कहीं बहुत ज़ोर से न बोलने लगे। इस लिए उसने ऐमी को बाहर भेज देना ही उचित समझा। पति-पत्नी ऊपर के कमरे में बैठे थे, उन के देखते देखते अनिन्द्य-सुन्दरी नवयुवती ऐमी आंगन के हरे हरे घास को पार करके बाग़ के कुञ्जों की ओट में चली गई।

दोनों में बातचीत शुरू हुई। पत्नी ने रेनाल्ड का पत्र अपने पति के सामने रख दिया।

यह चिट्ठी पढ़ते ही थामस ने चिल्ला कर कहा—"अभी वह अठारह साल से तीन महीने छोटी है! यह बहुत जल्दी है। मैं इस बात को सुन भी नहीं सकता! मैं कभी इस तरह उसे अपनी लड़की को न लेजाने दूँगा! कभी नहीं!"

श्रीमती थामस ने बड़े धैर्य से कहा—"प्यारे थामस! ज़रा सोचो तो! ईश्वर न करे अगर हम दोनों में से कोई आंख मूँद ले तो पेमी का क्या होगा! उसे अब ज़रूर अपना घर आबाद करना चाहिए।"

थामस के माथे की नाड़ियां फूल गईं। उसने चिल्ला कर कहा—"मैंने एक बार जो कह दिया कि अभी वह बहुत छोटी है। मैं उसे अभी हर्गिज़ नहीं लेजाने दूँगा! अब मैं हिएटौक में आकर दिन रात पेमी पर पहरा दूँगा। मैं देखता हूँ, उसे कौन ले जा सकता है!"

जब श्रीमती थामस ने देखा कि उसका पति बहुत उत्तेजित होगया है, तो बात को यहीं समाप्त करने की इच्छा से उसने कहा—"तुम इतना घबराते क्यों हो। रेनाल्ड कोई डाकू नहीं है, जो इस तरह छापा मार कर तुम्हारी लड़की को चुरा ले जाएगा। मैं उसे आज ही चिट्ठी डाल दूँगी कि इस सम्बन्ध में वह सीधा तुम्हीं से पत्र-व्यवहार करे।"

थामस बोलते बोलते इतने जोश में आगया था कि उसकी पत्नी को शक होगया कि कहीं आज पुनः पेमी ने उनकी बातें सुन न ली हों। इसी बात की जांच करने के लिए वह बाहर आई। उसे यह देख कर सन्तोष हुआ कि पेमी नज़दीक नहीं है। वह पेमी की खोज में आगे बढ़ी जिन कुञ्जों की तरफ़ पेमी गई थी, उनमें उसे मौजूद न देख कर उसे कुछ विस्मय हुआ। वह और आगे बढ़ी। कुछ दूर चल कर उसने देखा कि चारों

ओर से लताकुञ्जों से घिरे हुए एक स्थान पर ऐमी बैठी है, और उसके पास ही एक और व्यक्ति, उसकी कमर में बांह डाल कर बैठा हुआ है। दोनों का मुँह दूसरी ओर था, फिर भी श्रीमती थामस अच्छी तरह पहिचान गईं कि यह व्यक्ति नवयुवक फिलिपसन है।

श्रीमती थामस ने यह सब देखा और वह स्तब्ध रह गई। जिस बात की कल्पना भी उसे सदैव भयभीत बना देती थी, उसे आज अपनी आंखों के सामने प्रत्यक्ष होता हुआ देख कर उसे जो दुख हुआ वह वर्णनातीत है। जिस बदकिस्मत घड़ी में उसके पति ने अपनी पुत्री के भविष्य जीवन के साथ वह भयंकर मज़ाक किया था, उसकी कल्पना करके उसका हृदय जल उठा। फिर भी वह बहुत बुद्धिमान महिला थी। उसे मालूम था कि यहां उसकी उपस्थिति का ज्ञान दोनों प्रेमियों को कदापि नहीं होना चाहिए। इस लिए वह चुपचाप वहां से उलटे पाओं लौट गई और मकान के बरामदे में खड़े होकर उसने दो तीन बार ज़ोर ज़ोर से आवाज़ दी—"ऐमी! ऐमी!"

ऐमी के विवाह के बाद से आज जाकर श्रीमती थामस के मन में यह सन्देह हुआ कि कहीं उसने गलती तो नहीं की। इसके बाद इस घटना में अपने पति के भाग के सम्बन्ध में वह सोचने लगी। यह सोच कर उसके हृदय में बहुत ही खिज, क्रोध और घृणा उत्पन्न हुई कि उसके पति ने, अपनी मूर्खता से, खुद ही अपनी कन्या के भविष्य को अन्धकारमय बनाने का प्रयत्न किया

है। इसके बाद उसकी यह धारणा होगई कि यह सब कुछ थामस ने जानबूझ कर ही किया है। इसी लिए वह उस दिन फिलिपसन को अपने साथ हिएटौक ले गया था, और इसी उद्देश्य से वह रेनाल्ड को यहां नहीं आने देना चाहता! उसे निश्चय था कि यदि इस मामले में थामस खुदबखुद इस तरह की गड़बड़ उत्पन्न न करता तो ऐमी बड़ी प्रसन्नता से अपने पति का स्वागत करती!

इसी वक्त सामने के घास पर से चल कर आती हुई ऐमी पर उस की नज़र पड़ी। ऐमी का चेहरा पीला पड़ा हुआ था, मगर उस पर भय के चिन्ह नहीं थे, वह निष्पाप दिखाई देती थी। अपने जीवन में आज पहली बार ऐमी को देख कर उस की माता के दिल में खिज और क्रोध के भाव का उदय हुआ। उसने सोचा—कल की यह ज़रा-सी बच्ची, जिसे अपना दूध पिला कर मैंने इतना बड़ा किया है, मेरे देखते देखते इतनी पक भी गई कि अब न केवल मेरी अनिच्छा रहते इस ने अपना एक प्रेमी ही बना लिया है, अपितु अब मुझ से छिप छिप कर उस से मिलने जुलने भी लगी है! उसे यह सोच कर और भी अधिक दुख हुआ कि इस समय रेनाल्ड भी यहां नहीं है, जिस की सहायता से इस दशा में भी वह कोई उपाय खोज ही निकालती।

श्रीमती थामस ऐमी सहित उसी समय हिएटौक के लिए लौट चली। रास्ते भर में उन दोनों में बहुत कम बात चीत हुई। जो कुछ बोली, वह भी ऐमी ही। माता और पुत्री के हृदय में इतने दिनों से जो गांठ पड़ गई थी, वह आज साफ़ तौर से देखी जा

सकती थी।

ऐमी की माता बहुत बुद्धिमती थी। वह जानती थी कि उसे प्रकट रूप में ऐमी को किसी तरह की डांट नहीं बतानी चाहिए। इस से आग और भी अधिक भड़केगी। अब इस आपत्ति से निकलने का उसे एक ही उपाय प्रतीत हुआ; वह यह कि वह ऐमी को दिन रात अपने कड़े निरीक्षण में रक्खे और अपने पति की अनुमति प्राप्त किए बिना, यहां तक कि उसे सूचना तक भी दिए बिना, वह रेनाल्ड को अपने यहां बुला ले, और ऐमी को ज़बरदस्ती उस के साथ रवाना कर दे।

हिएटौक पहुँच कर श्रीमती थामस को अपनी डाक में रेनाल्ड का भी एक पत्र मिला। यह पत्र पति पत्नी दोनों के नाम पर सम्मिलित रूप से भेजा गया था। इस में रेनाल्ड ने बड़ी भद्रता के साथ लिखा कि मैं ब्रिस्टल में आ पहुँचा हूँ और यदि आप लोगों को कोई आपत्ति न हो तो ऐमी को लेने के लिए शीघ्र ही हिएटौक आना चाहता हूँ।

रेनाल्ड का इसी आशय का एक पत्र ऐमी को भी मिला। उसे पढ़ कर वह बहुत अधिक घबरा गई। उसका चेहरा बिल्कुल पीला पड़ गया।

माता ने धीरे से कहा—"इस बार जब वह यहां आएँ तो तुम्हें उनका खूब स्वागत करना चाहिए।"

"मगर—मगर—मैं—"

"अब तो तुम बाक़ायदा एक स्त्री बन गई हो। अब और देर

तक प्रतीक्षा नहीं की जा सकती !"

"मगर मेरे पिता इस बात की कभी आज्ञा न देते ! मैं अभी इस के लिए तैयार नहीं हूँ। ओह, यदि वह एक वर्ष तक और न आए; कम से कम कुछ महीनों तक ही और न आए ! आह, मेरे प्यारे पिता. अगर इस समय तुम यहां होते ! मैं अभी उन्हें बुलाती हूँ !—उन्हें बुलाने के लिए आदमी भेजती हूँ !" यह कहते कहते ऐमी फुफकार कर रो उठी। कुछ क्षणों तक रोते रहने के बाद वह उठ खड़ी हुई और अपनी माता के गले से लिपट कर कहने लगी—"अम्मा ! मेरी प्यारी अम्मा ! मुझ पर दया करो ! मैं इस आदमी से प्यार नहीं करती ! मुझे इससे बचाओ !"

ऐमी का यह अपार कष्ट माता से सहा नहीं गया। वह पिघल गई। जो कुछ होना है, होजाय;—वह बेचारी कहां तक करे !

कुछ देर पहले तक उस का इरादा था कि वह रेनाल्ड को शीघ्र ही हिएटोक में बुला लेगी और उसे कुछ दिनों तक अपने घर पर ही रक्खेगी। उसे यह विश्वास था कि रेनाल्ड जैसा अच्छा आदमी उस की पुत्री के हृदय को शीघ्र ही अपने वशीभूत कर लेगा और तब दोनों एक दूसरे के होजाएँगे। वह कल्पना करती थी कि उसके कुछ ही दिनों बाद अपनी बीमारी से अच्छा होकर थामस भी हिएटोक में आएगा, और अपनी पुत्री को रेनाल्ड के साथ रम-गया देख कर खुश होजाएगा। मगर अब ऐमी की यह विकलता देख कर उस के वे सब मनसूबे नष्ट होगए। ऐमी को सान्त्वना देते हुए उसने कहा—"यह पत्र मैं अभी अभी

तुम्हारे पिता के पास भेज देती हूँ। वह जैसा कहेंगे, वैसा ही किया जाएगा। यह तो तुम जानती ही हो कि वह तुम्हें तकलीफ़ नहीं दे सकते। वह तुम्हें रोता हुआ देखने की बजाय तुम्हारा भविष्य तबाह कर देना अधिक पसन्द करेंगे! उन्हीं पर सब बात छोड़ देने से तो तुम सहमत हो न ?"

बेचारी ऐमी तब जाकर चुप हुई, अब उसकी मां ने वह चिट्ठी उसके सामने ही एक आदमी की मार्फ़त .फाल्सपार्क की ओर रवाना कर दी।

मगर ज्योंही वह घुड़सवार .फाल्सपार्क के लिए रवाना हुआ, त्योंही श्रीमती थामस को अपने हृदय की कमज़ोरी पर पश्चात्ताप होने लगा। उसे फिलिपसन का ध्यान हो आया। और इसके बाद उसने सोचा कि अपनी पुत्री के सम्पूर्ण भविष्य की खातिर मुझे उसके क्षणिक कष्ट की परवाह नहीं करनी चाहिए। यह विचार आते ही उस ने रेनाल्ड को हिएटौक में बुला लेने का निश्चय कर लिया। तब अपनी बैठक को अन्दर से बन्द करके रेनाल्ड के नाम पर वह पत्र लिखने लगी —

"प्रिय रेनाल्ड,

अब यह नितान्त आवश्यक हो गया है कि मैं तुम्हें एक बात की सूचना दे दूँ। बात यह है कि ऐमी के पिता उसे अभी तक विदा नहीं देना चाहते और प्रयत्न करके भी मैं उन्हें इस बात के लिए तैयार नहीं कर सकी। मगर अपनी पुत्री की भलाई के ख्याल से मैं उसे तुम्हारे साथ भेज देने के लिए उतनी ही उत्सुक हूँ, जितना

उत्सुक तुम होगे। इस लिए उनकी अनुपस्थिति में ही मैं यह कार्य कर देना चाहती हूं। यह बताते हुए दुख होता है कि मेरे पति अभी तक फ़ालसपार्क में बीमार पड़े हैं। तुम्हारा पत्र मैंने उन के पास, अपना कर्तव्य समझ कर भेज दिया है। मेरा ख्याल है कि उस पत्र के उत्तर में वह कठोरतापूर्वक तुम्हें लौट जाने को कहेंगे और समय की कुछ निश्चित अवधि तक यहां न आने की बात लिखेंगे। मेरा निर्देश है कि यदि तुम्हें उनका कोई इस ढंग का पत्र मिले, तो भी उस की परवाह किए बिना तुम अवश्य ही शीघ्र यहां आजाओ। अच्छा यह होगा कि तुम सूर्यास्त के बाद यहां पहुंचो। अपने आने के दिन और समय की सूचना मुझे अवश्य भेज देना। प्यारी ऐमी मेरे पास ही है और मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि वह तुम्हारे आने पर यहां ही होगी।

———"

यह पत्र उस ने चुपचाप रेनाल्ड के पास रवाना कर दिया। इस के बाद उसे इस बात की चिन्ता हुई कि कहीं ऐमी हिएटौक से भाग जाने का प्रयत्न न करे। इस लिए वह बहुत सतर्क होगई, परन्तु वह ऐमी पर यह प्रभाव भी नहीं डालना चाहती थी कि उस पर सन्देह किया जा रहा है। फिर भी, अपनी माता के चेहरे ही से ऐमी को यह सन्देह होगया कि रेनाल्ड शीघ्र ही यहां आने वाला है।

उस ने बड़ी घबराहट से पूछा—"अम्मा, क्या वह यहां आरहा है?"

माता ने विश्वास दिलाया—"एक सप्ताह तक नहीं।"

"उस के बाद—उस का आना निश्चित है?"

"हां—ज़रूर!"

ऐमी जल्दी से अपने कमरे में जाकर छिप गई और उस के बाद किसी को दिखाई न दी।

श्रीमती थामस ने सोचा कि अब कठोरता करने का मौका आ गया है। उस ने निश्चय कर लिया कि अब वह ऐमी के कमरे को बाहर से बन्द कर देगी और रेनाल्ड के आने तक उसे वहां बन्द रक्खेगी। परन्तु इस उद्देश्य से जब वह वहां पहुंची, तो उस ने देखा कि ऐमी के कमरे का दरवाज़ा पहले ही अन्दर से बन्द है। जांच करने पर उसे यह भी मालूम हुआ कि नौकरों को उस ने अपना भोजन भी यहां पर ही भेजने की हिदायत दे रक्खी है।

ऐमी के इस कमरे से और जिन जिन कमरों को रास्ता जाता था, उन सब को उसकी माता ने बाहर से बन्द करवा दिया, और स्वयं सामने के कमरे में धरना देकर बैठ गई। इसी कमरे में रेनाल्ड को ठहराने का उसका विचार था। उसने निश्चय कर लिया कि अब रेनाल्ड के आने तक वह ऐमी को बाहर न जाने देगी।

मगर यह स्पष्ट था कि ऐमी का कहीं भागने का इरादा नहीं है। वह स्वयं ही अपने को चारों ओर से बन्द करके अन्दर पड़ रही थी। वह सम्भवतः इस तरह की किलेबन्दी करके अपने पति को अपने पास आने से रोकना चाहती थी। उसे स्वयं ही यह विश्वास होगया था कि रेनाल्ड बहुत शीघ्र यहां आने वाला

है और उस की माता ने जो उस के एक सप्ताह तक न आने की बात कही है, वह उसे धोखा देने के लिए ही है। इधर श्रीमती थामस उसके दरवाज़े के बाहर धरना देते देते सोच रही थी कि जब रेनाल्ड आएगा तो इस बिदकी हुई लड़की से उसे मिलाया किस तरह जाएगा। बहुत सोचने पर भी जब उन्हें इसका कोई उपाय नहीं सूझा तो इस समस्या का हल उन्हों ने रेनाल्ड के प्रतिभाशाली मस्तिष्क के लिए ही छोड़ दिया।

अपने पति के आने का निश्चय होते ही पेमी बहुत अधिक उद्विग्न होगई थी, इस लिए श्रीमती थामस को अब खाली बैठे बैठे उसके स्वास्थ्य की चिन्ता होने लगी। सांझ का समय होने लगा था। श्रीमती थामस ने चाबी के छेद में से अन्दर झांककर देखा कि पेमी वहां क्या कर रही है। उसे दिखाई दिया कि वह चुपचाप बहुत अधिक दुखी-सी होकर एक सोफ़े पर लेटी हुई है और शून्य-भाव से मकान की छत की ओर देख रही है।

माता का दिल पिघल गया। उसने दरवाज़ा खटखटा कर आवाज़ दी—"अन्दर पड़े पड़े तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ जायगा। चलो, ज़रा फ़िटन पर बाहर की हवा खा आएँ।"

पेमी ने कोई विरोध नहीं किया। वह दरवाज़ा खोल कर बाहर निकल आई। माता और पुत्री फ़िटन पर सवार होकर हवाखोरी के लिए बाहर चले गए। राह में दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई।

लौटते हुए वे एक नए रास्ते पर अपनी गाड़ी ले आए। सड़क

के दोनों ओर खुला मैदान था। चलते चलते सड़क के किनारे एक छोटा-सा सुन्दर मकान आगया।

पेमी की निगाह इस मकान की खिड़की पर पड़ी। इसके अन्दर, एक आराम कुर्सी के सहारे तकिये का ढासना लेकर उसी की उम्र की एक लड़की बैठी थी। इस लड़की का नाम नैनी था। पेमी उससे कुछ कुछ परिचित थी। पेमी ने देखा, नैनी के चेहरे पर चेचक के दाग निकले हुए हैं, और उन पर लगाई हुई दवाई प्रकाश में चमक रही है। पेमी के दिल में सहसा एक विचार उत्पन्न हुआ। श्रीमती थामस का ध्यान उस तरफ नहीं था। नैनी जब आँखों से ओझल हो गई तो पेमी ने अपनी माता से कहा कि गाड़ी ठहरा कर वह थोड़ी देर के लिए अपनी सहेली से मिलना चाहती है। माता को पहले तो पेमी की इस इच्छा पर भी सन्देह हुआ, परन्तु बाद में यह देख कर कि उस मकान में नीचे की तरफ़ सिर्फ़ एक ही दरवाज़ा है इस लिए पेमी भाग नहीं सकेगी, उस ने गाड़ी ठहराने की आज्ञा दे दी। पेमी शीघ्रता से मकान की सीढ़ियों पर चढ़ गई। दो तीन मिनटों के बाद वह वापिस लौट आई और फ़िटन पर बैठ गई।

फ़िटन चल दी। पेमी ने अपनी माता की तरफ़ देख कर कहा—"मैं ने अपना काम पूरा कर लिया!"

—पेमी के चेहरे पर तूफ़ान के लक्षण दिखाई दे रहे थे और आंखों में आंसुओं की वर्षा के आसार।

उस की माता ने पूछा—"कौन-सा काम?"

"नैनी को चेचक निकली हुई है। मैं ने यह खिड़की में से पहले ही देख लिया था और इसी लिए मैं उसके पास गई थी। मैं ने उस का एक चुम्बन ले लिया है। अब यह बीमारी मुझे भी होजायगी और 'वह' अब मेरे पास आने का साहस नहीं कर सकेगा !"— ऐमी का स्वर क्रमशः कांप उठा था।

आज आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि चेचक की बीमारी उस ज़माने में कितनी भयंकर समझी जाती थी। ऐमी की माता चीख पड़ी। वह बार बार प्रभु का नाम लेने लगी। उसने अपनी कन्या से भी ऐसा ही करने को कहा। ड्राइवर को हुक्म हुआ कि वह घोड़ों को हवा कर दे। घोड़े सरपट दौड़ने लगे और ये लोग शीघ्र ही घर पहुँच गए।

इस समय तक ऐमी को अपने भयंकर साहस से खुद भी भय प्रतीत होने लगा था। वह अब बहुत डरी हुई मालूम होती थी। घर पहुँचते ही उसके कपड़े उतार दिए गए। उसे गरम पानी और भाफ़ से स्नान कराया गया। वह सभी कुछ किया गया जो चेचक जैसी भयंकर बीमारी को रोकने के लिए उस ज़माने में किया जा सकता था। ऐमी अब स्वयं भी हैरान थी कि उसने यह कर क्या लिया।

ऐमी को एक पृथक् कमरे में बन्द रखने का अब एक और कारण भी बन गया। उस रात को और अगले सम्पूर्ण दिन में उसे इसी कमरे में रक्खा गया, परन्तु दूसरे दिन की सांझ तक भी उस पर बीमारी का कोई लक्षण दिखाई न दिया।

(५)

श्रीमती थामस ने रेनाल्ड का वह पत्र .फाल्सपार्क लेजाने का काम टपकाम्बे के सुपुर्द किया था और उसे कह दिया था कि यह पत्र वह उन्हें तब दे जब वह सोकर उठें, ताकि उन का शरीर इस पत्र द्वारा उत्पन्न होने वाले उद्वेग को सहार सके। टपकाम्बे को यह काम बड़ा अप्रिय प्रतीत हुआ, क्योंकि उसे ज्ञात था कि यह पत्र पढ़ कर उसके मालिक को बहुत अधिक क्लेश पहुँचेगा। परन्तु इस पत्र को दिए बिना भी तो काम नहीं चल सकता था; इस लिए अगले दिन की प्रातःकाल जब उसका मालिक नींद से जगा, तो उसने वह पत्र उसे दे दिया।

ऐमी की माता का ख्याल था कि इस पत्र को पढ़ कर उसका पति अधिक से अधिक यही करेगा कि वह काफ़ी सख्त भाषा में रेनाल्ड को अभी हिण्टोक में न आने के लिए चिट्ठी डाल देगा। परन्तु थामस ने यह पत्र पढ़ते ही यह घोषणा कर दी कि वह अभी अभी रेनाल्ड से मिलने के लिए ब्रिस्टल जाना चाहता है।

टपकाम्बे ने बहुत ही चिन्तित होकर कहा—"मगर स्वामिन, आप तो बिस्तरे से भी नहीं उठ सकते!"

सचमुच थामस इन दिनों इतना अधिक बीमार और कमज़ोर था कि वह अब दिनरात शैया पर ही पड़ा रहता था। उस के डाक्टरों ने उसे हिलने जुलने से भी मना किया हुआ था। फिर भी उसने डांट कर कहा—"अगर 'नहीं जा सकते' कहना हो,

तो कमरे से बाहर निकल जाओ !... मैं कहता हूँ, जाओ और मेरा घोड़ा कस कर ले आओ !"

टपकाम्बे अपने मालिक का स्वभाव अच्छी तरह जानता था। उसे मालूम होगया कि इस समय तो घोड़ा लाना ही पड़ेगा। वह बहुत ही उदास हृदय से घुड़साल की तरफ़ चला गया। थामस के कमरे में अब कोई और आदमी नहीं था। यह देख कर वह बड़े कष्ट से उठा और धीरे धीरे लड़खड़ाते हुए पास की अलमारी के निकट पहुँचा। इस में से दवाई की एक शीशी उसने खोज निकाली। यह गठिये को सामयिक तौर से दूर करने की एक इतनी तेज़ दवाई थी कि डाक्टरों ने उसे यह दवाई लेने से बिल्कुल मना कर रक्खा था। इस दवाई का पश्चात प्रभाव सचमुच बहुत बुरा होता था।

यह शीशी उठा कर थामस पुनः अपने बिस्तरे पर जा बैठा और उसने एक साथ इस दवा का डबल डोज़ चढ़ा लिया। बीस, पच्चीस मिनटों तक वह इन्तज़ार करता रहा, परन्तु दवाई का कोई प्रभाव दिखाई न दिया। तब उसने दुबारा वह बोतल खोली और इस बार वह दवाई का 'तिगुना डोज़' चढ़ा गया। दवा ने शीघ्र ही अपना असर किया। उसकी बीमारी जाती रही, शरीर में खून वेग से गति करने लगा और उसे अपने में यथेष्ट बल और साहस का अनुभव होने लगा। बड़ी शीघ्रता से उसने अपनी घुड़सवारी की पोशाक पहिनी और इसके बाद टपकाम्बे की इन्तज़ार में वहीं पर टहलना शुरु कर दिया।

कुछ समय बाद घर की एक नौकरानी किसी काम से उस तरफ़ आ निकली। उसे मालूम था कि मालिक बहुत अधिक बीमार है और चारपाई पर से उठ तक भी नहीं सकता। परन्तु इस समय अचानक थामस को घुड़सवारी की पोशाक में इस तरह घूमता-फिरता देख कर उसे बहुत अधिक आश्चर्य हुआ और विस्मय-विस्फारित दृष्टि से वह वहीं खड़ी रह कर उसकी ओर देखने लगी।

थामस ने डांट कर कहा—"इस तरह बेवकूफ़ों की तरह आंखें फाड़ कर क्या देख रही हो। क्या तुमने किसी आदमी को बरामदे में घूमते फिरते कभी नहीं देखा ?"

नौकरानी वहां से भाग गई। थामस ने घण्टी बजाई, दरबान आ उपस्थित हुआ। थामस ने कहा—"घोड़ा लाओ !"

इसके दस मिनट बाद ही थामस घोड़े पर सवार होकर ब्रिस्टल की तरफ़ जाता हुआ दिखाई दिया। टपकाम्बे भी उसके साथ ही था। आज की यात्रा के परिणाम के सम्बन्ध में वह बेचारा बहुत अधिक चिन्तित हो रहा था।

उस खुले और कहीं कहीं ऊँचे-नीचे मैदान में ये दोनों अपने घोड़ों को दौड़ाते हुए चुपचाप बढ़े चले जा रहे थे। थामस अपनी बीमारी के ख़्याल से घोड़े को सरपट नहीं दौड़ा रहा था, फिर भी उसकी चाल अच्छी थी। करीब पन्द्रह मील चल चुकने के बाद थामस के चेहरे पर भारी थकावट के चिन्ह दिखाई देने लगे। किसी ज़माने में वह एक दिन में घोड़ों की पीठ पर सौ सौ

मील तक का सफ़र कर चुका है। मगर अब वह ज़माना नहीं रहा था। .ख़ैर, फिर भी बिना किसी दुर्घटना के वे दोनों ब्रिस्टल में पहुँच गए और थामस ने अपनी सदा की अभ्यस्त सराय में डेरा लगा लिया। रेनाल्ड के पत्र पर उस सराय का पता लिखा था, जिसमें वह ठहरा हुआ था। थामस शीघ्र ही उस से मिलने के लिए वहां जा पहुँचा। इस समय सायंकाल के चार बजे थे।

रेनाल्ड इस समय भोजन करके आराम कर रहा था। श्रीमती थामस का पत्र उसे आज ही मिला था, परन्तु फिर भी आज शाम को हिएटौक के लिए रवाना होने का उसका इरादा नहीं था। अपनी पत्नी से मिलने की तो उसकी प्रबल अभिलाषा थी, परन्तु इस सम्बन्ध में वह अपने श्वसुर की राय भी जान लेना चाहता था। और इसी लिए .फाल्सपार्क से उसके पत्र की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे उमीद थी कि थामस का पत्र कल तक अवश्य आजाएगा और तब कल शाम ही को वह हिएटौक के लिए रवाना हो जाएगा। उसकी यह हार्दिक इच्छा थी कि इस अवसर पर उसके श्वसुर महोदय भी उससे नाराज़ न रहें और वह उस परिवार का सर्वप्रिय सदस्य बन सके। आज इस वक़्त, जब उसे मालूम हुआ कि उसके श्वसुर उससे मिलने के लिए इस तरह अचानक ही स्वयं आ उपस्थित हुए हैं, तो उसके विस्मय का ठिकाना न रहा।

श्वसुर और जामाता दोनों आमने सामने बैठ गए। श्वसुर महोदय तो एक गरम स्वभाव के, बीमार, उत्तेजनाशील, खुले दिल

वाले और अक्खड़ व्यक्ति थे। इधर जामाता साहब पीले रङ्ग के, विशाल, शान्दार, सभ्य और दुनिया देखे हुए आदमी थे। सम्राट के दरबारी होने के कारण उन्हें मिलने जुलने का ढंग भी खूब आता था। साथ ही वह शिक्षित भी काफ़ी थे। उन की उम्र इस समय करीब ३५ बरस की थी, परन्तु नियमित आहार विहार के कारण वह सत्ताइस बरस से अधिक उम्र के नहीं प्रतीत होते थे।

थामस ने किसी तरह की विशेष भूमिका के बिना ही, काफ़ी सभ्यता के साथ रेनाल्ड को अपना परिचय देकर आने का उद्देश्य बता दिया।

रेनाल्ड ने एक बार झुक कर थामस को नमस्कार किया और कहा—"श्रीमन्, आप की उपस्थिति से मैं बहुत अधिक सम्मानित हुआ हूँ।"

थामस ने कहा—"ख़ैर, जो कुछ हो चुका है, उसे तो अब बदला ही नहीं जा सकता। यद्यपि ऐमी का विवाह बहुत जल्दी और मेरी इच्छा के बिना ही कर दिया गया था, परन्तु अब तो वह तुम्हारी पत्नी हो ही चुकी है, और उसे एक दिन तुम्हारे साथ भेजना ही पड़ेगा। मगर बात यह है कि अभी तक वह बहुत छोटी है। उस की उम्र मत देखो, वह अठारह साल की तो ज़रूर होने वाली है, परन्तु स्वभाव से वह अब भी बिल्कुल बालिका ही है। अभी तक उसे आप के साथ भेजना बहुत अनुचित होगा। हां, सम्भवतः अगले वर्ष यह किया जा सकेगा।"

रेनाल्ड यद्यपि काफी सभ्य था, मगर अपने इरादे को बदलने

की उस की आदत नहीं थी। खासतौर से इस मामले में तो उस की यह दृढ़ धारणा थी कि मेरे साथ बड़ा अन्याय किया गया है जो इतने वर्षों तक मुझे अपनी पत्नी से बलात् पृथक् रक्खा गया है। विवाह के समय ऐमी की माता ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अब से पांच सालों के बाद ऐमी को अवश्य ही उस के साथ रवाना कर देगी। उस ने तो यह भी भरोसा दिलाया था कि यदि किसी भी तरह सम्भव हुआ तो इस अवसर से पहले भी ऐमी को उस के पास भेज दिया जाएगा। और अब पांच साल बीत जाने पर भी इस तरह से टालमटोल करने का प्रयत्न किया जा रहा है, यह बात उसे बहुत अनुचित प्रतीत होती थी। इस लिए उस ने काफ़ी नम्रता के साथ कहा—"आप की पत्नी ने मुझ से जो प्रतिज्ञा की थी, उसे पूरा करना आप लोगों का कर्तव्य है। उन्हों ने खुद ही तो यह अवधि नियत की थी, अतः अब आपकी ओर से इसे बदलने का प्रयत्न करना अनुचित है। अब मेरा पूर्ण अधिकार है कि मैं हिएटौक जाकर अपनी पत्नी को ले आऊं और अब मैं इसी उद्देश्य से कल ही हिएटौक को रवाना भी हो जाऊँगा।"

यह सुन कर थामस को क्रोध चढ़ आया। उस ने कहा—"भलेमानस! इस तरह 'अधिकार' की बातें मत करो। एक तो उस ज़रा-सी बच्ची को इस तरह बहका कर, मुझे सूचना तक दिए बिना, उस से शादी कर ली और अब 'अधिकार', 'अधिकार' चिल्लाते हो!"

जामाता ने कहा—"आप मुझ पर जो यह इल्ज़ाम लगा रहे हैं, वह बिल्कुल निराधार है। आप को मालूम होना चाहिए कि मुझ पर इस तरह के इल्ज़ाम लगा कर आप मेरे साथ सख्त अन्याय कर रहे हैं। आपको यह भी मालूम होना चाहिए कि मैंने इस विवाह के सम्बन्ध में कोई धोखेबाज़ी नहीं की। उसकी माता चाहती थी और उस ने भी स्वीकृति दे दी थी, तब जाकर यह विवाह हुआ था। उन लोगों ने मुझे जो कुछ बताया, मैंने उसे सच मान लिया। विवाह से पहले मेरे सामने इस का इशारा तक भी नहीं किया गया कि आप यह विवाह नहीं होने देना चाहते।"

मगर थामस उस की बात पर विश्वास करने को तैयार न हुआ। उसने उसी तरह चिल्ला कर कहा—"तुम ने एक इतनी छोटी उम्र की लड़की से विवाह किया ही क्यों! अठारह साल की उम्र से पहले किसी लड़की का विवाह होना ही नहीं चाहिए। क्या तुम उसके सम्बन्ध में यह नहीं जानते थे कि वह अभी निपट बालिका है!"

टपकाम्बे पास के कमरे में बैठा ये सब बातें सुन रहा था। उस ने देखा कि थामस इतने जोश में आकर बोल रहा है कि उस की आवाज़ कांपने लगी है। इस लिए वह बीच ही में वहीं आ उपस्थित हुआ और उसने रेनाल्ड को नमस्कार कर के कहा—"श्रीमन्, आपको शायद ज्ञात नहीं कि मेरे मालिक सख्त बीमार हैं। कृपया उन्हें उत्तेजना देकर उन का स्वास्थ्य और खराब मत कीजिए।"

रेनाल्ड ने शीघ्रता से कहा—"ओह, इस बात का मुझे बड़ा खेद है कि मैं ने उन्हें तकलीफ़ पहुँचाई ! मैं इनके स्वास्थ्य की मंगल-कामना करता हूं।"—इतना कह कर वह कमरे से बाहर चला गया।

थामस अपने निवासस्थान पर लौट गया। टपकाम्बे ने सलाह दी कि आज रात को हमें ब्रिस्टल में ही रहना चाहिए, परन्तु थामस ने निश्चयात्मक स्वर में कहा कि हम लोग अभी अभी लौट चलेंगे। थामस का विचार था कि आज हम लोग .फाल्सपार्क पहुँच जाएँ ताकि कल, रेनाल्ड के हिएटौक पहुंचने से पूर्व ही हम वहाँ पहुंच सकें। अतः शाम के पांच बजे वे .फाल्सपार्क के लिए वापिस लौट चले। यात्रा बिल्कुल नीरस रही। तेज़ हवा चल रही थी। ऋतु में कोई आकर्षण नहीं था। दोनों चुपचाप चले जा रहे थे। टपकाम्बे इस सम्पूर्ण घटना पर विचार कर रहा था। पिछले पांच सालों में उस के मालिक में कितना परिवर्तन आगया है। वह कितना बीमार और उदास स्वभाव का बन गया है। ऐमी के विवाह से लेकर अब तक की सम्पूर्ण घटनाएं एक एक कर के उस के सामने आरही थीं।

सायंकाल का अन्धकार क्रमशः घना होने लगा। सहसा टपकाम्बे को प्रतीत हुआ कि उस के मालिक को घोड़े की पीठ पर बड़ा कष्ट अनुभव हो रहा है। वह अपना घोड़ा बढ़ा कर उस के समानान्तर ले आया। टपकाम्बे ने पूछा—"हजूर, क्या बहुत तकलीफ़ अनुभव होरही है ?"

"ओह टपकाम्बे ! मेरा हाल बहुत बुरा हो रहा है ! मैं न जाने अभी तक घोड़े की पीठ पर बैठा किस तरह हुआ हूं ! मैं अब के नहीं बचूंगा ! टपकाम्बे, गिब्बट का गांव गुज़र गया या नहीं ?"

"अभी नहीं श्रीमन् ! मगर घबराइए नहीं । हम काफ़ी रास्ता चल चुके हैं ।"

"ओह, अभी .फाल्मपार्क कितनी दूर है ! मैं बहुत थक गया हूं ।"

टपकाम्बे अपने मालिक को आसरा देकर चलने लगा । थामस वीच वीच में दर्द से कराह उठता था । कुछ देर के बाद उस ने कहा—"टपकाम्बे मेरी इच्छा है कि मेरी मौत होजाए । मेरे जैसे अभागों के लिए मौत ही अच्छी है । मगर ऐमी के लिए मरने को भी जी नहीं करता !" इस के वाद उसे कुछ जोश आगया । यह शायद रेनाल्ड की याद का परिणाम था । उसने कहा—"ओह कल वह हम लोगों से पहले ही हिण्टौक पहुंचने का प्रयत्न करेगा और मेरी प्यारी बच्ची को ज़बरदस्ती उठा लेजाएगा !...जिस किसी तरह भी सम्भव हो, मैं उस से पहले वहां पहुंचना चाहता हूं ।"

"मुझे उमेद है कि कल तक आप हिण्टौक जाने लायक हो जाएंगे । परन्तु वास्तव में—"

'उमेद' मत कहो, 'निश्चय से' कहो ! तुम्हें नहीं मालूम कि मुझे कौन-सी बात इतनी तकलीफ़ दे रही है । मुझे इस बात का इतना दुख नहीं कि ऐमी का विवाह इस आदमी से क्यों हुआ । जहां

तक मुझे मालूम है रेनाल्ड के व्यक्तित्व के ख़िलाफ़ कोई भी बात नहीं कही जा सकती। मगर मुश्किल तो यह है कि पेमी उसे बिल्कुल नहीं चाहती। वह तो उस से डरती है। अगर कल यह उसे लेने जाएगा तो यह पेमी पर एक तरह से सरासर बलात्कार और अन्याय होगा। ईश्वर करे कि कल रेनाल्ड को कुछ होजाय!"

रास्ते भर टपकाम्बे को यह डर बना रहा कि न जाने किस वक़्त उस का मालिक सड़क पर जा गिरे। फिर भी आख़िरकार किसी न किसी तरह वे अपने घर पहुँच ही गए और टपकाम्बे ने थामस को आराम के साथ बिस्तरे पर लिटा दिया।

(६)

दूसरे दिन की प्रातःकाल यह स्पष्ट होगया कि आज थामस का हिएटौक तक जाना तो क्या अपने बिस्तरे से उठ सकना भी सम्भव नहीं है। उसकी बीमारी बहुत बढ़ गई थी। रात भर बीमारी की दशा में भी वह यही सोचता रहा था कि अगले दिन यदि वह कुछ भी अच्छा होगया तो हिएटौक जाएगा और वहां अगर पेमी को रेनाल्ड के साथ जाना नापसन्द होगा, तो उसे अपने साथ .फाल्सपार्क में ही ले आएगा। इस के लिए यदि शारीरिक बल के प्रयोग करने की आवश्यकता हुई तो वह इस से भी न चूकेगा। मगर अगले दिन जब उस ने अपने को बहुत कमज़ोर और अशक्त पाया तो उस के दुख की सीमा न रही। वह बार बार दोहराने लगा—"ईश्वर करे कि कल रेनाल्ड को कुछ होजाय!"

टपकाम्बे ने जब अपने स्वामी को इस तरह विकल देखा तो

उसे बहुत अधिक कष्ट हुआ । थामस के कमरे में कुछ डाक्टर और कम्पाउण्डर उस की चिकित्सा के लिए आगए । टपकाम्बे से अपने स्वामी का यह दुख देखा न गया और वह उस कमरे से निकल कर आंगन की घास पर जा बैठा। टपकाम्बे इस समय तक वृद्धावस्था की देहलीज़ पार कर चुका है। उस का जन्म .फाल्स-पार्क में ही हुआ था । उस का पिता थामस के पिता का नौकर था। अपने आचरण और व्यवहार से आज उसे अपने स्वामी का असीम विश्वास प्राप्त है। थामस को टपकाम्बे पर जितना विश्वास है, उतना उसे अपनी पत्नी पर भी नहीं होगा । आंगन के घास पर टांगे फैला कर उदास भाव से टपकाम्बे वर्तमान परिस्थिति पर विचार करने लगा । उसे स्वयं भी यह चिन्ता थी कि कहीं आज रेनाल्ड हिण्टौक में जा कर एमी को अपने साथ न ले जाए । एमी को रेनाल्ड से बचाने का वह स्वतन्त्र रूप से कोई उपाय सोचने लगा । इसी तरह दोपहर तक का समय गुज़र गया ।

उधर थामस की दशा इतनी बिगड़ गई थी कि डाक्टरों ने उसे सलाह दी कि वह अपने परिवार को भी वहीं बुला ले। थामस ने इस काम के लिए टपकाम्बे को ही चुना, यद्यपि इस के लिए किसी भी नौकर को भेजा जा सकता था और डाक्टरों की राय में थामस की शुश्रुषा के लिए टपकाम्बे का .फाल्सपार्क में रहना ही अधिक अभीष्ट था ।तथापि थामस ने आज्ञा दी कि इस काम के लिए टपकाम्बे को ही भेजा जाएगा ।

जब टपकाम्बे हिण्टौक को जाने लगा तो थामस ने

अपने कमरे में बुला कर उसे नज़दीक आकर बात सुनने का इशारा किया। टपकाम्बे थामस की शैया पर झुक गया और थामस उसके कान में कहने लगा—"घोड़े को बड़ी होशियारी से लेजाना और वहां 'उस से' पहले पहुँच जाना। आज ही उसने वहां पहुँचना है। अगर तुम हिएटौक में उससे पहले पहुँच जाओगे, तभी तुम ऐमी को अपने साथ लाने में कामयाब हो सकोगे। देखो, इस तरह करना। ऐमी की मां को तो मेरी बीमारी की बात कह कर पहले ही रवाना कर देना और उस के बाद चुपके से ऐमी को भी अपने साथ लेकर यहां चले आना। रेनाल्ड ऊपर वाली सड़क से हिएटौक जाएगा, तुम ऐमी को नीचे वाली सड़क से लाना। इस बात का पूरा ख्याल रखना कि राह में कहीं तुम्हारा उससे मेल न हो जाय। समझे!"

इस के पांच मिनट बाद ही टपकाम्बे घोड़े पर सवार होकर हिएटौक के लिए रवाना हो गया। अपनी अब तक की उम्र में वह कितनी बार इस सड़क पर से आया गया है, इसकी गिनती कर सकना भी अब मुमकिन नहीं है। हिएटौक से .फाल्सपार्क के बीच की सड़क का एक एक इञ्च उसका पहिचाना हुआ है। फिर भी जितने उद्वेग के साथ वह आज सड़क पर से गुजर रहा है, वह आज से पहले उसने कभी अनुभव नहीं किया था।

राह की दो एक सरायों में यह पूछ कर कि आज अमुक किस्म का कोई व्यक्ति तो इस सड़क पर से हिएटौक की तरफ़ नहीं गया, उसने यह पूरी तसल्ली कर ली कि रेनाल्ड, कम से कम

अभी तक, वहां से नहीं गुज़रा। सायंकाल हो गई थी, इस लिए उसे हर समय यह भय प्रतीत हो रहा था कि कहीं रेनाल्ड अब आने वाला न हो, अतः अपने घोड़े को पूरी चाल से दौड़ा कर वह प्रतिक्षण हिण्टौक से अधिक अधिक नज़दीक होने लगा।

टपकाम्बे आज बड़ा उदास था। उस की उदासी का सब से बड़ा कारण थामस की बीमारी थी। थमस कहीं इस बीमारी से गुज़र न जाय, इसकी उसे सब से बड़ी चिन्ता थी। थामस उस का स्वामी था मगर साथ ही वह उसका निजू और अन्तरंग मित्र भी था। इधर श्रीमती थामस की उससे ठीक ठीक नहीं निभती थी।

पेमी की माता को छोड़ कर घर का एक और व्यक्ति भी था, जिसे पेमी और फिलिपसन के आन्तरिक प्रेम की बात मालूम थी। यह व्यक्ति टपकाम्बे था। इस लिए वह स्वयं भी यह आसानी से कल्पना कर सका था कि आज यदि पेमी को ज़बरदस्ती रेनाल्ड के साथ रवाना कर दिया जाय तो उसे कितना असीम मानसिक कष्ट पहुँचेगा। टपकाम्बे के दिल में स्वयं भी फिलिपसन के लिए बहुत स्नेह के भाव थे। अपने मालिक के साथ साथ वह भी यही चाहने लगा था कि वास्तव में पेमी का विवाह फिलिपसन के साथ ही होना चाहिए था। इस कारण आज वह यथासम्भव अधिक तेज़ी के साथ अपना घोड़ा हिण्टौक की तरफ़ दौड़ाए चला जा रहा था। उसे विश्वास था कि यदि वह रेनाल्ड से सिर्फ़ आध घण्टा पहले भी हिण्टौक में पहुँच जाएगा, तो वह पेमी के अपने पति से बचा लाने में कामयाब हो सकेगा।

टपकाम्बे नौ बजे हिएटौक के महल की सब से बाहर वाली वृक्षों की कतार के पास पहुँचा। यहां पहुँच कर उस ने अपने घोड़े की रफ़्तार बहुत धीमी कर दी और फाटक के अन्दर प्रविष्ट होते ही वह घोड़े से उतर गया। इस फाटक से कुछ दूर तक बाग़ के वृक्षों की श्रेणियां और घने घने झुरमुट हैं, उस के बाद एक सुन्दर और समतल मैदान है और उस के पीछे हिएटौक का महल दिखाई दे रहा है। घोड़े की पीठ से उतर कर, टपकाम्बे ने यह देखने के लिए कि रेनाल्ड कहीं दूसरी सड़क से होकर उस से पहले ही तो यहां नहीं पहुँच गया, अन्दर की तरफ झांका। उसे विश्वास था कि यदि इस समय तक जामाता साहब यहां पधार चुके होंगे तो महल में कुछ न कुछ विशेष हलचल अवश्य दिखाई देगी। मगर उसे वहां सदा की तरह से पूर्ण सन्नाटा ही दिखाई दिया। टपकाम्बे थके हुए घोड़े की रास पकड़ कर अब पैदल ही आगे बढ़ा।

इसी समय सड़क पर किसी भाग कर आते हुए घोड़े की पदध्वनि बड़े स्पष्टरूप में उसे सुनाई देने लगी। टपकाम्बे का जी बैठ गया। उसे विश्वास होगया कि उस की सारी मेहनत अकारथ गई,—आख़िर रेनाल्ड आ ही पहुँचा! घोड़े की पदध्वनि प्रतिक्षण अधिक अधिक निकट आती जाती थी। सहसा टपकाम्बे को ख़्याल आया कि अपने यहां आने की बात अगर वह रेनाल्ड से छिपाए रख सके तो शायद अब भी वह पेमी को बचा ले जाने का कोई उपाय कर सके। वह बड़ी शीघ्रता से अपने घोड़े

सहित बाग़ के घने घने वृक्षों की ओट में होगया। सड़क वाला अश्वारोही भी अब फाटक पार कर के अन्दर आगया था और यहां पहुँच कर उस ने अपने घोड़े की चाल बहुत धीमी और निश्शब्द कर दी थी। टपकाम्बे ने चांद के अस्पष्ट प्रकाश में बड़े विस्मय और आह्लाद के साथ पहिचाना कि अश्वारोही रेनाल्ड नहीं, फिलिपसन है! क्रमशः फिलिपसन आगे बढ़ गया और बाग़ के अन्त में वह भी अपने घोड़े से उतर कर बाग में प्रविष्ट हो गया।

फिलिपसन इस समय यहां क्या करने आया है, यह जानने की इच्छा से टपकाम्बे चुपचाप उस का पीछा करने लगा। उसने देखा कि फिलिपसन एक अंधेरे कुंज में अपने घोड़े को बांध कर आगे बढ़ गया है और महल की सीधी सड़क पर न जाकर बाईं ओर को चला गया है। टपकाम्बे को मालूम था कि ऐमी का शयनागार उसी तरफ़, ऊपर की मंज़िल पर है। वह इस महल के एक एक कमरे से अच्छी तरह परिचित था। इस वक़्त उस कमरे के रोशनदानों में से हल्का हल्का प्रकाश भी दिखाई दे रहा था। फिलिपसन उस कमरे के नीचे जाकर खड़ा होगया। कुछ क्षणों तक इधर उधर देखते रहने के बाद फिलिपसन ने बाग़ के एक वृक्ष के नीचे से एक सीढ़ी उठा कर महल की दीवार के साथ लगा दी। महल का यह भाग बाग़ के बहुत निकट था। इस के बाद वह शीघ्रता से इस सीढ़ी पर से होकर कमरे के अन्दर प्रविष्ट हो गया। थोड़ी ही देर बाद वह पुनः नीचे आता हुआ दिखाई दिया। टपकाम्बे ने देखा, इस वार काला लबादा ओढ़े हुए एक

और व्यक्ति भी उसके साथ है और फिलिपसन उसे सहारा देकर बड़ी सावधानता से नीचे उतार रहा है। क्रमशः ये दोनों नीचे पहुँच गए और फिलिपसन ने वह सीढ़ी उठा कर बाग़ की झाड़ियों में छिपा दी। इस के बाद वे दोनों बाग़ में जाकर ओझल होगए। थोड़ी देर बाद टपकाम्बे के सधे हुए कानों को दूर पर घोड़े के टापों की आवाज़ बहुत धीमेरूप में सुनाई पड़ी। वह समझ गया कि ऐमी फिलिपसन के साथ घर से निकल भागी है।

टपकाम्बे को कुछ सूझ न पड़ा कि इस दशा में वह क्या करे। वह स्वयं भी तो ऐमी को फ़ाल्सपार्क के लिए इसी प्रकार भगा ले जाना चाहता था। जो कुछ भी हो, उसे इस बात का तो पूर्ण सन्तोष होगया कि अब रेनाल्ड ऐमी को अपने साथ नहीं ले जा सकेगा। वह अपने घोड़े के निकट आया और उस पर सवार होकर सीधे मार्ग से महल के आंगन में इस तरह प्रविष्ट हुआ, जैसे वह कहीं दूर से सीधा ही यहां चला आरहा है। उसने थामस का वह पत्र उसकी पत्नी को देदिया।

घर के नौकरों के बहुत कहने पर भी टपकाम्बे ने रात को वहां ठहरना मंजूर न किया। उस का काम समाप्त होगया था। ऐमी तो यहां थी ही नहीं, जिसे अब किसी ढंग से वह फ़ाल्स-पार्क लेजाने का प्रयत्न करता। इस लिए वह उसी वक़्त वापिस लौट चला। उसे अभी तक यह समझ नहीं आरहा था कि ऐमी को फिलिपसन के साथ जाते देख कर भी जो उसने उस काम में बाधा नहीं डाली, वह उसने अच्छा किया या बुरा। कभी कभी वह

सोचता था कि थामस की प्रसन्नता के लिए जिस तरह भी सम्भव होता, मुझे ऐमी को अपने साथ ही ले जाना चाहिए था। ख़ैर, जो होना था, वह तो हो ही चुका था।

जब टपकाम्बे काफ़ी राह चल कर, पानी पीने के लिए मार्ग की किसी सराय में उतरा तो इस के थोड़ी देर बाद ही उसे किराये की एक घोड़ागाड़ी हिएटौक की तरफ़ जाती हुई दिखाई दी। उसने देखा, इस गाड़ी में रेनाल्ड बैठा है। इस वख़्त रेनाल्ड को हिएटौक की तरफ़ जाते देख कर टपकाम्बे को बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा, यह भलामानस वहां जाकर अब खूब उल्लू बनेगा!

अब मुझे ऐमी की बात करनी चाहिए। उस समय के बाद से, जब उस ने सब ओर से हताश होकर चेचक की बीमार नैनी का चुम्बन ले लिया था, ऐमी और उस की मां में खुल कर कोई बात-चीत नहीं हुई। उस बात को अब करीब ४८ घण्टे बीत चुके हैं। श्रीमती थामस का विचार था कि आज रात तक रेनाल्ड आजायगा और फिर उस की सलाह से इस बिदकी हुई लड़की को वश में करने का कोई उपाय ढूंढ लिया जा सकेगा। ऐमी को भी यह ज्ञात होगया था कि आज उस के पति के आने की पूरी सम्भावना है, इस लिए वह बड़ी उदास होकर चुपचाप अपने कमरे में बैठी थी। क्रमशः रात होगई। ऐमी ने कमरे का लैम्प जला लिया और दरवाज़ा बन्द कर के अन्दर बैठ गई। यह विचार करके कि अब रेनाल्ड आने ही वाला है, उस का डर प्रतिक्षण बढ़ता जाता था। उसने अपने दिल में निश्चय कर लिया

था कि चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय, वह अपने कमरे का दरवाज़ा नहीं खोलेगी। वह इस समय कुछ कुछ बुखार-सा भी अनुभव कर रही थी।

करीब ६½ बजे उसे ऐसी आवाज़ आई, जैसे कोई बाहर से उस के कमरे का किवाड़ खटखटा रहा हो। ऐमी चौंक गई। एक क्षण के लिए उसे विश्वास होगया कि रेनाल्ड आ पहुँचा, परन्तु अगले ही क्षण यह जान कर उसके आश्चर्य की सीमा न रही कि यह खटखटाहट दरवाज़े पर नहीं, अपितु बाहर की खिड़की पर की जा रही है। वह कुछ समझ न सकी कि यह क्या मामला है। वह अपने स्थान से चल कर खिड़की के बिल्कुल निकट जा खड़ी हुई।

इसी समय उसे बाहर से बड़ी धीमी आवाज़ में सुनाई दिया; कोई कह रहा था—"ऐमी! ऐमी! दरवाज़ा खोलो। मैं आया हूं।"

ऐमी के हर्ष की सीमा न रही। उस का चेहरा खुशी के मारे खिल उठा। उस ने आवाज़ किए बिना शीघ्रता से दरवाज़ा खोल दिया और फिलिपसन कमरे के अन्दर प्रविष्ट होगया।

ऐमी ने आग्रहपूर्ण उत्सुकता के साथ फिलिपसन की छाती पर अपना सिर रख दिया; जैसे कोई बच्चा मां के वियोग में घण्टों तक रोते रहने के बाद अचानक उसे अपने नज़दीक पा कर उस से चिपट जाय। उस ने बड़े आश्वासन के साथ कहा—"ओह, चार्ली! मैं तो समझी थी कि तुम मुझे बिल्कुल भूल गए!"

इस समय बहुत जल्दी करने की आवश्यकता थी, इस लिए

फिलिपसन ने संक्षेप में सभी बातें बता कर ऐमी को अपने साथ चलने के लिए तैयार होजाने को कहा और इस के दो तीन मिनट के बाद ही वह काला लबादा ओढ़ कर टपकाम्बे को सीढ़ियों से उतरती हुई दिखाई दी थी।

उधर अपने पति की घातक बीमारी का समाचार पा कर श्रीमती थामस बहुत चिन्तित होगई थी। उसे ज्ञात था कि अब शीघ्र ही रेनाल्ड के आने की भी सम्भावना है। परन्तु कुछ देर तक विचार करने के बाद वह इसी परिणाम पर पहुँची कि अब उसे रेनाल्ड के आने की प्रतीक्षा न कर के इसी वक़्त फाल्सपार्क की ओर रवाना होजाना चाहिए। उसे ज्ञात था कि ऐमी को देख कर थामस को बड़ी शान्ति प्राप्त होती है, इस लिए उस ने उसे भी अपने साथ ही लेजाने का निश्चय किया। वह पेमी के कमरे के निकट पहुँची। जब उसने दरवाज़ा खटखटाया तो वह अन्दर से बन्द मिला। श्रीमती थामस ने दो तीन बार ज़ोर ज़ोर से द्वार खटखटाया, परन्तु अन्दर से कोई जवाब न मिला। तब उसने कहा—"पेमी! सोगई क्या? मैं हूँ, दरवाज़ा खोलो।"

इस पर भी दरवाज़ा न खुला। श्रीमती थामस को चिन्ता हुई कि बात क्या है। अपने एक नौकर को बुला कर उन्हों ने उसे खुफ़िया तौर से दरवाज़ा तोड़ने की आज्ञा दी। बड़ी कठिनता से दरवाज़े के कब्ज़े खोल कर किवाड़ खोला गया। अन्दर जाकर देखा तो वहां कोई नहीं था। चिड़िया उड़ गई थी।

श्रीमती थामस को मानो लकवा मार गया। कुछ देर तक

उन्हें कुछ सूझा ही नहीं। इस के बाद इस घटना पर विचार कर के वह इस परिणाम पर पहुँची कि ऐमी अपने पिता की बीमारी का समाचार जान कर सम्भवतः इस भय से कि कहीं मैं उसे फ़ाल्सपार्क जाने से रोक न दूँ, मुझे इत्तला दिए बिना ही वहां चली गई है। यह सोच कर उसे कुछ शान्ति प्राप्त हुई। अपने उस नौकर को यह आदेश देकर कि वह ऐमी के इस तरह चले जाने की बात किसी से न कहे, वह अपनी फिटन पर सवार हो कर फ़ाल्सपार्क के लिए रवाना हो गई।

वह बहुत चिन्तित थी। इस विवाह का परिणाम अब उसे शुभ प्रतीत नहीं हो रहा था। उधर उस का पति इसी घटना से बीमार हो गया था। उसे थामस की ब्रिस्टल-यात्रा का समाचार भी मिल गया था, और वह जानती थी कि थामस की आज की चिन्ता-जनक दशा का वास्तविक कारण उस की यह ब्रिस्टल-यात्रा ही है। इधर उस की पुत्री के हृदय पर जो कुछ बीत रहा था, उस से भी वह अनभिज्ञ नहीं थी। साथ ही उसे इस बात की चिन्ता भी हो रही थी कि उसने खुद ही तो चिट्ठी लिख कर अपने जामाता को घर पर बुलाया था, और उसे विश्वास दिलाया था कि वह और ऐमी इस अवसर पर अवश्य ही हिण्टौक में होंगे, परन्तु हो यह भी नहीं सका।

इसी समय सड़क पर दूसरी ओर से आती हुई एक घोड़ा-गाड़ी पर श्रीमती थामस के कोचवान की निगाह पड़ी। श्रीमती थामस के निर्देशानुसार नज़दीक आने पर वह गाड़ी रुकवा

ली गई। इस गाड़ी में रेनाल्ड आरहा था। श्रीमती थामस ने उसे अपने पास बुलाया और नमस्कार आदि के बाद कहा—"अन्दर आजाओ, मैं तुम से एकान्त में कुछ कहना चाहती हूँ।"

और सब लोग वहां से हट गए। श्रीमती थामस ने पूछा—"तुम्हें इतनी देर क्यों हो गई?"

"कोई न कोई बाधा आती ही गई। मेरा ख्याल तो आठ बजे तक ही आप के यहां पहुँच जाने का था। मैं आप के पत्र के लिए बड़ा कृतज्ञ हूँ। उम्मीद है—"

श्रीमती थामस बहुत जल्दी में थीं। उन्हों ने बीच में ही रोक कर कहा—"मैं तो अपने पति के पास जा रही हूँ; डाक्टर ने लिखा है कि उन की हालत चिन्ताजनक है। इस बीच में तुम पेमी से मिलने का प्रयत्न बिल्कुल न करना। इस के अनेक कारण हैं, जिन्हें मैं पत्र में नहीं लिख सकती थी।"

रेनाल्ड चुपचाप खड़ा रहा। उसकी सास भी कुछ देर तक चुप रही; उस के बाद बड़ी धीमी आवाज़ में आजकल की अनेक बातें कह कर उसने रेनाल्ड को यह भी बता दिया कि पेमी का हृदय एक और नवयुवक की तरफ़ आकृष्ट होगया है। इस लिए यदि इस दशा में रेनाल्ड उस से मिलने का प्रयत्न करेगा तो इस का कोई भयंकर परिणाम हो जाना भी असम्भव नहीं है। अन्त में उसने कहा—"आज तुम्हारे आने का समाचार सुन कर ही पेमी अपने पिता के पास भाग गई है। परन्तु मुझे विश्वास है कि यदि हम लोग बुद्धिमत्ता और धैर्य्य से काम लेंगे तो वह शीघ्र

ही उस नवयुवक को भूल जाएगी और अपनी इस ग़ल्ती का प्रायश्चित कर लेगी।"

— मां अपनी लड़की के बारे में ये सब बातें किस तरह सुना गई, यह कहना कठिन है। परन्तु उस दशा में इस से बढ़ कर अधिक बुद्धिमत्ता की कोई और बात हो ही न सकती थी। असल में इन पिछले दिनों की परिस्थितियों और समस्याओं ने श्रीमती थामस के हृदय पर बहुत-सा बोझ लाद दिया था,—उन्हें बड़ा दुखी बना दिया था। इसी से पुत्र के समान जामाता के सन्मुख आज ये सब बातें रख देने से उन के हृदय का बोझ मानों बहुत हल्का होगया।

यह सब कुछ सुन कर रेनाल्ड के हृदय पर क्या बीती, इसकी कल्पना आसानी के साथ की जा सकती है। मगर वह एक बहुत ही समझदार, नीतिज्ञ, सभ्य और सधा-हुआ आदमी था। एक गहरा और ठंडा श्वास लेकर उसने असाधारण शान्ति के साथ इतना ही कहा—"इस तरह की बातें दुनियां में होती ही रहती हैं! मुमकिन है कि जब उसे अपने प्रति मेरे हार्दिक भावों का परिचय मिले तो मेरे प्रति उसका रुख भी बदल जाय। ख़ैर, इस सम्बन्ध में इस वक़्त मैं कुछ नहीं कहना चाहता। हां, आज रात को आप के यहां मुझे सोने के लिए एक बिस्तरा तो मिल सकेगा न?"

"आज रात को? ज़रूर। कल प्रातःकाल ही तुम अपने घर को लौट जाओगे न? अपने पति की बीमारी के कारण आज हम दोनों ही यहां ग़ैरहाज़िर रहेंगे, इसके लिए माफ़ करना।"

"जी हां। मैं प्रातःकाल अवश्य वापिस लौट जाऊँगा। आप का पत्र आने पर मैं चिट्ठी लिखूँगा और ऐमी को भी अवसर आने पर पत्र लिख सकूँगा। ईश्वर करे कि वह अवसर जल्दी आए। मुमकिन है कि मैं शीघ्र ही उसे बहुत अधिक सम्मानित दशा में देख सकूँ।" रेनाल्ड के मुंह पर इस समय आशापूर्ण महत्वाकांक्षाओं के-से भाव दिखाई दे रहे थे।

(७)

रात के करीब एक बजे श्रीमती थामस फालसपार्क पहुँची। वहां किस्मत की दोहरी मार उन की प्रतीक्षा में थी। ऐमी वहां नहीं पहुँची थी। यह स्पष्ट होगया कि वह कहीं और भाग गई है। साथ ही उस के पति की दशा इस समय तक बहुत बिगड़ गई थी और डाक्टर लोग अब उस के जीवन मे पूरी तरह निराश हो चुके थे।

थामस इस समय बहुत कमज़ोर प्रतीत हो रहा था। दवाइयां उस पर असर ही नहीं करती थीं। फिर भी अनेक डाक्टर वहां पर मौजूद थे। यह स्पष्ट था कि अब वह थोड़ी ही घड़ियों का मेहमान है। डाक्टरों ने, यहां तक कि टपकाम्बे ने भी कई बार पादरी को बुला कर प्रार्थना करवाने की बात कही थी, मगर अपनी इस अन्तिम दशा में भी उसने पादरी का बुलाना स्वीकार नहीं किया। अब अपनी पत्नी को देख कर थामस की आंखें भी आंसुओं से तर होगईं। वह उससे बड़े प्रेम के साथ मिला। उस ने पूछा—

"ऐमी कहां है?"

"वह साथ नहीं आ सकी।"

"उसे 'वह' तो नहीं ले गया?"

"नहीं, नहीं। वह कल सुबह ही वहां से वापिस लौट जाएगा, और काफ़ी समय तक यहां नहीं आएगा।"

"तो फिर, ऐमी यहां क्यों नहीं आई! बेपरवाह, निष्ठुर बच्ची मेरी!"

"नहीं, नहीं प्यारे! वह असल में—वह आ ही नहीं सकती थी!"

'क्यों?"

जीवन के इस गम्भीरतम, भयंकरतम और साथ ही पवित्रतम अन्तिम क्षणों में वह अपने पति से कुछ भी छिपा नहीं सकती थी। उसने धीरे धीरे बड़े संक्षेप में ऐमी के भाग जाने की सारी बात कह सुनाई।

यह देख कर उसे अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि इस बात से थामस का चेहरा चमक उठा। उसने कहा—"ओह क्या ऐमी भाग गई! शाबास! बड़ी हिम्मती लड़की है। खूब! आखिर उसने अपने पिता के चुनाव को ही पसन्द किया! आ—हा—हा।"

परन्तु उस की क्षीण हंसी शीघ्र ही खांसी में परिवर्तित होगई और बोलने की थकावट के कारण उस का दम फूलने लगा। डाक्टरों ने इशारा किया कि श्रीमती थामस अब इस अवसर पर उन से अधिक बात न करें।

अगले दिन की प्रातःकाल थामस का देहान्त होगया। उस

प्रान्त में इस मौत की चरचा बरसों तक रही ।

(८)

फिलिपसन पेमी सहित हिएटौक के महल के आंगन से बाहर निकल कर जब नीचे वाली सड़क से आगे बढ़ने लगा तो उन दोनों का सारा उल्लास जाता रहा, और उस का स्थान भयपूर्ण चिन्ता ने ले लिया। दोनों अभी बिल्कुल अननुभवी नवयुवक थे। उन्हें यह नहीं सूझ रहा था कि अब क्या किया जाय । साथ ही अपने इस दुस्साहस की असाधारणता भी अब उन्हें साफ़ साफ़ समझ आने लगी थी। दुनियां जो कुछ नहीं करती, उसे करते हुए भय प्रतीत होना स्वाभाविक ही है। दोनों बिल्कुल चुप थे । रात के सन्नाटे में घोड़ा दौड़ाने की आवाज़ को छोड़ कर वहां और कोई शब्द नहीं हो रहा था। इस घबराहट की-सी दशा में पेमी का बुखार और भी बढ़ गया था, इस लिए कुछ दूरी पर जब एक सराय आई तो वे दोनों उस में उतर पड़े।

सराय के मालिक ने उन्हें एक छोटा-सा कमरा दे दिया और सराय का एक नौकर उन के घोड़े को पानी पिलाने के लिए ले गया। इस कमरे में ज़रा-सा सामान था। एक छोटी सी सिंगार-मेज़, एक कुर्सी और दो चारपाइयां, जिन पर घटिया दर्जे के बिस्तरे बिछे हुए थे। टेबल पर एक लैम्प जल रहा था । पेमी ने अपना लबादा उतार कर मेज़ पर रख दिया और वे दोनों लैम्प के धुंधले से प्रकाश में चुपचाप आमने-सामने बैठ गए। लैम्प की बत्ती बहुत नीची थी, इस लिए उसका प्रकाश बहुत

थोड़ा हो रहा था। थोड़ी देर बाद फिलिपसन उठा और उस ने बत्ती ऊँची कर दी; कमरे का प्रकाश बढ़ गया। लैम्प के पास से अपनी जगह की तरफ़ लौटते हुए फिलिपसन की निगाह ऐमी के मुंह पर पड़ी और वह घबरा कर चिल्ला उठा—"ओहो! हे ईश्वर! तुम्हें तो चेचक निकल रही है!"

ऐमी के मुंह पर सचमुच छोटे छोटे दाने-से दिखाई देने लगे थे। उस ने बड़ी शान्ति से कहा—"ओह, मैं तुम्हें यह बताना भूल गई थी!" इतना कह कर उस ने फिलिपसन को वह सम्पूर्ण घटना संक्षेप से सुना दी कि किस प्रकार अपने पति से बचने के लिए, सब ओर से निराश होकर, उसने चेचक की मरीज़ नैनी का चुम्बन ले लिया था। साथ ही उसने यह भी कहा—"मेरा ख़्याल था कि अब मैं इस बीमारी से बच जाऊँगी, क्यों कि मां ने इस सम्बन्ध में मेरा यथेष्ट उपचार कर दिया था। आज सायंकाल ही से मेरी तबीयत खराब थी, मगर मैं यह नहीं समझ सकी थी कि यह चेचक का आक्रमण है।"

फिलिपसन बहुत अधिक डर गया, और इस भय तथा घबराहट की दशा में, अपरिपक्व होने के कारण, अपने हार्दिक भावों को उगल गया। यदि वह समझदार या कुछ अनुभवी होता तो शायद अपने दिल के इन भावों को वह इतनी स्पष्टता से कदापि प्रकट न करता। उसने कहा—"ओह; तुम्हें चेचक थी, और इस दशा में भी तुम मुझे पकड़े रहीं! अगर मुझे भी यह बीमारी लग जाय तो! ओह, बेचारी ऐमी! तुम्हारे चेहरे पर यह बीमारी कहीं

अपने निशान तो न छोड़ जाएगी !"

उस ने अपने इन मनोभावों का रूखापन कम करने के लिए हंसने का प्रयत्न किया, परन्तु भय के कारण उस की हंसी सूखी "घिग, घिग्" का रूप धारण कर के ही रह गई।

स्त्रियों से, खासतौर से अपनी प्रेयसी से, अपने हृदय के भावों को (उन में भी घृणा या क्रोध के भावों को) छिपा सकना वैसे भी असम्भव होता है, फिर यहां तो फिलिपसन ने छिपाने का प्रयत्न ही नहीं किया था ! ऐमी के हृदय को कड़ी चोट पहुँची। उसने बिल्कुल डूब रही-सी आवाज़ में जवाब दिया—"क्या कहा ? तुम मुझे छूना नहीं चाहते ! मुझ से दूर रहना चाहते हो !—इसी लिए न कि अगर मुझे चेचक निकल आए तो मैं बदसूरत हो जाऊँगी !"

"ओह, नहीं, हर्गिज़ नहीं ! मगर मैं सोच रहा हूँ कि कहीं इस तरह घर से भाग कर हम लोगों ने ग़ल्ती तो नहीं की। ऐमी ! अगर तुम्हारा विवाह न हो चुका होता, तब भी इस तरह भागने का कोई मतलब हो सकता था। अब तो कानून की दृष्टि से भी, जब तक तुम्हारा पति जीवित है, तुम मेरी नहीं हो सकतीं। खासतौर से इस बीमारी की हालत में तो तुम्हारा घर लौट जाना ही ठीक रहेगा।"

ऐमी का दिल टूट गया। उस ने स्त्रियोचित साहस के साथ इस भीरु नवयुवक को फटकार बताई—"यही तुम्हारा वह प्रेम है जिस की तुम मेरे सामने डींगें हाँका करते थे ? ओह,

अगर तुम्हें प्लेग भी निकल आती, अगर तुम कोढ़ी भी हो जाते, तो भी मैं तुमसे हर्गिज़ पृथक् न होना चाहती ! मैं तो—" ऐमी का गला भर आया, वह आगे न बोल सकी।

"नहीं, नहीं ऐमी ! तुम मेरा भाव नहीं समझीं !"

मगर ऐमी ने इस कायर प्रेमी के साथ इस सराय में अब एक क्षण के लिए भी ठहरना पसन्द नहीं किया। वह उठ खड़ी हुई और लबादा ओढ़ कर बाहर निकल आई। घोड़े को अभी नौकर आंगन में ही टहला रहा था। ऐमी उसके पास गई और उस की मदद लेकर घोड़े पर सवार होगई। फिलिपसन बुत की तरह चुपचाप उसके पीछे पीछे वहां तक पहुँचा। उस की आकृति से यह प्रतीत होता था कि इस समय वह अपना कर्तव्य सोच रहा है। इसी समय ऐमी ने उससे कहा—"फिलिपसन ! मुझे घोड़ा चलाना नहीं आता, इस लिए घोड़े की रास पकड़ कर मेहरबानी करके मुझे मेरे घर तक तो छोड़ आओ। तुम रास पकड़े हुए आगे आगे चलोगे, इस लिए तुम्हें बीमारी का डर भी नहीं रहेगा। ईश्वर के भरोसे पर मैं अब अपने घर ही जाऊँगी। मेरी जिस बीमारी ने 'तुम्हें' मुझ से डरा दिया है, उस से आख़िर 'वह' भी तो डरेंगे और इस तरह मैं 'उन से' बच जाऊँगी !"

फिलिपसन ने भी अब घोड़े पर सवार होने का आग्रह नहीं किया। वह घोड़े की रास पकड़ कर उसे हिएटौक की तरफ़ ले चला। राह भर में दोनों एक दूसरे से कुछ नहीं बोले। रास्ते भर में ऐमी चुपचाप आंसू बहाती गई। वह फिलिपसन से बहुत

अधिक स्नेह करती थी; यहां तक कि उसे इस समय इस बात से भी दुख हो रहा था कि उसने फिलिपसन को इस तरह फटकार क्यों बताई। उस बेचारी का दिल टूट गया था। उधर फिलिपसन मार खाए हुए बेवकूफ़ों की-सी शकल बना कर घोड़ा थामे आगे बढ़ रहा था। कुछ देर बाद वे हिण्टौक में पहुँच गए।

ऐमी ने कहा—"क्या तुम मेरे लिए वह सीढ़ी पुनः ला सकोगे?"

फिलिपसन ने सीढ़ी लाकर खड़ी कर दी। परन्तु वह ऐमी के निकट नहीं आया। ऐमी सीढ़ी के निकट आने के लिए बढ़ी ही थी कि उस ने कहा—"ऐमी! नमस्कार।"

"नमस्कार!" कह कर ऐमी ने अभ्यासवश अपना मुंह फिलिपसन की तरफ़ बढ़ा दिया। पहले भी तो उसने कितनी ही बार फिलिपसन से विदाई लेते हुए इसी तरह उसकी तरफ़ मुंह बढ़ाया है। उन अवसरों पर वह कितने आग्रह, स्नेह और आवेश के साथ उसका चुम्बन लिया करता था! मगर आज?—आज ऐमी ने अभ्यासवश अपना मुंह तो उस की तरफ़ बढ़ा दिया, परन्तु वह कतरा कर और भी पीछे हट गया।

ऐमी को ऐसा अनुभव हुआ कि उस की छाती के अन्दर जैसे किसी ने छुरी चला दी हो। वह कांप गई, और इस के बाद शीघ्रता से सीढ़ी पर चढ़ गई। फिलिपसन नीचे खड़ा था। ऐमी ने उसकी तरफ़ मुड़ कर भी नहीं देखा। वह कमरे के अन्दर प्रविष्ट होगई। फिलिपसन ने सीढ़ी उठाते उठाते धीरे से कहा—

"अपनी माता को कह कर इसी वक़्त डाक्टर को बुला भेजो!"

मगर ऐमी ने कोई जवाब न दिया। अन्दर पहुँच कर उस ने खिड़की बन्द कर ली।

ऐमी अपने बिस्तरे पर टूटी हुई शाखा की तरह गिर गई और सुबकियां भर भर कर रोने लगी। उस का दिल इस वक़्त भी यही कह रहा था कि इस सारी घटना में फिलिपसन का कोई कसूर नहीं। वह क्यों मुफ़्त में अपने को इस बीमारी का शिकार बनाता। वह बेचारी अब भी अपने को ही दोष दे रही थी कि मैं अभागी उस दिन नैनी के पास गई ही क्यों।

घर के किसी आदमी को मालूम नहीं पड़ा कि ऐमी अपने कमरे में लौट आई है। इस समय उस की जो मानसिक दशा हो रही थी, उस में उसे अपने उपचार की चिन्ता हो ही कहां सकती थी। इस लिए वह उसी तरह रोती हुई दशा में अपने बिस्तरे पर अकेली पड़ी रही। उस का बुखार बढ़ गया, मगर उसे इस बात की कोई चिन्ता ही नहीं थी।

करीब एक घण्टा बीत जाने के बाद ऐमी को प्यास अनुभव हुई। वह उठ खड़ी हुई और लड़खड़ाते हुए दरवाज़े के निकट पहुँची। दरवाज़े की दशा देख कर उसे ज्ञात होगया कि इसे ज़बरदस्ती तोड़ा गया है। वह किवाड़ खोल कर सीढ़ियों से नीचे उतरी और आहार-गृह में पहुँची। वहां उसे यह देख कर अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि इतनी रात बीत जाने पर भी एक व्यक्ति टेबल के निकट बैठ कर भोजन कर रहा है। ऐमी ने देखा, और वह

पहिचान गई कि यह रेनाल्ड है।

कमरे में कोई नौकर नहीं था। इस लिए ऐमी रेनाल्ड के निकट पहुँची और किसी तरह की भूमिका बांधे विना, यहां तक कि नमस्कार भी न कर के उस ने पूछा—"अम्मा कहां हैं?"

रेनाल्ड ने बड़ी मधुर आवाज़ में कहा—"तुम्हारे पिता जी के पास गई हैं।"

इसी समय उस की निगाह ऐमी के चेहरे पर पड़ी और वह भोजन छोड़ कर उठ खड़ा हुआ। अपनी पत्नी के निकट आ कर उस ने कहा—"हैं! यह क्या—"

"जी हां, मुझे चेचक निकल रही है! मैंने जान बूझ कर यह बीमारी सिर्फ़ इसी उद्देश्य से सहेड़ी है कि मैं नहीं चाहती थी कि तुम मेरे पास आओ।"

रेनाल्ड ऐमी से उम्र में सोलह साल बड़ा था। उस ने बड़ी दया के साथ कहा—"ओह, तुम्हें इस समय इस तरह खड़े न रहना चाहिए। मुझ से डरो नहीं—मैं तुम्हें उठा कर ऊपर, तुम्हारे कमरे में लेजाता हूँ। घबराओ नहीं, मैं अभी डाक्टर को बुलाने जाता हूँ।"

ऐमी ने चीख कर कहा—"ओह, तुम्हें मालूम नहीं, मैं कैसी लड़की हूँ! मेरा एक प्रेमी था, मगर वह अब चला गया है! मैंने उसे नहीं छोड़ा, वही मुझे इस तरह दुत्कार गया है! मैं उसे अब भी चाहती हूँ, मगर वह अब मुझे नहीं चाहता, क्यों-कि मुझे चेचक निकल आई है! उस ने मेरा चुम्बन भी अस्वीकार

कर दिया, क्यों कि मुझे चेचक निकल आई है !"

"उस ने अस्वीकार कर दिया ?—तो सचमुच वह बहुत ही कायर और अभागा व्यक्ति है। ऐमी, जब से हमारा विवाह हुआ है, मैंने तुम्हें एक बार भी चुम्बन नहीं किया। क्या आज तुम मुझे इस की आज्ञा दोगी ?"

ऐमी रेनाल्ड से इस तरह का निकटतम सम्बन्ध कदापि स्थापित नहीं करना चाहती थी। मगर पुरुष का साहस परखने में स्त्रियों को सदैव आनन्द आता है। विशेष तौर से, ऐमी का अपना प्रेमी भी जो साहस नहीं कर सका था, उसे कोई और व्यक्ति, जिससे उसने आज तक प्रेम नहीं किया, किस तरह कर सकता है, यह आज़माने के लिए वह सहसा तैयार हो गई। उसने उत्तर दिया—"यदि तुम में साहस है तो बड़ी खुशी से !—मगर इस बात का ख्याल रक्खो कि मेरे इस एक चुम्बन के बदले में, मुमकिन है कि तुम्हें अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़े !"

रेनाल्ड खुश हो गया। वह आगे बढ़ा और बड़े ही उल्लास-पूर्ण प्रेम के साथ उसने ऐमी का एक चुम्बन ले लिया और इसके बाद कहा—"अभी और इज़ाज़त है ?"

ऐमी ने सिर हिला कर 'नहीं' का इशारा किया, और वह अलग होकर दूर हट गई। मगर यह स्पष्ट था कि रेनाल्ड के प्रति उसका सम्पूर्ण विरोधभाव इस एक ही चुम्बन ने पूरी तरह से धो डाला है। रेनाल्ड ने आवाज़ देकर घर के दो एक नौकरों को बुलाया और उन की मदद से ऐमी को उसके बिस्तरे पर लिटा

किया जाता था, परन्तु रेनाल्ड के पत्र बहुत बड़े और स्नेहपूर्ण अभिभावकता से भरे होते थे।

एक दिन रेनाल्ड के पत्र द्वारा ऐमी को यह समाचार मिला कि आजकल सम्राट की उस पर बड़ी कृपादृष्टि है और सम्राट ने उस के किसी सम्बन्धी से यह कह भी दिया है कि वह उसे शीघ्र ही 'लार्ड' बना देंगे। रेनाल्ड ने यह भी लिखा था कि "लार्ड-शिप" के साथ ही साथ उसे इङ्गलैण्ड की अनेक बड़ी जगीरों में से एक जागीर भी मिलने वाली है। उस की राय है कि वह 'वैसेक्स' की जागीर ले।"

अपने पति का यह पत्र पढ़ कर ऐमी को कुछ खुशी हुई या नहीं, यह बता सकना ज़रा कठिन है। वह स्वयं एक बड़ी भारी जागीर की उत्तराधिकारिणी थी, इस लिए जागीर का तो शायद उसे कोई विशेष प्रलोभन न होता। हां, अपने पति के लार्ड बनने के साथ ही साथ वह भी "माई लेडी" बन जाएगी, यह सम्मान सचमुच किसी नारी के लिए बहुत बड़ा प्रलोभन होसकता था। परन्तु ऐमी उन स्त्रियों में से नहीं थी, जो धन या सम्मान को दिल से अधिक कीमती समझती हैं। रेनाल्ड लार्ड बनता है या नहीं, इस से ऐमी को उतना वास्ता नहीं था, जितना वह इस बात से सन्तुष्ट थी कि उस का पति सचमुच बहुत ही दयालु, भद्र और सहनशील है।

थामस का देहान्त हुए अब चार मास बीत गए थे। श्रीमती थामस अब भी इस ज़िद्द पर अड़ी हुई थीं कि वह एक साल तक

ऐमी को रेनाल्ड के यहां नहीं भेजेंगी। उन्हें ज्ञात था कि उन दोनों में पत्र-व्यवहार होता है। वह सोचती थीं कि बस, इतना ही काफ़ी है।

आखिर एक दिन ऐमी ने साहस कर के अपनी माता से कह ही दिया—"अम्मा! उन से इतनी लम्बी प्रतीक्षा करवाना क्या अनुचित नहीं है?"

मां ने बहुत ही हैरान होकर कहा—"क्या कहा! तुम अपने पिता के अन्तिम भावों का सम्मान नहीं करना चाहती!"

ऐमी ने जल्दी से कहा—"नहीं अम्मा, मेरा यह मतलब नहीं था। मगर मैं चाहती हूँ कि—कि"

ऐमी अपना वाक्य पूरा न कर सकी। बात वहीं समाप्त हो गई।

श्रीमती थामस ने अपनी पति की यादगार में हिएटौक में ही एक चर्च और धर्मशाला आदि बनवानी शुरू कीं। अब उस का अधिकांश समय इन्हीं इमारतों के निर्माण की देखभाल में कटता था। चर्च की लम्बी लम्बी आर्चों की बनावट देखने में ऐमी को भी बड़ा आनन्द आता था। इसी चर्च के सम्बन्ध में किसी ऐंजीनिअर से कुछ सलाह आदि लेने के लिए श्रीमती थामस को लण्डन में जाना पड़ा और वह ऐमी को हिएटौक में ही छोड़ गईं। उसके बाद मां और बेटी सैर के उद्देश्य से अनेक बार आस-पास के रमणीक स्थानों पर आते जाते रहे। इसी तरह उन के दिन कटने लगे।

ऐमी अब बड़ी हो गई थी। उस के स्वभाव में से बचपन के सम्पूर्ण चिन्ह अब जाते रहे थे; मुंह पर एक खास तरह की गम्भीरता और उत्तरदायित्व के भाव आगए थे। अब वह उच्छृंखल प्रकृति की नवयुवती नहीं रही थी।

चार महीने और निकल गए। इस के बाद श्रीमती थामस को रेनाल्ड का एक पत्र मिला, इस में लिखा था कि यदि वह ऐमी को उस के पास भेजने की कृपा कर सकें तो यह सब से अच्छा है। परन्तु यदि इस तरह अपनी पुत्री को भेज कर उन्हें अकेले में जी न लगने का अन्देशा हो तो वह उसी को अनुमति दें कि वह अब कुछ समय के लिए हिएटौक में आकर उन्हीं के पास रह सके।

श्रीमती थामस ने अपने जामाता के इस पत्र का अभी कोई जवाब नहीं दिया था कि एक दिन दोपहर के समय ऐमी को नंगे सिर, उदास भाव से बाग में अकेले ही घूमते देख कर उन्हें कुछ सन्देह हुआ और उन्होंने ऐमी को बुला कर यकायक, इस तरह से जैसे उन्हें कोई बात मालूम हो गई हो, पूछा—"अपने पिता के देहान्त के बाद से तुम कभी रेनाल्ड से मिली हो?"

ऐमी ने शर्मा कर जवाब दिया—"हां अम्मा!"

"खूब! तुम ने अपने पिता की अन्तिम इच्छा का सम्मान करना भी उचित नहीं समझा। इस बात का मुझे बड़ा दुख है।"

"मगर अम्मा! पिता जी ने इस बात के लिए अठारह साल की मियाद ही रक्खी थी। तब तक मैं उन से मिलने कभी नहीं

गई। तुम ने एक साल की अवधि खुद ही बढ़ा ली है!"

"ओह, तो तुम मिलने भी जाती रही हो! उस से कब कब मिलती रही हो?"

"अच्छा मां, छिपाने की क्या बात है। उन्हों ने मुझे एक चिट्ठी में लिखा था कि मैं उनकी हूँ। इस लिए यदि मैं किसी को बताए बिना भी उन से मिलूँगी तो इस में किसी तरह की बुराई नहीं। ख़ासतौर से आप के सम्बन्ध में तो उन्हों ने मुझे लिख भी दिया था कि, क्यों कि उन्हें इस बात से तकलीफ़ होती है, इस लिए इस सम्बन्ध में उन्हें कुछ भी बताने की ज़रूरत नहीं। मुझे भी यही बात ठीक प्रतीत हुई।"

"अच्छा, तो फिर?"

"आज से पांच महीने पहले, जब आप लण्डन गई थीं, तो मैं उन से मिलने कैम्ब्रिज गई थी।"

"और उससे मिलीं? वहां से तुम लौटीं कब?"

"अम्मा! उस दिन उन से बातचीत करते करते देर बहुत होगई थी। उस के बाद जब मैं लौटने लगी तो उन्हों ने कहा कि रात होने वाली है और सड़क खराब है, इस लिए आज यहीं रह जाओ। तुम भी तो उस दिन घर में नहीं थीं, इस लिए मैं वहीं सो गई और अगले दिन यहां वापिस आई।"

बेचारी विधवा ने क्षोभ से चिल्ला कर कहा—"बस, चुप रह! मैं कुछ नहीं सुनना चाहती। अपने स्वर्गीय पिता के भावों का तुझे इतना ही ख़्याल है!" मगर दो तीन क्षणों के बाद खुद ही

उन्हों ने पूछा—"उस के बाद तुम कब मिलीं ?"

"आज से सिर्फ़ पन्द्रह दिन ही पहले ।"

"सिर्फ़ पन्द्रह दिन ही पहले ? तुम कुल मिला कर उन्हें कितनी बार मिली होगी ?"

"अम्मां, मैं तुम्हें विश्वास दिला सकती हूँ कि मैं उनसे बारह बार से अधिक नहीं मिली।"

"बारह बार ! मूर्ख कहीं की; यह क्या कोई छोटी संख्या है ?"

ऐमी ने अपनी सफ़ाई पेश करनी शुरु की—"दो बार तो मैं उन्हें अचानक ही मिल गई न। मेरी मन्शा हर्गिज़ नहीं थी। एक बार जब हम ऐबल का पुराना किला देखने गए थे, तो वहां एक टूटे हुए बुर्ज पर अचानक हम दोनों का मेल होगया था और दूसरी बार, मैलचैस्टर में भी एक होटल के बाहर अचानक ही वह मुझे मिल गए थे ।"

"ओहो, धोखेबाज़ कहीं की ! उसी दिन न, जब मैलचैस्टर में तुम रात के बारह बजे घर वापिस आई थीं और मेरे पूछने पर तुमने कह दिया था कि मैं रात की चांदनी में वहां के शान्दार चर्च का नज़ारा देख रही थी, इसी लिए लौटने में देर होगई ! अब बताओ, वही तुम्हारा चर्च था !"

"नहीं अम्मां, मैं ने झूठ नहीं कहा था। उस दिन मैं उन के साथ चांदनी में चर्च तक भी गई थी।"

"ऐमी, तुमने इन अभागे दिनों में भी मुझे धोखा दिया ! मुझे इस बात की कभी कल्पना तक नहीं थी।"

अपनी मां को अधिक दुखी देख कर ऐमी अपनी दोनों बाहुएं उस के गले में डाल कर उसकी छाती पर लेट गई और अपना मुंह उस के मुंह के अत्यन्त निकट ले जाकर कहने लगी—"तो फिर मेरी प्यारी अम्मा ! तुम ने मेरा उन से विवाह ही क्यों किया था !"

माता ने कोई जवाब नहीं दिया। ऐमी ने अब के बहुत ही गम्भीर होकर परन्तु बड़ी शान्ति से कहा—"तुम्हारी बात मानना मेरा कर्तव्य अवश्य है, परन्तु उन की बात मानना मेरा उस से भी बड़ा कर्तव्य है !"

श्रीमती थामस ने एक ठंडा श्वास लेकर कहा—"अब तुम जानो और तुम्हारा पति जाने। मेरा काम समाप्त हुआ। मैं उसे लिख देती हूँ कि वह आकर तुम्हें ले जाए।"

उसी दिन ऐमी की माता ने इसी आशय की एक चिट्ठी, आवश्यकता से अधिक सूखे शब्दों में, रेनाल्ड के पास भेज दी।

रेनाल्ड हिण्टौक में आया और उसने ऐमी को "माई लेडी" कह कर सम्बोधित किया। वह अब लार्ड बन चुका था।

थोड़े ही दिनों के बाद रेनाल्ड "अर्ल आफ़ वैसेक्स"❀ बन गया और ऐमी "काउण्टेस ऑफ़ वैसेक्स" कहलाई जाने लगी। उन का जीवन बड़ा सुखमय होगया। पति-पत्नी दोनों एक दूसरे

❀ यह इङ्गलैंड का एक बहुत बड़ा और प्रभावशाली लार्ड होता था।

को असीम स्नेह करते थे और एक दूसरे को पाकर अपने को अधिकतम सौभाग्यशाली मानते थे। ऐमी की प्रसन्नता और सन्तोष का तो पारावार ही नहीं था।

ऐमी का वह छोटा-सा पीला गाउन, जिसे पहिन कर वह अपने विवाह-संस्कार में शामिल हुई थी, हिस्टौक के प्राचीन किले में आज तक भी सुरक्षित है।

—नारी इस तरह की होती है! मगर नहीं, मैं इतनी विस्तृत स्थापना कैसे करूँ; मुझे कहना चाहिए—ऐमी इस तरह की थी।

सारंगी वाला

थोड़ी देर हुई, मेरे यहां गप्पों का बाज़ार खूब गरम था। अनेक पुराने साथी मुद्दत के बाद अचानक आ जमा हुए थे। आसपास से कुछ पड़ोसी भी आगए थे। बूढ़ों के लिए अपनी नई जवानी के दिनों की याद, बातचीत का सब से मनोरंजक विषय होती है;—नए ज़माने को कोसना और पुराने (मगर बहुत पुराने नहीं, अपनी जवानी के) ज़माने की तारीफ़। हम लोग भी यही कर रहे थे। इस में बुराई कुछ नहीं; यह तो मनुष्य का स्वभाव ही है। जवान लोग भी तो यही करते हैं,—वे आपस में मिल कर क्या बूढ़ों की मज़ाक नहीं उड़ाते?

बातचीत के सिलसिले में एक बुज़ुर्ग ने कहा—"आजकल जिधर देखो, उधर नुमाइशें ही नुमाइशें होती दिखाई देती हैं। भला इन नुमाइशों का भी कोई मतलब है। एक ईंट उखाड़ो और उस के नीचे ही दस, बारह नुमाइशें नज़र पड़ जाएंगी! बस, ये प्रदर्शनियां क्या हैं, वायस्कोप का तमाशा हैं! असली प्रदर्शनी तो वह थी जो सन १८५१ में लण्डन के हाइडपार्क में हुई थी। वाह, क्या कहने हैं, उस की प्रदर्शनी के। वह धूम थी कि जो उस के बाद आज तक कभी दिखाई ही नहीं दी। जिधर देखो, उधर उसी की चरचा थी। नुमाइश का नाम लोगों के मुंह पर इस कदर चढ़ गया था कि सब कहीं 'नुमाइशी टोपियां', 'नुमाइशी उस्तरे', 'नुमाइशी घड़ियां'—कहां तक गिनाऊँ, सभी कुछ नुमाइशी ही नुमाइशी बन गया था। यहां तक कि 'नुमाइशी मौसम', 'नुमाइशी औरतें', 'नुमाइशी प्रेमिकाएं' और 'नुमाइशी बच्चे' भी जारी होगए थे। दक्षिणी वैसेक्स के लिए तो वह साल युगान्तर लाने वाला सिद्ध हुआ। उस नुमाइश ने ज़माना ही पलट दिया!"

हमारी उस टोली में क्या क्या बातचीत हुई, यहां यह सब लिखने का मेरा इरादा नहीं है। परन्तु इस सन १८५१ की प्रदर्शनी की याद से मेरे मानसिक नेत्रों के सामने जो दो तीन बहुत ही कौतुहल-जनक मूर्त्तियां घूम गई हैं, उन की वचित्र स्मृति मैं इस जीवन में कभी नहीं भूल सकता।

इन तीनों में ओलामूर सब से अधिक महत्वपूर्ण था। वह एक "स्त्रियों का आदमी" था। उस के बारे में यही बात मशहूर

थी। पुरुषों को वह आकर्षक प्रतीत नहीं होता था। उन के लिए तो उस की सूरत उबकावट लाने वाली थी। वह अपने को पशुचिकित्सक कहा करता था, परन्तु व्यवहार में वह एक गायक, शोहदा और नाटकी-आदमी ही था। मैलस्टाक करने में वह न जाने कहां से आकर बस गया था। कुछ लोगों ने उस के यहां बसने से पहले उसे ग्रीनहिल के मेले में सारंगी बजाते हुए देखा था।

गांव के बहुत से लोग उसकी असाधारण शक्तियों और उसकी किस्मत को देख कर उससे ईर्ष्या करते थे। उन्हें यह देख कर अचम्भा होता था कि वह स्त्रियों को अपनी तरफ़ किस तरह आकृष्ट कर लेता है। देखने में वह अंग्रेज़ प्रतीत नहीं होता था। उसका रंग जैतूनी-सा था। सिर के बाल घने और काले थे। अपने मुंह और सिर के बालों पर वह क्रीम और विचित्र विचित्र उबटनों का इतना अधिक इस्तेमाल करता था कि उसके बाल हर समय गीले-से दिखाई देते थे। जब वह किसी टोली में पहुँचता तो वहां ख़ास तरह की सुगन्ध-सी फैल जाती। किसी किसी दिन उसके सिर पर घुंघराले और लम्बे लम्बे बाल, बीच की मांग के दोनों तरफ़ करीने से लटकते हुए दिखाई देते। परन्तु वे सदैव नहीं होते थे; इस लिए यही अनुमान करना पड़ता है कि ये बाल नकली थे। बहुत सी लड़कियां उससे एक बार प्रेम करके फिर उससे घृणा करने लग गई थीं, और इन लड़कियों ने उसका नाम "मौप" (सूत का मुट्ठा) रख छोड़ा

था। उसका यह नाम क्रमशः इतना प्रसिद्ध होगया कि लोग प्रायः उसका असली नाम भूल ही गए और सब कहीं वह 'मौप' के नाम से ही बुलाया जाने लगा।

उसकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वह हर समय अपने कन्धे पर एक सारंगी रखता था। यह सारंगी उसकी उम्र के समान ही पुरानी होगी। लकड़ी पुरानी होकर मैली हो चली थी। उसकी पालिश उतरे मुद्दत हो चुकी थी। अनेक जगह से ऊपर का रंग भी पपड़ियों के समान सूख कर उतर गया था और लकड़ी अपने नग्न रूप में दिखाई देने लगी थी। सारंगी के तार और छल्ले सब मैले पड़ चुके थे। परन्तु उन का वह भाग जो बजाने के काम में लाया जाता था, सोने की तरह उज्ज्वल होकर चमकता था। मौप सारंगी बजाने में इतना प्रवीण था कि अपने इस जीवन में उतना अच्छा बजाने वाला और कोई व्यक्ति मैंने नहीं देखा। कुछ तर्ज़ तो उस के खास अपने ही थे, जिन्हें सम्पूर्ण इंगलैण्ड भर में एक भी अन्य व्यक्ति निकाल नहीं सकता था। जिस समय वह सारंगी बजाने लगता, उस समय अपनी आँखें बन्द कर लेता। तब उस के हाथ इतने तेज़ी से घूमने लगते थे कि वे कहीं छूते हुए भी प्रतीत न होते थे। थोड़ी ही देर में वह समा बंध जाता कि राह चलते लोग अपना अपना काम छोड़ कर उस का राग सुनने के लिए ठहर जाते और शीघ्र ही उस के चारों ओर भीड़ जमा होजाती थी।

मौप में एक विशेष शक्ति थी। वह चाहे जिस व्यक्ति को,

अपनी सारंगी के राग छेड़ कर ही, रुला सकता था। अपनी सारंगी से वह एक इतना करुण और द्रावक राग निकालता था कि सुनने वालों के, विशेष कर अपरिपक्व हृदयों वाले बच्चों के, दिलों में एक हूक-सी मच जाती थी और वे रोने लगते थे। उन लोगों की बात मैं कहीं कहता, जिन के लिए राग का वही स्थान है, जो अन्धों के लिए सुन्दरता का होता है; ऐसे लोगों के अतिरिक्त मैलस्टाक का एक भी ऐसा निवासी नहीं होगा, जिस की आँखें मौप की वह रागिनी सुन कर कभी न कभी तर न हुई हों।

मैलस्टाक के अन्य पुराने और प्रसिद्ध रागिए मौप को 'बाज़ारू रागिया' कहा करते थे। वे उस की असाधारणता को स्वीकार नहीं करते थे। अधिकांश रागिए मैलस्टाक के चर्चों में गवैये का काम करते थे। डेविस इन सब का मुखिया था। वह कहा करता था—'मौप सुर, ताल कुछ नहीं जानता। उसे तो रागिया कहा ही नहीं जा सकता। यों ही बाज़ारू ढंग की कुछ तर्ज़ों का अभ्यास करके वह चला है पांच घुड़सवारों में अपना नाम लिखाने!"

शायद डेविस का कथन ठीक था। मौप से यदि उस ज़माने के पक्के राग निकालने को कहा जाता तो वह उन्हें शायद ही निकाल सकता। उन दिनों सभ्य समाज में प्रचलित और चर्चों में गाए जाने वाले ईश्वर-प्रार्थना के गीतों में से एक भी गीत मौप ने अपनी सारंगी पर आज तक एक बार भी नहीं बजाया होगा। वह मैलस्टाक के प्रसिद्ध चर्च में, जहां प्रत्येक रविवार के दिन शहर भर के सब गायक जमा होकर गानविद्या में अपने हुनर

दिखाया करते थे, कभी नहीं गया था। डेविस कहता था कि मौप बाज़ारू ढंग की सारंगी बजाना छोड़ कर और कुछ नहीं जानता। मुमकिन है कि उस की यह बात भी ठीक हो।

मौप की इस सारंगी को सुन कर बालकों और स्त्रियों के दिल बहुत शीघ्र द्रवित होजाते थे। मौप जिस समय सारंगी बजाना शुरू करता था, उस समय वह अपनी आँखें बन्द कर लेता था। परन्तु थोड़ी देर बाद जब उस का वाद्ययन्त्र सजीव होकर दिल को हिला देने वाले करुण और कोमल स्वर में रोने लगता था और उस के प्रभाव से सम्पूर्ण श्रोताओं की आंखों में आँसू उतर आते थे, तब वह अपनी आंखें खोल कर अपने चारों ओर के द्रवित-होरहे-श्रोताओं की दशा देखने का शरारतभरा आनन्द लिया करता था। अपने संगीत के प्रभाव से वह स्वयं खूब अच्छी तरह अवगत था, और इस असाधारण शक्ति का अधिकतम दुरुपयोग किया करता था।

अनेक स्त्रियां मौप की इस शक्ति से उस की ओर आकर्षित होजाती थीं। इन में कारलाइन नाम की एक लड़की भी थी। कारलाइन की सगाई हो चुकी थी। वह इकहरे शरीर की, पतले मुँह वाली और सुन्दर लड़की थी। मौप की सारंगी के हृदय को हिला देने वाले स्वर सुन कर ही वह उस की तरफ़ आकृष्ट हुई थी। कारलाइन का घर मैलस्टाक में नहीं था। वह यहां से कुछ मील दूर के स्टिकलफोर्ड नामक गांव में रहती थी।

कारलाइन ने मौप को सारंगी बजाते हुए पहलेपहल कब देखा,—

यह कहना तो कठिन है। मगर जिस दिन वह सब से पहले इस नाटकी-आदमी की तरफ़ आकृष्ट हुई, उस की बात अवश्य सुनी जाती है। वसन्तु ऋतु के एक सायंकाल को वह मैलस्टाक शहर में, नदी के किनारे किनारे चली जा रही थी। राह में कुछ तो थक कर और कुछ नदी का दृश्य देखने के लिए वह पुल पर जाकर खड़ी होगई और रेलिंग के सहारे झुक कर भागते हुए पानी का दृश्य देखने लगी। मौप का घर यहां से पास ही था। वह इस समय अपने घर के दरवाज़े पर बैठ कर सारंगी बजा रहा था और लड़कों की एक टोली उसे घेर कर खड़ी थी। मौप जो सारंगी बजा रहा था, उसकी आवाज़ कारलाइन के कानों में पड़ रही थी, और उसके पैर खुदबखुद ही दूर से आरही सारंगी की उस मधुर ध्वनि के साथ ताल दे रहे थे। तथापि उस का ध्यान उस तरफ़ नहीं था। थोड़ी ही देर में मौप ने वह रागिनी निकालनी शुरू की, जिस में श्रोताओं को रुला देने की अचूक शक्ति थी। यह रागिनी कारलाइन के कानों में भी पहुँची और उस के हृदय में खलबली मच गई। उस का हृदय राग के साथ साथ तड़पने लगा और उस की सम्पूर्ण चेतना स्वयं ही, दूर से आरहे इस राग की तरफ़ केन्द्रित होगई। कारलाइन ने अनुभव किया,—क्रमशः उसकी आंखों के कोर गीले होते चले जारहे हैं। उस ने इरादा किया—नहीं, मैं इस तरह रोऊँगी नहीं। यह हृदय की दुर्बलता है। कोई ऐरा-ग़ैरा आदमी अपना वाद्ययन्त्र बजा कर मेरी आंखों में आंसू भर दे—यह तो शर्म की बात है। कारलाइन ने सोचा–'अब यहां

से चल देना चाहिए।' मगर जिस तरफ़ उस ने जाना था, उसी तरफ़ ही तो वह 'सारंगी वाला' सारंगी बजा रहा है। फिर भी कारलाइन उस तरफ़ आगे बढ़ी। कुछ निकट आकर उस ने छिपी नज़र से मौप की ओर देखा। मौप की आंखें बन्द थीं और वह तन्मय होकर अपनी सारंगी बजा रहा था। यह देख कर कारलाइन ने ज़रा तेज़ चाल से उसके निकट से निकल जाना चाहा। परन्तु यह क्या! सारंगी का राग इतना विषादमय और साथ ही साथ इतना आकर्षक हो उठा है कि कारलाइन के पैर आगे बढ़ते बढ़ते भी राग के साथ साथ ताल देने को बाधित होगए हैं। कारलाइन अब मौप के बहुत निकट पहुँच गई थी। उस ने एक बार पुनः मौप की तरफ़ देखा। उसे दिखाई दिया—इस बार मौप ने अपनी एक आंख खोल रक्खी है, और कारलाइन पर अपने वाद्ययन्त्र का इस कदर प्रभाव देख कर वह धीरे-धीरे मुस्करा रहा है। कारलाइन जिस किसी तरह वहां से दूर तो निकल गई, परन्तु मौप के गीत ने उसके हृदय में जो खलबली मचा दी थी, वह घण्टों तक शान्त न हो सकी।

उस दिन के बाद से जब किसी महफ़िल या पार्टी का कोई निमन्त्रण कारलाइन को मिलता, और उसे मालूम होता कि मौप ने भी गायक के नाते इस में सम्मिलित होना है, तो वह अवश्य ही वहां पहुँचती; चाहे इस के लिए उसे कई मीलों तक चलना ही क्यों न पड़े।

मौप के रागों का कारलाइन पर एक और प्रभाव भी पड़ा था

इस प्रभाव के वास्तविक कारण क्या हैं—यह तो कोई शारीर-तन्तु-शास्त्र का विद्वान ही बता सकेगा। परन्तु यह एक तथ्य है कि कई बार अपने घर में बैठे बैठे और कई बार तो पिता और बहिन से बातचीत करते हुए भी वह अपने हृदय में अचानक एक बिजली का धक्का-सा अनुभव करती थी और सर्वांश में विचलित होकर अपने मकान की छत पर चली जाती थी। उस के पिता शहर में ही क्लर्क का काम करते थे; अपनी इस कमज़ोर-सी पुत्री की यह दशा देख कर उन्हें भय होता था कि कहीं ये मूर्छा रोग के प्रारम्भिक लक्षण तो नहीं हैं। परन्तु कारलाइन की बहिन जूलिआ इस का वास्तविक कारण समझ गई थी। छत पर जा कर कारलाइन अपनी छाती थाम कर चुपचाप खड़ी रहती थी। इस समय वह मौप की उस रुला देने वाली रागिनी की मूक-प्रतिध्वनि अपने हृदय में उठती हुई अनुभव करती और उस की आंखों में आंसू भर आते थे। करीब आध घण्टे की हार्दिक अस्तव्यस्तता के बाद जा कर कहीं वह शान्त होती थी। कारलाइन के घर के पास ही से मैलस्टाक से मोरफोर्ड को जाने वाला राजमार्ग गुज़रता था। मैलस्टाक यहां से दक्षिण की तरफ़ था और मोरफोर्ड उत्तर की तरफ़। इस राजमार्ग पर से कभी कभी वही 'सारंगी वाला' मैलस्टाक की तरफ़ से आता दिखाई दिया करता था और इस गांव में ठहरे बिना ही वह मोरफोर्ड के लिए बढ़ जाता था। कारलाइन जान जाती थी कि इस समय मौप यहां से गुज़र रहा है। वह छत पर खड़ी होकर उसकी तरफ़ देखने

लगती थी। कभी ऐसी ही दशा में वह अपनी सुधबुध खो कर बड़े दुख के साथ स्वयं ही चीख उठी थी—"ओ-ो-ो-ह !" वह यहां नहीं आरहा। वह अपनी प्यारी के पास जा रहा है !" न जाने वह कहां से जान गई थी कि मोरफोर्ड की एक लड़की को मौप वेतरह चाहता है। जूलिआ उस समय अपनी बहिन के नज़दीक खड़ी थी, और तभी वह यह जान पाई थी कि कारलाइन की इस मनोव्यथा का वास्तविक कारण क्या है।

मौप को पहले तो कारलाइन के इन भावों का पता ही नहीं चला। इस तरह से अपने हुनर के द्वारा भावुक हृदयों में खलबली मचाना तो उस का पेशा ही था। परन्तु थोड़े ही दिनों बाद कारलाइन की दृष्टि से वह उस की सम्पूर्ण मनोव्यथा ताड़ गया। मौप मोरफोर्ड में रहने वाली एक और कन्या से प्रेम करता था. अतः कारलाइन के हार्दिक भावों को देख कर भी वह उस की तरफ़ आकृष्ट नहीं हुआ। हां, अपनी विजय और सफलता का आनन्द उठाने के लिए वह आसानी से जीत लिए गए इस नारी-हृदय के स्नेह की आग में, अनेक बार जानबूझ कर उस की दृष्टि में पड़ कर, घी की आहुतियां देने लगा। दोनों में कभी परस्पर कोई बातचीत नहीं हुई, मगर अन्दर ही अन्दर, केवल दृष्टि की भाषा से, वे दोनों एक दूसरे से खूब अच्छी तरह परिचित होगए।

कारलाइन का व्यवहार अब अपने भावी पति नैड से बहुत रूखा-सा होचला था। नैड से भी यह बात छिपी न रह सकी।

शीघ्र ही, ज़रा-सा प्रयत्न कर के, उस ने यह मालूम कर लिया कि उस की वाग्दत्ता पत्नी के इस हृदय-परिवर्तन का कारण क्या है। नैड और जूलिआ को छोड़ कर और कोई व्यक्ति कारलाइन के मौप से प्रेम होजाने के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता था। नैड एक प्रतिष्ठित मैकेनिक था। उस की सामाजिक और आर्थिक स्थिति इस सारंगी वाले नाममात्र के पशुचिकित्सक से बहुत अच्छी थी, इस लिए जूलिआ चाहती थी कि उस की बहिन मौप के जाल में न फँस कर नैड से ही विवाह करे। परन्तु कारलाइन का नैड के प्रति व्यवहार बहुत ही खराब होगगा था। यहां तक कि अन्त में बाधित होकर नैड ने कारलाइन से एक बार पूछ ही लिया कि वह उस से विवाह करने को तैयार है या नहीं। कारलाइन ने इस प्रश्न के उत्तर में उस के साथ विवाह करने से साफ इन्कार कर दिया।

जब कारलाइन के पिता और उस की बहिन को यह बात मालूम हुई, तो उन लोगों ने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु नवयुवकों और नवयुवतियों का प्रेम सदैव अन्धा होता है। कारलाइन अपना इरादा बदलने को तैयार न हुई।

नैड को पहले भी उमीद थी कि उसे अपने प्रश्न का उत्तर "नहीं" में मिलेगा। हुआ भी यही। वह एक बहुत भला और ईमानदार तबीयत का नौजवान था। कारलाइन की इस इन्कारी ने उस के जीवन का प्रवाह ही बदल दिया। उस ने निश्चय कर लिया कि अब वह कारलाइन का हृदय जीतने का प्रयत्न ही नहीं

करेगा। इतना ही नहीं, अब इस कस्बे में रह कर, बार बार कारलाइन की नज़रों में आने की कल्पना भी उसे सह्य नहीं हुई और इसी लिए उसने स्टिकलफोर्ड को छोड़ कर लण्डन में जा बसने का निश्चय कर लिया।

दक्षिणी वैसेक्स से लण्डन को जाने वाली रेलवे लाइन उन दिनों करीब करीब तैयार हो चुकी थी, परन्तु उस पर रेलगाड़ी चलनी अभी शुरू नहीं हुई थी। इस लिए नैड को वहां से लण्डन तक पैदल ही जाना पड़ा और छः दिनों की यात्रा के बाद वह वहां पहुँच गया।

लण्डन पहुँचते ही नैड को एक अच्छा काम मिल गया। इस सम्बन्ध में उस की किस्मत अच्छी थी। उसे एक दिन भी खाली नहीं रहना पड़ा। नैड का हाथ साफ़ था और यन्त्र-सम्बन्धी कार्यों में उस का दिमाग़ भी खूब चलता था। इस लिए उस की आय शीघ्र ही बहुत पर्याप्त होगई। परन्तु लण्डन में रहते हुए भी वह अपनी सामाजिक-स्थिति को उन्नत न कर सका। उस की आदत ही ऐसी थी। किसी से मिलने जुलने में उसे झिझक अनुभव होती थी। दिन भर वह अपने काम में जुटा रहता और शाम को, घर वापिस आकर, रोटी पकाने आदि के काम में लग जाता। वह अपना भोजन स्वयं बनाता था, इस लिए घर में रहते हुए भी उसे बाहर आने जाने की ज़रूरत ही न पड़ती थी, और न इस काम के लिए उस के पास समय ही बचता था।

धीरे धीरे समय गुज़रता गया। जब से वह लण्डन में आया

था, तब से उसे स्टिकलफोर्ड से एक भी पत्र नहीं मिला था; इस लिए उसे ज्ञात नहीं था कि उस के गांव में अब क्या क्या नए परिवर्तन हो गए हैं। तथापि कारलाइन के लिए अब भी उस के हृदय में स्नेह के भाव थे, यद्यपि उस से मिलने के लिए उस के दिल में कोई प्रबल अभिलाषा नहीं थी। सच बात तो यह है कि जीवन की कोमल बातों की तरफ़ ध्यान देने के लिए न तो उसे फ़ुर्सत ही मिलती थी और न उस की तबीयत ही करती थी। संगीत का उसे शौक नहीं था। न वह गा सकता था, न बजा सकता था। अपने शारीरिक या मानसिक आराम के लिए भी उसे स्त्रियों की आवश्यकता नहीं अनुभव होती थी। अपने सभी काम वह खुद ही कर लेता था।

इसी तरह पूरे चार साल बीत गए। इन चार बरसों के बाद लण्डन के हाइड पार्क वाली उस प्रदर्शनी की तैयारी शुरू हुई, जिस का ज़िक्र शुरू में किया गया है। इस प्रदर्शनी में एक बहुत बड़ा, सम्पूर्णतः शीशे का मकान बनाया गया था, जो संसार की कला के इतिहास में चिरस्मरणीय रहने योग्य था। नैड इस मकान के बनाने वालों में था। अब वह दिनरात अपने इस काम में लगा रहता था। जिन दिनों यह मकान बन रहा था, उन दिनों भी सैकड़ों दर्शक हर समय वहां मौजूद रहते थे और नैड तथा उस के साथियों की कारीगरी की तारीफ़ किया करते थे। जिन दिनों यह मकान बन कर पूरा होने वाला था, उन्हीं दिनों नैड के जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना घटित हुई। एक

दिन दोपहर की डाक में अचानक उसे कारलाइन का एक लिफ़ाफ़ा मिला।

इस पत्र का लेख देख कर साफ़ प्रतीत होता था कि वह कांपते हुए हाथों से लिखा गया है। पत्र की टेढ़ीमेढ़ी लाइनों में जो भाव प्रकट किए गए थे वे यद्यपि बहुत नाज़ुक थे, मगर जिस ढंग से उन्हें लिखा गया था, उस से यह स्पष्ट था कि लिखने वाला बड़ी घबराहट की दशा में है। पत्र इस प्रकार था—

प्रियतम नैड,

आज से चार साल पहले तुम्हें अस्वीकार कर के मैं ने भारी मूर्खता की थी। पिछले दिनों से मैं तुम्हें पत्र द्वारा अपनी हार्दिक दशा से अवगत करना चाहती थी, परन्तु कुछ भी लिखने का साहस न कर सकी। मैं तब से आज तक दुखिनी हूँ और मेरा दुख बढ़ता ही जाता है। तुम्हारे जाने के कुछ समय बाद ही मि० मौप ओलामूर भी कहीं चले गए थे। वह कहां हैं, यह मुझे नहीं मालूम। यदि आप अनुमति दें तो आप से विवाह कर के मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, और मैं तब आपकी नम्र पत्नी बन कर रहूँगी।

—कारलाइन.

इस पत्र को पढ़ कर नैड के शरीर भर में एक जीवनदायिनी लहर-सी घूम गई। कारलाइन के लिए अब भी उस के दिल में स्नेह के भाव थे। परन्तु अब इस उमीद की हलकी रेखा तक भी उस के हृदयाकाश में नहीं थी कि इस जीवन में कारलाइन उसे कभी मिल सकेगी। इस ओर से पूरी तरह निराश होकर उस ने

अपने हृदय के उस खाने को, जिस में कारलाइन की मूर्त्ति थी, प्रयत्नपूर्वक सदा के लिए बन्द कर दिया था। जिस ढंग से उस का व्यस्त जीवन बीत रहा था, उस में किसी प्रेमपात्र की याद के लिए उसे अवसर भी न मिल सकता था। वह अपने इस अकेलेपन से ही सन्तुष्ट था, परन्तु फिर भी आज कारलाइन का पत्र पाकर उस के हृदय में एक तरह की हरियावल आगई। परन्तु जब उस ने इस पत्र पर एकान्त में बैठ कर खूब अच्छी तरह विचार किया तो उसे यह मामला उतना आसान न जान पड़ा। अगर वह कारलाइन से विवाह कर लेगा तो उस के जीवन की दिशा ही बदल जाएगी। उस ने सोचा कि कारलाइन के पत्र का उत्तर मैं कुछ दिन ठहर कर दूँगा।

अनेक दिनों तक इस प्रश्न पर खूब अच्छी तरह विचार कर के आखिर उस ने कारलाइन के पत्र का उत्तर दे ही दिया। इस पत्र का एक एक वाक्य उसने खूब सोच विचार कर लिखा, और इस पत्र में कोमलता न आने देने का उस ने भरसक प्रयत्न किया। वह नहीं चाहता था कि उस के जवाब से कारलाइन के दिल पर यह प्रभाव पड़े कि वह उस से विवाह करने के लिए लालायित है। फिर भी उस के पत्र में कुछ न कुछ कोमलता आ ही गई थी। उस का उत्तर इस प्रकार था—

"प्यारी कारलाइन,

तुम्हारा पत्र मिला है। तुम अब मुझे अपना जीवनसंगी बनाना चाहती हो, यह तो बड़ी अच्छी बात है। परन्तु तुम ने तब मुझे

अस्वीकार क्यों कर दिया था, जब मैं तुम्हें चाहता था ? तुम ने पत्र लिखने से पूर्व मेरे सम्बन्ध में यह तो पता लगा ही लिया होगा कि मैं अभी तक अविवाहित हूँ, परन्तु तुम ने अपने दिल में शायद यह सम्भावना ही उठने नहीं दी कि मेरा अब किसी और जगह भी तो प्रेम होगया हो सकता है। ख़ैर, मैं तो तुम्हें अब भी नहीं भूला। परन्तु मैं इतना ज़रूर कहूँगा कि तुम्हें मुझ से क्षमा मांगनी चाहिए। स्टिकलफोर्ड में तो मैं अब तुम्हारी बदौलत कभी मुंह भी नहीं दिखा सकता, इस लिए मैं वहाँ नहीं आ सकूँगा। हां, यदि तुम लण्डन आकर मुझ से उचित ढंग से इस बात के लिए आग्रह करोगी तो मैं इन्कार नहीं कर सकूँगा। यह तो तुम जानती ही हो कि जब तुम्हारे कारण मैं ने स्टिकलफोर्ड छोड़ा था, तब मुझे यहां तक पैदल ही आना पड़ा था। अब अगर तुम मेरे कारण स्टिकलफोर्ड छोड़ोगी, तो भी यहां तक मेरी अपेक्षा बहुत आराम से पहुँच सकोगी, क्यों कि अब तो वहां से लण्डन तक सीधी "सैर की रेलगाड़ी" आती है। इस लिए तुम आसानी से अकेली ही यहां आसकती हो।—वैसे, आजकल काम अधिक होने के कारण मेरे लिए लम्बी छुट्टी लेना भी कठिन है।

तुम्हारा ही—"नैड"

कारलाइन ने इस पत्र का जो जवाब दिया, वह इस प्रकार था—

प्रियतम,

तुम ने बड़ी उदारतापूर्वक मुझे पुनः अपना लेने का जो वचन दिया है, उस के लिए मैं हृदय से तुम्हारी कृतज्ञ हूँ। यद्यपि इस तरह अकेले ही लण्डन तक आने में मुझे बड़ा डर प्रतीत होता है, तथापि

तुम्हारे लिए मैं वहां आऊँगी ही। आशा है, तुम मुझे पूरी तरह क्षमा कर दोगे और अब मैं तुम्हारी आज्ञाकारिणी पत्नी बन सकूँगी।

—कारलाइन"

इस के बाद शीघ्र ही यह निश्चित होगया कि अगले सप्ताह तक कारलाइन लण्डन के लिए रवाना हो जाएगी। जब वह स्टेशन पर पहुँचेगी तो आसानी से पहिचाने जाने के लिए हरा गाउन पहिने रहेगी। लण्डन पहुँचने के अगले ही दिन उस का नैड से विवाह होजाएगा और उस के बाद, दो-तीन दिनों के लिए वे प्रदर्शनी की सैर करेंगे।

रेलगाड़ी उन दिनों एक बिल्कुल नई चीज़ थी। वैसेक्स से लण्डन तक के सारे मार्ग में प्रतिदिन हज़ारों लोग, जिन में किसानों की संख्या अधिक होती थी, रेलवे लाइन के दोनों तरफ़ खड़े होकर इस चमत्कारपूर्ण गाड़ी को देखा करते थे। यह "सैर की रेलगाड़ी" कहलाती थी। तब गाड़ी के डिब्बों पर छत नहीं होती थी, वे ऊपर से खुले होते थे। उन में बैठने के लिए बैञ्च आदि का प्रबन्ध भी नहीं था। लण्डन की प्रदर्शनी के कारण इन गाड़ियों में बेहद भीड़ रहती थी और सब लोग खड़े रहने को बाधित होते थे। जून का महीना था। कारलाइन जब इस रेल में सवार हुई तो आस्मान में बादल छाए हुए थे। थोड़ी ही देर बाद जम कर वर्षा होनी शुरु हुई। गाड़ी खुली थी, इस लिए यात्रियों को हवा के तेज़ झोंके लगते थे। उस पर जब यह तेज़ वर्षा शुरु हुई तो सब यात्रियों का बुरा हाल होगया। उन के कपड़े गीले

होगए। सरदी के मारे दांत कटकटाने लगे और किसी किसी का तो शरीर ही नीला पड़ गया। इसी दशा में क्रमशः यह "सैर की गाड़ी" लण्डन के वाटरलू स्टेशन पर पहुँची। गाड़ी के सब यात्री ऐसे प्रतीत होते थे, जैसे वे तूफ़ान में डूबने से बच गए किसी जहाज़ पर से ज़मीन पर उतर रहे हों।

नैड स्टेशन पर मौजूद था। उस अपार भीड़ में, थोड़ी ही देर बाद उसने कारलाइन को पहिचान लिया। कारलाइन के सब कपड़े गीले होगए थे। अपने सन्दूकों के ढेर के पास वह बेचारी चुपचाप खड़ी कांप रही थी। नैड उसके पास पहुँचा। कारलाइन उसे देखते ही उछल पड़ी। वह खुशी में भर कर चिल्लाई—"ओह नैड !—मैं—मैं—" इस के साथ ही साथ वह नैड के गले से लिपट गई। उस की सुन्दर आंखों में आंसू भर आए।

नैड भी उस से बड़े प्रेम से मिला। अगले ही क्षण उसने कहा—"ओह, तुम तो बिल्कुल भीग गई हो। तुम्हें बड़ी सरदी लग रही होगी। चलो, तुम्हारा सामान कहां है ?" यह प्रश्न करते ही उस की नज़र स्वयं कारलाइन के सामान पर पड़ गई। एक बौक्स पर उसका नाम पढ़ कर वह पहिचान गया कि यह कारलाइन का ही सामान है। इस सामान के पास एक छोटी-सी अबोध और सुन्दर बालिका बैठी बैठी सरदी के मारे कांप रही थी। उस की उम्र करीब तीन साल होगी। बालिका का पतला-सा मुँह सरदी के मारे नीला पड़ गया था।

इस बालिका की तरफ़ देख कर नैड ने आश्चर्य से पूछा—

"यह कौन है ? क्या यह भी तुम्हारे साथ है ?"

"हां नैड ! यह मेरी है।"

"तुम्हारी ?"

"हां, मेरी अपनी।"

"तुम्हारी अपनी लड़की ?"

"हां !"

"मगर इस का पिता कौन है ?"

"तुम्हारे बाद जिस व्यक्ति से मैंने विवाह करने का प्रयत्न किया था।"

"अच्छा।—जैसे ईश्वर की—"

"प्यारे, यह बात मैंने पत्र में नहीं लिखी। तुम स्वयं ही सोच सकते हो कि मेरे लिए यह सब पत्र में लिखना कितना कठिन था ! मैंने यही सोचा था कि इस की उत्पत्ति की बात मैं चिट्ठी में न लिख कर तुम्हें ज़बानी ही सुनाऊँगी। नैड, बस इस एक बात के लिए मुझे एक बार क्षमा कर दो। भविष्य में तुम्हें मुझ से कोई शिकायत न होगी। देखो, मैं तुम्हारे पास अब इतनी दूर से चल कर आरही हूँ।"

नैड उस लड़की से करीब दो गज़ की दूरी पर खड़ा था और उसकी तरफ़ बड़े गौर से देख रहा था। उसने कहा—"अच्छा, मैंने अब पहिचाना। यह मि० मौप ओलामूर की लड़की है !"

कारलाइन ने धीरे से कहा—"मगर अब तो वह बरसों से कहीं चला गया है।" इस के बाद एक ठंडा श्वास लेकर उसने

बड़ी उदासी के साथ कहा—"सिर्फ़ एक बार मैं अभागी उसके काबू में आगई थी और उसी का यह नतीजा हुआ !"

नैड चुपचाप खड़ा रहा। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

कारलाइन ने पुनः कहा—"प्यारे नैड ! क्या इस अपराध के लिए मुझे क्षमा न करोगे ?" क्रमशः उसका गला भर आया और आंखों से आंसू बहने लगे। उसने कहा—"रात होने वाली है, यह लड़की और मैं सरदी के मारे ठिठुर रहे हैं। मैं सौ मील से भी अधिक दूर से चल कर तुम्हारे आश्रय में आई हूँ, क्या मुझे शरण न दोगे ? ओह, वापिस लौट जाने के लिए मेरे पास पैसे भी तो नहीं हैं !"

नैड ने गुर्रा कर कहा—"तो फिर मैं अभागा क्या कर सकता हूँ !"

लण्डन-वाटरलू स्टेशन पर उस दिन यह अभागिनी मां अपनी बच्ची सहित जिस दुरवस्था में खड़ी थी, उस से अधिक दयनीय चित्र की कल्पना भी नहीं की जासकती। स्टेशन के खुले प्लैटफार्म पर ठण्डी हवा के झोंके पूरे वेग से इन दोनों पर आक्रमण कर रहे थे। आस्मान अब भी बादलों से भरा था। साफ़ प्रतीत होता था कि शीघ्र ही जम कर वर्षा होने वाली है। पश्चिम में सूरज अदृश्यरूप में डूब रहा था, उस की किरणों से आस्मान भर के बादलों का रंग सुनहला हो उठा था। सनसनाती हुई तेज़ वायु के झोंके कारलाइन के गीले कपड़ों में घुस कर उसे और भी अधिक कष्ट पहुँचा रहे थे। अपने घर से पहली

बार इतनी दूर और इस अपरिचित प्रदेश में आकर वह अभागिनी बड़े भय के साथ नैड के निर्णय की प्रतीक्षा कर रही थी।—वह उसे स्वीकार करता है, या अस्वीकार करता है।

कई मिनट इसी तरह बीत गए। अचानक उस सरदी से ठिठुर रही बालिका की तरफ़ देख कर नैड पूछ बैठा—"क्यों, क्या हाल है?"

बालिका की आँखों में बेहद भय भरा हुआ था। वह बिल्कुल उदास-सी हो कर बैठी थी। मगर मालूम होता है कि रोने की आवश्यकता होते हुए भी इन नई परिस्थितियों के डर से वह रो तक न सकती थी। अब नैड के प्रश्न पर उसने और भी अधिक डरकर कहा—"अम्मां! मैं घर जाना चाहती हूँ! मां, क्या अब मुझे रोटी या मक्खन कभी नहीं दोगी?"—बालिका को सचमुच बहुत भूख लग रही थी।

नैड की आँखों में भी आंसू भर आए। उस के हृदय में विभिन्न और परस्पर विरोधी भावों की जो आंधी उठ खड़ी हुई थी उसे शान्त करने के लिए वह उस सुनसान-हो-गए प्लेटफ़ार्म पर धीरे-धीरे, दो चार फ़ीट की परिधि में ही, टहलने लगा। वह आहिस्ता से, जैसे आत्मगत ही बोल रहा हो, गुनगुनाया—"समझ नहीं आता कि मुझे अब करना क्या चाहिए!"

इसके अगले ही क्षण वह घूम कर उस बेचारी बालिका के बिल्कुल निकट आगया और उस से पूछने लगा—"क्यों बच्ची! तुम रोटी और मक्खन लोगी?"

नैड का यह सवाल तो कोमल था, परन्तु जिस स्वर में उसने यह सवाल पूछा था, वह बहुत कठोर था। तो भी बालिका ने अपनी निष्पाप बड़ी बड़ी आंखें ऊपर को उठा कर बड़े भय के साथ कहा—"हां—ां—ां !"

"ठीक है, तुम्हें भूख तो लगी ही होगी,। अच्छा, तो मैं तुम्हें यह सब देसकूँगा। क्यों कार्ली ! तुम्हें भी भूख मालूम हो रही है या नहीं ?"

मां और बेटी घर से सुबः-सुबः कुछ खा-पीकर लण्डन के लिए रवाना हुए थे और उसके बाद से अब तक उन्हें कुछ भी खाने को नहीं मिला था। कारलाइन ने जवाब दिया—"हां, भूख तो मुझे भी लगी है, मगर मैं सहार सकती हूँ। तुम इस बच्ची पर दया करो !"

"बच्चों वाली माताओं को भूखा नहीं रहना चाहिए।... अच्छा, मेरे साथ आओ।"—उसका स्वर तो अब भी बहुत रूखा था, परन्तु उसका आचरण अब बड़ा स्निग्ध होगया था। उसने उस बालिका को अपनी गोद में उठा लिया और दो एक कुलियों को सामान बाहर ले चलने की आज्ञा देकर उसने कारलाइन से कहा—"मेरा ख्याल है, आज रात तो तुम यहीं रहना चाहोगी ! अब और हो भी क्या सकता है। इस वक्त वापिस जाने वाली गाड़ी भी तो नहीं है। चलो, आज रात के लिए तुम्हारे रहने और खाने पीने का प्रबन्ध मैं कर दूँगा।......इस लड़की के सम्बन्ध में मुझे समझ नहीं आता कि मैं क्या करूँ। खैर,

इधर आओ, वह बाहर जाने का रास्ता है।"

थोड़ी दूर चल कर नैड ने पूछा—"इसका नाम क्या है ?"

कारलाइन ने कहा—"कैरी।"

राह भर में फिर उन दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई। सूरज डूब चुका था, सड़क के दोनों ओर तेल के लैम्प बल रहे थे। आस्मान के बादलों ने थोड़ी-थोड़ी बूंदाबांदी शुरु कर दी थी। नैड इसी समय कारलाइन सहित अपने घर में पहुँच गया। कारलाइन के बेचैन हृदय को कुछ आश्वासन मिला। बक्स में से सूखे कपड़े निकाल कर वह अपनी बालिका के कपड़े बदलने लगी ही थी कि नैड ने उसे आज्ञा के ढंग पर कहा—"तुम अपने कपड़े बदलो ! इसकी चिन्ता मैं कर लूँगा।"

नैड ने बालिका के गीले कपड़े उतार दिए और उसे अपने बिस्तरे पर, रज़ाई के नीचे छिपा कर, वह बड़े स्नेह के साथ अपने तौलिये द्वारा उसका शरीर सुखाने लगा। इसके बाद उसने स्वयं इस बालिका को एक बहुत सुन्दर पोशाक पहिना दी, और उसे चारों ओर से कम्बल में लपेट कर सोफ़े पर बैठा दिया। इस समय तक कारलाइन भी अपने कपड़े बदल कर साथ के कमरे से वहां आगई और अपनी बच्ची को इस तरह खुश बैठा हुआ देख कर गद्गद होगई। वह नैड को अपने हृदय के अन्ततम से धन्यवाद देने लगी, मगर नैड यह सब कुछ सुने बिना तेज़ी से वहां से निकल गया। दो-एक मिनटों में ही वह पुनः वहां आ उपस्थित हुआ। इस बार उस के हाथों में कुछ

बिस्कुट थे। ये बिस्कुट बालिका को देकर नेड पुनः रसोईघर में चला गया। वहां उसने चाय के लिए पानी गरम करने रख दिया। थोड़ी ही देर बाद चाय पीने के लिए कारलाइन की पुकार हुई। इस मकान के उस छोटे-से आहारगृह में एक गोल टेबल के निकट नैड और कारलाइन आमने-सामने बैठ गए और बालिका को बीच में बैठा लिया गया। खानपान शुरु हुआ, परन्तु दोनों में से इस वक्त कोई कुछ भी नहीं बोला। केवल वह अबोध और नन्हीं-सी बालिका ही बीच बीच में किलकारियां मारती और शरारतें करती रही।

चाय के बाद नैड भोजन के प्रबन्ध में लग गया। इस काम में कारलाइन ने उसे सहायता देनी चाही, परन्तु नैड ने यह कह कर कि तुम आज बहुत थकी हुई हो, उसे अस्वीकार कर दिया। भोजन तैयार करके जब वह अपनी बैठक में आया, तो उसने देखा कि फ़र्श के गलीचे पर वह तरल-सी बालिका जीवन, और सुन्दरता का मूर्त्तिमान अवतार बन कर छोटी-मोटी नगण्य-सी शरारतें कर रही है। खिड़कियों के बाहर घना अन्धकार था। नैड ने एक बार बाहर की ओर झांका और उसके बाद उसने सुन्दर-सी बालिका को बड़े स्नेह के साथ गोद में उठा कर उसका मुँह चूम लिया।

इसके बाद वह गुर्राया—"कार्ली, अब तुम्हें पुनः इतनी दूर, वापिस भेजने को भी मेरा जी नहीं करता। मगर मैं कह नहीं सकता कि तुम मुझ पर वास्तविक स्नेह रख सकोगी या नहीं। तुम

अगर मुझ पर पूर्ण विश्वास कर सको तो क्या यह अच्छा न होगा कि अब तुम वापिस न जाओ ?"

गलीचे पर बैठी हुई वह बालिका अब तन्मय होकर चाकलेट खा रही थी। नैड ने अपनी बात के जवाब की प्रतीक्षा किए बिना ही उस बालिका की तरफ़ देख कर बड़ी खुशी के साथ पूछा—"केरी ! अब तुम्हें सरदी तो नहीं लग रही ?"

बालिका ने मुस्करा कर सिर हिला दिया। मुँह से बोलने के लिए उसके पास फ़ुर्सत नहीं थी।

इसी समय कारलाइन ने कहा—"नैड, अगर मुझे तुम पर विश्वास न होता तो इस तरह घर से इतनी दूर, वापसी किराया तक लिए बिना, मैं यहां आती ही क्यों। मैं तुम पर आजन्म विश्वास रक्खू गी।"

इस के बाद इस सम्बन्ध में उन दोनों में और कोई बातचीत नहीं हुई। नैड ने कारलाइन को यह विश्वास नहीं दिलाया कि वह उसे क्षमा करता है, तथापि कुछ ही दिनों बाद चर्च में जाकर उसने कारलाइन से विवाह कर लिया। पहले के प्रोग्राम के अनुसार इस विवाह के बाद वे दोनों प्रदर्शनी देखने के लिए हाइड-पार्क में चले गए। नैड ने अपने काम से कुछ दिनों की छुट्टी ले ली।

एक दिन वे तीनों प्रदर्शनी की सैर कर रहे थे कि दूर पर, एक बड़े शीशे में उन्हें 'मौप ओज़ामूर' का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। नैड और कारलाइन ने अच्छी तरह से पहिचाना कि यह मौप

ही है। परन्तु जब वे लोग उसकी खोज में उस जगह पहुँचे, तो वहां मौप दिखाई न दिया। इस के बाद कई बार प्रयत्न करने पर भी वे लोग मौप को वहां खोज नहीं सके। मौप इस प्रदर्शनी में आया था या नहीं—यह भी नहीं कहा जा सकता।

क्रमशः प्रदर्शनी समाप्त होगई। पूरे छः महीनों के बाद हाइड-पार्क का वह स्थान पुनः सुनसान और निर्जन होगया। अब कारलाइन और नैड को साथ साथ रहते काफ़ी समय होगया था। नैड ने अनुभव किया कि अपने विवाह के सम्बन्ध में वह बहुत सौभाग्यशाली रहा है; उसकी पत्नी बहुत ही पतिपरायणा, दक्ष और अच्छे स्वभाव की है; यद्यपि उसे प्राप्त करने के लिए नैड को कोई प्रयास नहीं करना पड़ा था, किसी हद तक तो यह भी कहा जा सकता है कि वह स्वयं ही उस के गले आ मढ़ी थी। इतने सस्ते में मिलने पर भी वह उसे बहुत सन्तोषप्रद प्रतीत हुई; ठीक इस तरह से, जैसे कई बार चाय के सस्ते दामों के सैट मँहगे सैटों से भी बहुत अच्छे सिद्ध होते हैं।

कुछ समय के बाद लण्डन में नैड को काम की कमी प्रतीत हुई। इस लिए उस ने निश्चय किया कि अब वह अपने जन्मस्थान के निकट ही किसी स्थान पर काम करेगा, और जब तक वह किसी काम की तलाश नहीं कर लेता, तब तक कारलाइन अपनी लड़की के साथ अपने पिता के घर पर ही रहेगी।

कारलाइन जब रेल पर सवार होकर अपने घर के लिए रवाना हुई, तो उसके आत्माभिमान और प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था।

आज वह दो, तीन वर्षों के बाद अपने घर को जारही थी। अब वह गांव की लड़की न रह कर लण्डन की नागरिक और सभ्य महिला बन गई थी और उसकी रग रग में लण्डन की तहज़ीब आ घुसी थी। यह कोई मामूली बात नहीं थी।

ये लोग आज एक 'एक्सप्रेस' गाड़ी पर सवार थे, जो मामूली स्टेशनों पर नहीं ठहरती थी। आज भी सरदी काफ़ी थी, परन्तु इन लोगों को रेलयात्रा में आज वह असुविधा नहीं हुई। ठीक समय पर गाड़ी कैस्टरब्रिज स्टेशन पर पहुँची। नैड का गांव यहां से कुछ मीलों की दूरी पर ही था। कैस्टरब्रिज में आजकल निर्माण के अनेक कार्य होरहे थे, इस लिए नैड को पूरी उमीद थी कि उसे यहां ही कोई अभीष्ट कार्य मिल जाएगा। इस लिए वह स्वयं स्टेशन से उतरते ही काम की खोज में पास के एक वर्कशाप की तरफ़ चला गया और अपनी पत्नी तथा बालिका को एक घोड़ागाड़ी पर सवार करवा कर उसने उन्हें अपने गांव की तरफ़ रवाना कर दिया।

स्टेशन से तीन मील दूर पहुँच कर सड़क के किनारे एक सराय आई। कारलाइन और उसकी लड़की दोनों सफ़र के कारण बहुत थक गए थे, यद्यपि राह में उन्हें कोई कष्ट नहीं होने पाया था। इस समय सरदी भी काफ़ी पड़ने लगी थी। इस कारण जब वे दोनों सराय के पास पहुँचे, तो कुछ देर तक आराम करने की इच्छा से वहीं उतर पड़े। कारलाइन इस सराय से पूरी तरह परिचित थी। उस का अपना घर भी यहां से कुछ ही मीलों की दूरी पर था। इस सराय में वह अनेक बार पहले भी ठहर चुकी थी। आज

सराय के दरवाज़े पर पहुँचते ही उसे अन्दर बड़ा शोरगुल सुनाई दिया। जांच करने पर मालूम हुआ कि आज यहां एक नीलामी हुई थी, इसी कारण आज रात को भी बहुत से आदमी यहां ही ठहर गए हैं। सराय के हाल में प्रविष्ट होकर कारलाइन ने देखा कि आज वहां बड़ी भीड़ जमा है, और कमरे के बीचोंबीच नाच करने की तैयारियां हो रही हैं। कारलाइन अब लण्डन की सभ्य नागरिका बन चुकी थी। इस भीड़ की ओर उसने बड़ी उपेक्षा के साथ देखा और वह एक तरफ़, अपनी लड़की के साथ एक कुर्सी पर बैठ गई। इसी समय एक आदमी ने पास आकर कहा—

"ओह, श्रीमती कारलाइन, आप हैं!"

इतना कह कर उस ने कारलाइन का अभिवादन किया और उसे किसी बहुत हल्के उत्तेजक पेय का एक गिलास पीने को दिया। इच्छा न रहते भी कारलाइन ने इसे स्वीकार कर लिया और वह एक एक घूँट कर के धीरे धीरे उसे सिप करने लगी। अचानक उसे दिखाई दिया कि भीड़ में, एक तरफ़ को होकर मौप ओलामूर बैठा है और उसके कन्धे पर आज भी वही सारंगी टिकी हुई है। मौप उसकी तरफ़ नहीं देख रहा था। कारलाइन ने भी अपनी निगाह बहुत शीघ्र उस पर से हटा ली। कारलाइन के रहन-सहन, वेश-भूषा और यहां तक शकल-सूरत में भी जो बड़ा परिवर्तन आगया था, उस के आधार पर उसे विश्वास था कि मौप उसे पहिचान नहीं सका। वह स्वयं भी अब मौप की उपेक्षा करना चाहती थी, इस लिए, इस तरह से जैसे कुछ हुआ ही न हो, वह पुनः अपने

गिलास की वस्तु को धीरे धीरे सिप करने लगी। शहरी-सभ्यता के साथ वह अब जन-समुदाय से भरे इस कमरे में इस तरह बैठी थी, जैसे वहां उसे छोड़ कर अन्य कोई व्यक्ति मौजूद ही न हो।

इसी समय संगीत और नाच शुरु हुआ। कारलाइन ने अब भी उस तरफ़ ध्यान नहीं दिया। थोड़ी ही देर बाद संगीत की ध्वनि में उसे सारंगी की आवाज़ भी सुनाई देने लगी और शीघ्र ही यह सारंगी एक ऐसा राग निकालने लगी जिस की स्वरलहरी ने कारलाइन के हृदय को हिला दिया। इस राग को सुन कर उस का अणु अणु कांप उठा और शरीर रोमाञ्चित होगया। कारलाइन के हाथों में गिलास इस कदर कांपने लगा कि इसे भय होगया कि कहीं वह छूट कर नीचे न जा गिरे। कारलाइन शेष सम्पूर्ण द्रव एक ही घूंट में पी गई और वह गिलास उसने साथ की टेबल पर रख दिया। इस के बाद छिपी दृष्टि से उसने सारंगी वाले की तरफ़ देखा। उसे दिखाई दिया मौप में अभी तक अणुभर भी परिवर्तन नहीं आया। आज भी इसके बाल उसी तरह चिकने और गीले हैं, और उनमें लहरें भी उसी तरह की उठाई गई हैं। उस के मुँह का रंग जैतूनी है और इस समय, वह राग निकालते हुए, उसने अपनी आंखें मूँद रक्खी हैं। वह दीवार के साथ पीठ लगा कर बैठा है।

कारलाइन की नागरिक मनोवृत्ति को न जाने किस चीज़ ने थोड़ी देर के लिए बेहोश-सा कर दिया। वह भूल गई कि वह लण्डन निवासिनी एक भद्रमहिला है। यह रागिनी सुन कर एक ही साथ उस के मुँह पर हँसी और आंखों में आंसू दिखाई

देने लगे। इसी समय नाचने वालों में से एक महिला थक कर नीचे गिर पड़ी। उसका साथी जब अकेला रह गया तो वह कारलाइन के पास आया और उस से अनुरोध करने लगा कि वह नाचने में उस का साथ दे। परन्तु कारलाइन ने उस का यह अनुरोध अस्वीकार कर दिया। मालूम होता है, अपनी आंखें मूँदे रहने पर भी मौप ने कारलाइन की इस अस्वीकृति को देख लिया। अब वह अपनी सारंगी को और भी अधिक तन्मयता के साथ बजाने लगा। सारंगी सचमुच जैसे जीवित हो उठी। नाचने वाले लोगों के अंग और अधिक तेज़ रफ्तार से गति करने लगे। कारलाइन भी अब बैठी न रह सकी। वह उठ खड़ी हुई और बालिका कैरी का हाथ पकड़ कर, सारंगी की लय के साथ, साथ अंगविक्षेप करने लगी। इस दशा में कारलाइन ने नाचने वाले अन्य लोगों को भली प्रकार देखा और वह उनमें से बहुतों को पहिचान गई। नाचते नाचते कारलाइन बहुत अधिक थक गई, उसके पैरों में दर्द अनुभव होने लगा। वह चाहती थी कि वह नाचना बन्द करदे, मगर उसके पैर ज़बरदस्ती उसे नचा रहे थे। काफ़ी देर के बाद सहसा सारंगी का बजना रुक गया और नाच भी बन्द होगया।

कारलाइन बैठ गई; उसने अपनी बालिका को गोद में उठा लिया। वह बहुत अधिक थक गई थी। कारलाइन को प्रारम्भ में जो चीज़ पीने को दी गई थी, उस में शराब मिली हुई थी। अब वही चीज़ उसे पुनः दी गई। कारलाइन इतना थक गई थी कि वह खुशी से उसे पी गई। उसकी विचारशक्ति धीरे धीरे क्षीण पड़ने

लगी। फिर भी यह धारणा उस के हृदय में अभी तक बनी हुई थी कि वह मोप की नज़रों में न पड़े। इस लिए उस बड़े कमरे में वह अभी तक अपने को उसकी निगाह से बचाने का प्रयत्न कर रही थी। क्रमशः लोग एक एक करके वहां से खिसकने लगे। थोड़ी ही देर में हाल में बहुत कम आदमी बच रहे। अब कारलाइन के जी में आया कि उसे यह कमरा छोड़ कर कहीं और आश्रय लेना चाहिए। इस उद्देश्य से वह उठी ही थी कि किसी ने प्रस्ताव कर दिया—"अब हमें दस हाथों का सम्मिलित नाच करना चाहिए।"

प्रस्ताव झट से स्वीकार हो गया और पांच, पांच व्यक्तियों की टोलियां बनने लगीं। कुल मिलाकर चार, पांच टोलियां बन गईं। कारलाइन अपनी जगह से हिली ही थी कि एक टोली में शामिल होने के लिए उसे भी निमन्त्रण मिल गया।

कारलाइन अब भी नाच में शामिल नहीं होना चाहती थी; उसने बड़े नम्र शब्दों में अपनी असमर्थता प्रकट करनी शुरु की ही थी कि मोप ने सहसा अपनी सारंगी छेड़ दी। अब की बार आरम्भ ही से उत्ताल स्वर में उसने वही राग निकालना शुरु किया, जिसे सुन कर आज से छः बरस पहले, उस पुल पर खड़ी कुमारी कारलाइन के पैर बरबस होकर उसके साथ ताल देने लगे थे। कारलाइन अपनी असमर्थता की बात समाप्त भी न कर सकी और वह उस टोली में शामिल होकर नाचने लगी!

ये सब टोलियां मोप की सारंगी के साथ साथ वृत्ताकार चक्रों में नाच रही थीं। कारलाइन की टोली अपनी बारी से क्रमशः

हाल के ठीक मध्य में आपहुँची। उस के वहां पहुँचते ही मौप ने सारंगी का राग बदल दिया। इस राग के अनुसार नाच का ढंग भी बदल गया। टोलियों का घूमना बन्द होगया और वे सब खुल कर विभिन्न कतारों के रूप में परिवर्तित होगई। कारलाइन हाल के ठीक मध्य में थी और किस्मत से अपनी कतार के भी ठीक बीच में थी; इस लिए स्वभावतः ही वह इस सम्पूर्ण नाच का केन्द्र बन गई। उस के नाच में एक विशेष आकर्षण था। वह इस ढंग से नाच रही थी, जैसे सारंगी का संगीत, कारलाइन का स्वरूप धारण करके, आज के इस नाच का नेतृत्व कर रहा हो। थोड़ी ही देर में आसपास की कतारें अपना नाच बन्द करके दर्शकों का रूप धारण करने लगीं। क्रमशः यह नौबत आगई कि इस हाल के अन्य सम्पूर्ण लोग दर्शक बन गए, और केवल कारलाइन की कतार के पांच व्यक्ति ही नाचने वाले बच रहे।

इस दशा में नाच का रूप बहुत अधिक मनोहर हो उठा था। मौप की सारंगी और कारलाइन की कतार का नाच, ये दोनों आपस में इतनी पूर्णता के साथ मिल रहे थे कि उन्हें एक दूसरे से पृथक् ही नहीं किया जा सकता था।

थोड़ी देर बाद मौप ने सहसा अपना राग बदल लिया। यह चार के नाच का राग था। कारलाइन की टोली का एक आदमी हाथ छोड़ कर अलग होगया। नाच और राग दोनों के कम्पन बढ़ गए।

मगर मौप इस पर भी सन्तुष्ट नहीं हुआ। शीघ्र ही उस ने अपना राग पुनः बदल दिया। यह तीन के नाच का राग था।

कतार का एक और आदमी हाथ छोड़ कर नीचे बैठ गया। अब केवल तीन ही व्यक्ति बच रहे। बीच में कारलाइन और उस के दोनों तरफ़ एक एक और आदमी। नाच जारी था। यह राग रुलाने वाला था। सम्पूर्ण श्रोताओं की आंखें आंसुओं से तर होगईं। प्रत्येक हृदय में उच्छ्वासों का तूफ़ान आगया। इसी समय मौप ने अपनी आंखें खोल दीं और वह पूर्ण मनोयोग के साथ सारंगी बजाते बजाते कारलाइन की तरफ़ देखने लगा।

राग के कम्पन और भी अधिक बढ़ गए थे। कारलाइन का एक साथी थक कर नीचे गिर पड़ा। सारंगी का स्वर और भी क्षीण पड़ गया, मगर उस के कम्पनों में अब भी वृद्धि हो गई। कारलाइन का दूसरा साथी भी थक कर बैठ रहा। अब अकेली कारलाइन ही बाकी बची थी। कमरे में इस समय बहुत भीड़ नहीं थी; मगर जितने भी लोग थे, वे इस विचित्र राग और उसके मूर्त्तिमान नाच को विस्मित होकर देख रहे थे।

क्रमशः राग के कम्पन इतने बढ़ गए और वह इस कदर क्षीण पड़ गया, जैसे खूब जी भर कर रो लेने के बाद वह स्वयं भी थक कर सोजाना चाहता हो। इधर कारलाइन के चेहरे पर बेहोशी के लक्षण दिखाई देने लगे, जैसे वह अभी गिरने ही वाली हो।

मालूम नहीं कि कारलाइन की इस दशा पर किसी और का ध्यान भी गया या नहीं, परन्तु उसकी छोटी लड़की कैरी ने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया कि उसकी माता इस समय असाधारण दशा में है। वह शुरु से अब तक एक तरफ़ को खड़ी

रह कर विस्मयोत्फुल्ल नेत्रों से नाच, राग के इस विचित्र काण्ड को देख रही थी। अब वह शीघ्रता से आगे बढ़ी और उसने कारलाइन से कहा—"ठहरो अम्मा! अब घर चलें।"

मगर इसी क्षण सारंगी में से अन्तिम और क्षीण-सी तान निकली और इसके बाद उसका बजना बन्द होगया, जैसे एक 'आह' भर कर वह बेहोश होगई हो। इस के साथ ही साथ कारलाइन भी ज़ोर से चीखी और बेहोश होकर नीचे, फर्श पर, गिर पड़ी। पास ही एक स्टूल पर शराब से भरा एक बहुत बड़ा बरतन रक्खा हुआ था। कारलाइन का शरीर इस स्टूल से जा टकराया। स्टूल उलट गया और बर्तन एक भारी आवाज़ के साथ नीचे आ गिरा। कैरी ने अपनी मां को गिरते देखा और वह भी चीख कर उस की छाती से जा चिपटी। इसी समय वह सारंगी वाला उठा और इस बालिका को ज़बरदस्ती अपनी माता से छीन कर बाहर की ओर भाग गया। इस समय तक रात का अन्धकार सब तरफ़ व्याप्त हो चुका था।

इस सम्पूर्ण कोलाहल को सुन कर सराय भर के सम्पूर्ण यात्री दौड़ दौड़ कर इस हाल में आजमा हुए। कारलाइन इस समय तक भी संज्ञाहीन पड़ी थी और हाल के एक बड़े भाग में शराब की नदी-सी बह रही थी।

नैड ठीक इसी समय इस सराय के बाहर पहुँचा और सराय में से अपनी पत्नी के नाम की पुकार सुन कर सीधा उसी हाल में प्रविष्ट होगया। लोगों के उपचार से जब कारलाइन की मूर्छा खुली तो कैरी को अपने पास मौजूद न पाकर वह उस का नाम

ले लेकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। इधर नैड को लोगों ने आज के विचित्र नाच की सारी घटना कह सुनाई।

नैड ने बहुत ही उद्विग्न होकर पूछा—"उस सारंगी वाले का नाम क्या था ?"

किसी ने बताया—"मौप औलामूर।"

नैड ने चीख कर कहा—"ओह, वह मौप था ! वह गया कहां ? मेरी लड़की कहां है ?"

न तो वहां सारंगी वाला ही था और न वह लड़की ही। बाहर सब ओर रात का घना अन्धकार व्याप्त था, लोग इधर उधर उन दोनों की खोज करने लगे; परन्तु कोई परिणाम न निकला।

नैड ने चिल्ला कर कहा—"वह बदमाश मेरी लड़की को लेकर चला कहां गया ! मैं उस का सिर फोड़ दूँगा।"

इस के बाद सराय में से एक डण्डा उठाकर वह मौप की खोज में बाहर की तरफ़ भाग गया। कुछ अन्य लोगों ने भी उस का साथ दिया। बाहर घना अन्धकार था। नैड को जगह जगह ठोकरें खानी पड़ती थीं। मगर इस की परवाह किए बिना वह आसपास की सड़कों और मैदानों में दौड़ता फिरा। करीब आध घण्टे तक, कई मीलों की दौड़ करके वह निराश होकर पुनः उसी सराय में वापिस लौट आया।

नैड बहुत थक गया था, वह बहुत अधिक उदास और दुखी होकर अपना माथा पकड़ कर वहीं बैठ गया। उधर उसकी पत्नी अभी तक फ़र्श पर ही लेटी हुई थी। वह इतनी थक गई थी और

कैरी के अपहरण ने उसे इतना शोकित बना दिया था कि वह उठ भी न सकती थी। परन्तु नैड ने उस की तरफ़ ज़रा भी ध्यान न दिया।

सराय के बहुत से लोगों को यह बात मालूम थी कि कैरी नैड की पुत्री नहीं है। वे लोग आपस में कानाफूँसी करने लगे— "देखो, कैसा बेवकूफ़ आदमी है! अपनी स्त्री पड़े पड़े मर रही है, उस की तरफ़ तो ध्यान नहीं देता और एक पराई लड़की के लिए इस तरह पागल बन रहा है?"

नैड उन लोगों की भावभंगी से ही यह पहिचान गया कि वे लोग आपस में क्या बातचीत कर रहे हैं। उसने खुदबखुद ही जवाब देना शुरू किया— "कौन कहता है कि कैरी मेरी नहीं थी। मैंने उसे पाला है। मैंने ही उसे हँसना और खेलना सिखाया है। उसी से पूछ देखो कि वह संसारभर में किसे सब से अधिक प्यार करती है!" इस के बाद उसके दिल में गहरी व्यथा की एक हूक-सी उठ खड़ी हुई। वह खूब गहरा श्वास लेकर खुद ही गुनगुनाया —"उफ़! मेरी प्यारी कैरी! तू मुझे छोड़ कर उस बदमाश के साथ कैसे चली गई।

कुछ यात्रियों ने अब उसे सान्त्वना देनी चाही — "वह तो अब गई। मुमकिन है, कोशिश करने से मिल भी जाय। अब तुम अपनी पत्नी की चिन्ता करो। वह लड़की चाहे तुम्हें कितनी ही प्यारी हो, परन्तु इससे तो अधिक प्यारी हर्गिज़ नहीं हो सकती न?

नैड ने गुर्रा कर कहा—"नहीं, यह अब मेरी कुछ नहीं

लगती ! मेरा तो सब कुछ 'वही' थी। उसी के लिए मैं इसे भी चाहता था। वही मुझे संसार भर में सब से बढ़ कर प्यारी थी !"

"खैर; —अच्छी बात! कल उसे खोजने की कोशिश करना। वह अभी कहीं बहुत दूर नहीं जा सका होगा।"

"ओह,—क्या वह फिर कभी मुझे मिल सकेगी ! अब की मैं उसे अपनी छाती में छिपा कर रक्खूंगा ! उसे एक क्षण के लिए भी अपनी आंखों से ओझल न होने दूँगा।"

नैड इतना कह कर चुप होगया और कुछ क्षणों के बाद, जैसे उसकी बेहोशी टूटो हो, उसने कहा—"कम से कम वह कैरी को तकलीफ़ तो नहीं देगा !—हां, कारलाइन कहां है ? उस की तबीयत अब कैसी है ?"

इस के बाद वह अपनी पत्नी के पास आया और उसे आश्वासन देकर उस ने उस का उपचार शुरू किया।

अगले दिन पोलीस को इस बात की विस्तृत रिपोर्ट देकर नैड ने मौप का पता देने वाले के लिए स्वयं भी एक अच्छे इनाम की घोषणा कर दी। करीब दो तीन सप्ताहों तक वह कैरी की खोज के अतिरिक्त और कोई काम ही नहीं कर सका। इस के बाद वह काम पर लग गया। परन्तु कैरी की खोज अब भी उसी तरह जारी थी। नैड अपनी पत्नी से सदैव यही कहा करता था—"वह बदमाश हमारी बच्ची पर भी अपनी सारंगी द्वारा ठीक वही जादू कर लेता होगा, जो उसने तुम पर किया था। इसी कारण तो वह उसके पास रहते हुए हम लोगों के लिए रो तक न सकती होगी।"